सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 09, नई दिल्ली । गुरुवार, 20 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 हम उम्मीद करते हैं की सी.सी.टी.वी. लगाने के और भी घोटाले अब खुलेंगे
06 प्रदूषण का पोषण
08 आई ए एस विनय चौवे व गजेन्द्र पर मुकदमा चलाने हेतु एससीबी...

परिवहन विभाग ने बाहरी राज्यों में पंजीकृत 17 वाहन स्क्रैप डीलरो को बिना पंजीकरण की उठाई गई ई-रिक्शा की कीमत जमा करवाने का जारी किया नोटिस

संजय बाटला

नई दिल्ली। परिवहन विभाग ने वाहन स्क्रैप डीलरो को जनता के उठवाए वाहनों के सरकारी दर पर जो स्क्रैप मूल्य बनता है और उसे अभी तक परिवहन आयुक्त के प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो ने जमा नहीं करवाया था के लिए एक मुश्त बकाया राशि जमा करवाने की जगह अलग अलग नोटिस जारी करना शुरू किया है आखिर क्यों यह तो विभाग या स्वयं परिवहन आयुक्त ही जानते होंगे। पर आपको जानकर हर्ष होगा की आज दिल्ली परिवहन विभाग ने अपने साथ जोड़े हुए सभी 17 स्क्रैप डीलरो को नोटिस जारी कर उनके द्वारा उठाए गए बिना पंजीकरण वाले ई रिक्शा की बकाया राशि जमा कराने को कहा है। आपकी जानकारी हेतु बता दें इस साल में सड़को पर चल रही बिना पंजीकरण की ई रिक्शा जो उठाई गई है उसकी सरकारी दर पर स्क्रैप राशि जो आज की तारीख़ में इन 17 डीलरो पर बकाया है वह 10 करोड़ रुपए से अधिक है और इस पूरी रकम में से 3 करोड़ से अधिक रकम तो सिर्फ 6 वाहन स्क्रैप डीलरो ने ही अदा करनी है। **अब आप अंदाजा लगा सकते है सरकारी स्क्रैप कीमत के अनुसार सबसे कम लोहा और सबसे सस्ता दर ई रिक्शा की ही बकाया राशि वह भी बिना पंजीकरण वाले ई रिक्शा की इतनी बकाया है तो वाहन स्क्रैप डीलरो पर कुल मिलकर जनता के उठाए वाहनों की कितनी राशि बकाया होगी।** क्योंकि इसके अलावा पंजीकृत ई रिक्शा एवम् अन्य वाहन (दोपहिया, तीन पहिया, कार, बस, ट्रक इत्यादि) की भी राशि इन स्क्रैप डीलरो द्वारा जमा नहीं करवाई गई है। **आपकी जानकारी हेतु बता दें की यह सभी बकाया राशि वह है जो नियम और एग्रीमेंट के अनुसार काफी समय पहले ही परिवहन विभाग में इनके द्वारा जमा हो जानी चाहिए थी** पर समय सीमा समाप्त होने के बावजूद बकाया रहना और कोई कार्यवाही नहीं होना का अर्थ सीधे तौर पर क्या लगाया जाए आप बेहतर समझते हैं। **ईमानदार आई.ए.एस. अधिकारी के रहते ऐसा होना संभव ही है।**

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा।
इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।
आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

दिल्ली सीनियर सिटीजन सेवा समिति (पंजीकृत) ने परिवहन मंत्री को पत्र लिख मांगा समय

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। इस ज्ञापन पत्र में संस्था द्वारा जनहित में चलाये जा रहे सार्वजनिक संस्थान (दिल्ली परिवहन निगम) के मुद्दे पर बैठक के लिए समय की मांग रखी और कहा संगठन (दिल्ली सीनियर सिटिजन सेवा समिती (पंजीकृत)] की ओर से दिल्ली में जनप्रिय सरकार बनाये जाने पर आपको हार्दिक बधाई। हम दिल्ली परिवहन निगम से सेवानिवृत कर्मचारी (भारतीय मजदूर संघ) जोकि एक राष्ट्रवादी श्रमिक संगठन है उसके पदाधिकारी रह चुके हैं। हम आपके समक्ष सेवानिवृत्त कर्मचारियों से संबंधित कुछ समस्याओं के बारे में चर्चा करने के लिये एक बैठक का समय दिये जाने की प्रार्थना करते हैं जोकि निम्नलिखित हैः-

1) निगम के सभी सेवानिवृत कर्मचारियों को निगम की पेंशन लागू की जाये जोकि पहले से ही अगस्त, 2022 को डीटीसी बोर्ड में पास की जा चुकी है।

2) सभी कार्यरत व सेवानिवृत कर्मचारियों को कैशलेस मेडिकल स्कीम को लागू कर उसका लाभ दिया जाए।

3) सभी अस्थाई कर्मचारियों को पक्का किया जाए।

4) निगम की अपनी बसे मंगाई जाये ओर बेड़े को बढ़ाया जाए।

5) सेवानिवृत कर्मचारियों के परिवार से संबंधित बच्चों को प्राथमिकता के आधार पर नौकरी दी जाए।

उपरोक्त विषयों पर चर्चा करने के लिए एक आधिकारिक मीटिंग का समय दिये जाने की प्रार्थना करते हैं। आशा है आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करते हुए शीघ्र मीटिंग का समय प्रदान करेगें। इसी समय की मांग के ज्ञापन के साथ उन्होंने दिल्ली परिवहन विभाग का एक संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया, आप भी जाने

दिल्ली परिवहन निगम का संक्षिप्त विवरण दिल्ली परिवहन निगम की नींव विधि द्वारा स्थापित सार्वजनिक परिवहन संस्थान के रूप में रखी गई थी और वर्तमान में भी पूरे भारत में अलग पहचान रखने वाला एक संस्थान है। एशियार्ड82 में जब दिल्ली में 1982 में एशियन गेम्स आयोजित हुए थे. इस संस्थान को सर्वश्रेष्ठ परिवहन सेवा का गोल्ड मेडल भी मिला था। इस प्रतिष्ठान के महत्व को समझने के लिये निम्न तथ्यों को इतिहास के रूप में आपके समक्ष रखा जा रहा हैः

1) परतंत्र भारत में चल रहे सार्वजनिक परिवहन संस्थान का शुभारंभ 15/05/1940 को ग्वालियर रियासत के राजा जीवाजी राव सिंधिया जी जोकि वर्तमान में माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के दादाजी के द्वारा ₹ग्वालियर एंड नार्दन इंडिया ट्रांसपोर्टर₹ की शुरूआत की गई।

2) स्वतंत्रता प्राप्ती के पश्चात भारत सरकार द्वारा 'देहली रोड ट्रांसपोर्ट' के रूप में 1950 में परिवर्तित किया गया था। बाद में केन्द्रीय पविहन मंत्रालय द्वारा 30/05/1952 में डरता 1952 के अंतर्गत विधि द्वारा स्थापित प्रतिष्ठान बना दिया गया।

3) भारत सरकार द्वारा दिल्ली में 'दिल्ली नगर निगम' बनाया जिसको वैधानिक रूप से 07/04/1958 को डीटीएस (दिल्ली ट्रांसपोर्ट सर्विस) से डीटीयू (दिल्ली ट्रांसपोर्ट अंडरटेकिंग) में परिवर्तित किया गया। फिर इसे दिल्ली नगर निगम के अंतर्गत संचालित कर दिया गया।

4) 03/11/1971 को डीटीयू (दिल्ली ट्रांसपोर्ट अंडरटेकिंग) को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा एक अध्यादेश के द्वारा इसे केन्द्रीय परिवहन मंत्रालय के अधीन कर दिया गया।

5) 05 अगस्त, 1996 को फिर से केंद्र सरकार द्वारा अध्यादेश लाकर इसके परिचालन की जिम्मेदारी दिल्ली के महामहिम उपराज्यपाल महोदय को सौंप दी गई। तब से आज तक यह संस्थान दिल्ली के महामहिम उपराज्यपाल महोदय के अंतर्गत कार्यरत है।

धन्यवाद,
प्रार्थी,
(जोगेन्द्र कुमार भाटिया) महासचिव
दिल्ली सीनियर सिटिजन सेवा समिती (पंजीकृत)

चौथा वार्षिक विजन एंड रोड सेफ्टी (VARS 4.0) सम्मेलन का आयोजन सम्पन्न

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। स्थित इंडिया हैबिटेट सेंटर में 12 मार्च 2025 को "चौथा वार्षिक विजन एंड रोड सेफ्टी (VARS 4.0) सम्मेलन" का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का संयुक्त रूप से आयोजन इंडिया विजन इंस्टीट्यूट, मिशन फॉर विजन, साइटसेवर्स इंडिया और विजनस्प्रिंग द्वारा किया गया। सम्मेलन में रोड सेफ्टी और नेत्र स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों, नीति-निर्माताओं एवं अन्य हितधारकों ने भाग लिया और सुरक्षित सड़कों के लिए स्पष्ट दृष्टि की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार-विमर्श किया। यह पहल संयुक्त राष्ट्र के ग्लोबल प्लान फॉर रोड सेफ्टी के अनुरूप है, जो सड़क सुरक्षा मानकों को बेहतर बनाने के लिए दृष्टि सुधार के महत्व को रेखांकित करता है। यह WHO के VISION 2030 एजेंडा से भी जुड़ा है, जो नेत्र स्वास्थ्य पर केंद्रित है। स्टॉकहोम डिक्लेरेशन ऑन रोड सेफ्टी के तहत, भारत ने 2030 तक सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों और चोटों को 50% तक कम करने का संकल्प लिया है।
मुख्य अतिथि श्री अमोद के. कंठ, (संस्थापक, प्रयास JAC सोसाइटी, संयुक्त समन्वयक, नीति-सीएसओ स्थायी समिति, नीति आयोग, पूर्व अध्यक्ष, DWSSC और DCPCR, तथा पूर्व DGP - IPS) ने कहा, "हर साल लगभग 1.5 लाख लोग अपनी जान गंवाते हैं, जबकि असंख्य लोग विकलांग हो जाते हैं। सड़क सुरक्षा में नेत्र स्वास्थ्य को पाँचवें 'E' (Engineering, Enforcement, Education, Emergency Care, and Eye Health) के रूप में मान्यता देना एक महत्वपूर्ण कदम है।"

महत्वपूर्ण पैनलिस्ट:
श्री अंशु तनेजा, प्रबंध निदेशक, विजनस्प्रिंग, इंडिया
पद्मश्री डॉ. (प्रोफ.) जीवन सिंह तितियाल, पूर्व प्रमुख, डॉ. आर.पी. सेंटर फॉर ऑप्थल्मिक साइंसेज, AIIMS, नई दिल्ली
डॉ. प्रोमिला गुप्ता, पूर्व महानिदेशक, स्वास्थ्य सेवाएँ (DGHS), MoHFW, भारत सरकार
डॉ. उर्वशी प्रसाद, पूर्व निदेशक, नीति आयोग, लोक स्वास्थ्य एवं नीति विशेषज्ञ
डॉ. मोहम्मद अशील, राष्ट्रीय प्रोफेशनल अधिकारी, WHO (चोट, विकलांगता, सहायक तकनीक और पुनर्वास)

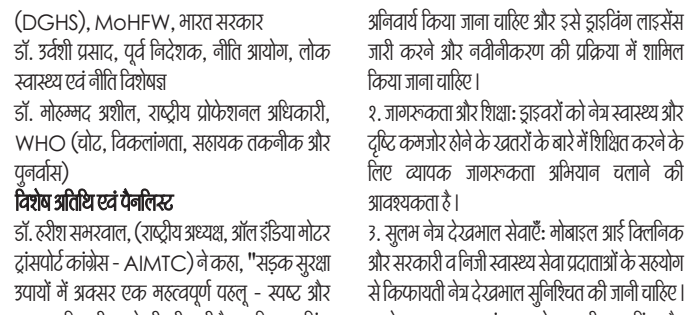

विशेष अतिथि एवं पैनलिस्ट
डॉ. हरीश सभरवाल, (राष्ट्रीय अध्यक्ष, ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस - AIMTC) ने कहा, "सड़क सुरक्षा उपायों में अक्सर एक महत्वपूर्ण पहलू - स्पष्ट और स्वस्थ दृष्टि की अनदेखी की जाती है। सुरक्षित ड्राइविंग के लिए स्पष्ट दृष्टि आवश्यक है, ताकि चालक सड़क की स्थिति, संकेतों और संभावित खतरों को प्रभावी ढंग से देख सके। 'विजन ज़ीरो' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ड्राइविंग समुदाय के लिए लक्षित नेत्र स्वास्थ्य पहल अत्यंत आवश्यक हैं। हमें इस मिशन के लिए एकजुट होकर काम करना होगा और भारत में सड़क सुरक्षा के लिए जागरूकता बढ़ानी होगी।" उन्होंने कहा कि ड्राइवरों की दृष्टि की देखभाल को प्राथमिकता देने के लिए नीचे दिए गए उपायों को लागू करना आवश्यक है:

1. अनिवार्य नेत्र जांच: सभी चालकों, विशेष रूप से वाणिज्यिक वाहन चालकों के लिए नियमित नेत्र जांच को अनिवार्य किया जाना चाहिए और इसे ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने और नवीनीकरण की प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए।
2. जागरूकता और शिक्षा: ड्राइवरों को नेत्र स्वास्थ्य और दृष्टि कमजोर होने के खतरों के बारे में शिक्षित करने के लिए व्यापक जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है।
3. सुलभ नेत्र देखभाल सेवाएँ: मोबाइल आई क्लिनिक और सरकारी व निजी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के सहयोग से किफायती नेत्र देखभाल सुनिश्चित की जानी चाहिए।
4. बेहतर सड़क अवसंरचना: बेहतर स्ट्रीट लाइटिंग और एंटी-ग्लेयर उपायों के माध्यम से सड़क अवसंरचना में सुधार किया जाना चाहिए।
5. ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने/नवीनीकरण के समय अनिवार्य नेत्र परीक्षण: सुनिश्चित किया जाए कि सभी चालकों की दृष्टि पर्याप्त हो।
6. ड्राइवर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में दृष्टि जांच को शामिल करना: ड्राइविंग स्कूलों और लाइसेंसिंग प्राधिकरणों को नेत्र परीक्षण और प्रशिक्षण अनिवार्य करना चाहिए।
7. सरकार और निजी क्षेत्र का सहयोग: सरकार, कॉर्पोरेट क्षेत्र और गैर सरकारी संगठनों को संयुक्त रूप से ड्राइवरों के लिए नेत्र स्वास्थ्य पहल को वित्त पोषित और लागू करना चाहिए।

2023 में सड़क दुर्घटनाओं में 1.73 लाख लोगों की मृत्यु हुई और 4.63 लाख से अधिक लोग घायल हुए। यह औसतन हर दिन 474 लोगों की मौत या हर तीन मिनट में एक मौत के बराबर है। भारत में ड्राइवरों के लिए कमजोर दृष्टि एक गंभीर समस्या है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) की "रोड एक्सीडेंट्स इन इंडिया 2022" रिपोर्ट के अनुसार, देश में कुल 4,61,312 सड़क दुर्घटनाएँ हुईं, जिनमें से 1,68,491 दुर्घटनाएँ घातक थीं। केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (CRRI) द्वारा दिल्ली में 500 वाणिज्यिक वाहन चालकों पर किए गए अध्ययन के अनुसार, 37% चालकों की बाईं आँख की दूर दृष्टि कमजोर थी, 36% की दाईं आँख की और 31% दोनों आँखों की। इसी तरह, कई चालकों को पास की दृष्टि में भी परेशानी थी। ये आँकड़े दर्शाते हैं कि हमारी सड़क सुरक्षा नीति में एक व्यापक बदलाव की आवश्यकता है, जिसमें नेत्र स्वास्थ्य एक मूलभूत प्राथमिकता होनी चाहिए। AIMTC के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हरीश सभरवाल ने कहा, "सड़क परिवहन क्षेत्र भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। हमारे ड्राइवर कठिन परिस्थितियों में लंबी दूरी तक काम करते हैं। उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा की अनदेखी नहीं की जा सकती। यदि हम उनकी दृष्टि का ध्यान नहीं रखेंगे, तो सड़क दुर्घटनाओं की संख्या में कमी लाना असंभव होगा। नेत्र देखभाल सिर्फ एक स्वास्थ्य प्राथमिकता नहीं, बल्कि सड़क सुरक्षा के लिए एक आवश्यक शर्त है। हम सरकार, NGOs और सभी हितधारकों के साथ मिलकर इन उपायों को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।" "हम सबकी साझा जिम्मेदारी है कि हम भारत की सड़कों को सुरक्षित बनाएं। इसके लिए नीति-निर्माताओं, उद्योग जगत, और समाज को मिलकर कार्य करना होगा। अगर हम नेत्र स्वास्थ्य को प्राथमिकता देंगे, तो हम हजारों लोगों की जान बचा सकते हैं और हमारे ड्राइवरों की जीवन गुणवत्ता में सुधार ला सकते हैं।"

सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता: सिर की चोट से बचाव पर विशेष अभियान

एक्सक्लूसिव इंटरव्यू: डॉ. अंकुर शरण, रोड सेफ्टी एक्सपर्ट और लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञ

परिवहन विशेष द्वारा प्रस्तुत

हर साल सड़क दुर्घटनाओं में हजारों लोग अपनी जान गंवाते हैं या गंभीर रूप से घायल होते हैं। इन दुर्घटनाओं में सबसे ज्यादा खतरा सिर की चोटों का होता है, जो अक्सर घातक साबित होती हैं। सिर की चोटों से बचाव और सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए परिवहन विशेष ने रोड सेफ्टी एक्सपर्ट और लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञ डॉ. अंकुर शरण से खास बातचीत की।

सवाल 1: सिर की चोट को लेकर जागरूकता अभियान की जरूरत क्यों है?

डॉ. अंकुर शरण:
भारत में सड़क दुर्घटनाओं की संख्या चिंताजनक रूप से बढ़ रही है। हर साल लाखों लोग सड़क हादसों का शिकार होते हैं, जिनमें से एक बड़ी संख्या सिर की गंभीर चोटों की वजह से जान गंवा देती है। हमारे देश में हेलमेट पहनने की आदत और सही जागरूकता की कमी एक प्रमुख कारण है। इसलिए, इस अभियान की जरूरत है ताकि लोग यह समझें कि एक छोटी सी लापरवाही उनके जीवन को खतरे में डाल सकती है।

सवाल 2: हेलमेट पहनने की अनिवार्यता को कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है?

डॉ. अंकुर शरण:
हमें हेलमेट पहनने को एक नियम से ज्यादा, एक ज़िम्मेदारी के रूप में अपनाना होगा। सरकार ने हेलमेट को अनिवार्य कर दिया है, लेकिन आम जनता को इसे स्वेच्छा से अपनाने की जरूरत है। हम स्कूलों, कॉलेजों, ऑफिसों और परिवहन विभाग के सहयोग से हेलमेट जागरूकता कार्यक्रम चला सकते हैं, जहां लोगों को सही हेलमेट चुनने और इसे सही तरीके से पहनने की ट्रेनिंग दी जाए।

सवाल 3: लॉजिस्टिक्स और ट्रांसपोर्टेशन इंडस्ट्री में इस अभियान को कैसे लागू किया जा सकता है?

डॉ. अंकुर शरण:
लॉजिस्टिक्स इंडस्ट्री में ड्राइवरों और डिलीवरी कर्मियों की सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। बड़ी कंपनियों को चाहिए कि वे अपने ड्राइवरों को हेलमेट और सीट बेल्ट के उपयोग की अनिवार्यता समझाएं। हमने कई कंपनियों के साथ मिलकर 'सुरक्षित यात्रा, सुरक्षित जीवन' अभियान शुरू किया है, जिसमें लॉजिस्टिक्स कर्मचारियों को सुरक्षा उपायों पर प्रशिक्षित किया जाता है।

सवाल 4: युवा पीढ़ी को सड़क सुरक्षा के प्रति कैसे प्रेरित किया जा सकता है?

डॉ. अंकुर शरण:
युवाओं को जागरूक करने के लिए हमें टेक्नोलॉजी और सोशल मीडिया का सहारा लेना होगा। अगर वे ट्रेंड फॉलो कर सकते हैं, तो उन्हें 'सेफ्टी ट्रेंड' की तरफ भी प्रेरित किया जा सकता है। इसके अलावा, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में सड़क सुरक्षा पर कार्यशालाएं और प्रतियोगिताएं आयोजित करनी चाहिए, जिससे वे इसे गंभीरता से लें।

सवाल 5: आपका इस अभियान के लिए मुख्य संदेश क्या होगा?

डॉ. अंकुर शरण:
"सुरक्षा समझदारी की निशानी है, लापरवाही जीवन पर भारी है।" हम सभी को चाहिए कि सड़क पर चलते समय सुरक्षा नियमों का पालन करें, हेलमेट और सीट बेल्ट का उपयोग करें और दूसरों को भी प्रेरित करें। सड़क सुरक्षा केवल एक कानून नहीं, बल्कि जीवन बचाने की एक जिम्मेदारी है।

सिर की चोट से बचने के लिए परिवहन विशेष का यह अभियान न केवल जागरूकता फैलाएगा, बल्कि इसे एक जन आंदोलन बनाने का प्रयास करेगा। आइए, हम सभी मिलकर सड़क सुरक्षा को अपनी आदत बनाएं और इस मुहिम को आगे बढ़ाएं।

डॉ. अंकुर शरण: सड़क सुरक्षा अभियान के प्रेरणास्त्रोत

डॉ. अंकुर शरण, जिन्हें ₹कैम्पेन बडी₹ के नाम से भी जाना जाता है, सड़क सुरक्षा अभियानों के संगठन में एक अग्रणी भूमिका निभा चुके हैं। वे न केवल एक लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञ हैं, बल्कि समाज में जागरूकता लाने के लिए अनेक राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर के अभियानों के सूत्रधार भी रहे हैं।

ग्लोबल कॉन्फेडरेशन ऑफ एनजीओज के मैनेजमेंट ट्रस्टी के रूप में वे अब इकोसिस्टम पार्टनर्स के साथ मिलकर राष्ट्रव्यापी अभियानों को मजबूत बनाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उनका उद्देश्य सड़क सुरक्षा को केवल एक कानून तक सीमित न रखते हुए इसे एक सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में स्थापित करना है। उनकी पहल से बेहतर सड़क सुरक्षा और जिम्मेदार नागरिकता की दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव आ रहे हैं।

roadsafetysquad@gmail.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

गुसैल किंतु कर्मठ स्वभाव के होते हैं वृश्चिक राशि वाले जातक

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक (इंजी)

नक्षत्र मंडल में जब चंद्रमा का गोचर विशाखा के अंतिम चरण से लेकर ज्येष्ठा के अंतिम चरण तक होता है तब वृश्चिक राशि होती है।

वृश्चिक स्थिर संज्ञक,शुभ्रवर्ण वाली,स्त्री जाति की,जल तत्व वाली, उत्तर दिशा की स्वामिनी,कफ प्रकृति वाली मानी गई है। यह राशि ब्राम्हण वर्ण वाली, हठी, दंभी,दृढ़ प्रज्ञ और निर्मल प्राकृतिक स्वभाव वाली है। कुंडली में इससे कद और गुप्त अंगों का विचार किया जाता है। मंगल,सूर्य और बृहस्पति ग्रह का प्रभाव इस राशि के जातकों में देखने को मिलता है।

गुण और स्वभाव : वृश्चिक राशि के जातक लंबे कद के घुंघराले बाल लिए हुए सुंदर स्वरूप वाले होते हैं। इनका सीना चौड़ा तथा माथा कुछ बड़ा होता है। वृश्चिक राशि के लोग दृढ़ निश्चयी,एकाग्रचित तथा भौतिकवादी होते हैं। इन्हे संगीत से अधिक लगाव रहता है। इन्हे गुस्सा भी बहुत जल्दी आता है और अगर कोई शत्रु बन गया तो बदला लिए बगैर ये नही मानते।

वृश्चिक राशि के लोग प्रेम प्रसंग में तीव्र,उदार स्वभाव तथा दयालु प्रवृत्ति के होते हैं। यह काफी भावुक परिवार से लगाव रखने वाले ,निष्ठावान होते हैं। जीवन में जल्दबाजी ही इन्हे नुकसानदायी होती है इसलिए कोई भी कार्य सोच समझ कर करें ।

कैरियर : वृश्चिक राशि के जातक पुलिस अधिकारी,सेना में उच्च पद पर,राजनयिक, दवा विक्रेता,शल्य चिकित्सक,अनाज का व्यापार, कलाकार,स्त्री रोग विशेषज्ञ,जासूसी,बंदरगाह या तट रक्षक,वकील, क्लर्क,वैज्ञानिक,लोहे तथा जमीन से संबंधित व्यापार आदि में सफलता प्राप्त करते हैं।

रोग : वृश्चिक राशि के लोगो को मूत्र विकार,किडनी के रोग,चोट,पथरी बबासीर,हड्डी टूटना,अल्सर,फोड़ा,फुंसी,अंडकोष वृद्धि,रक्तचाप,हृदय विकार आदि रोग परेशान कर सकते हैं।

भाग्यशाली दिन : रवि,सोम,मंगल और गुरुवार

भाग्यशाली रंग : पीला,लाल और संतरी

भाग्यशाली अंक :3,4,9

शुभ रत्न : लाल मूंगा

उपाय : वृश्चिक राशि के लोगो को मंगलवार का व्रत तथा हनुमानजी की उपासना करना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। प्रत्येक मंगलवार को भगवान शिव का अभिषेक गुड़ मिश्रित जल से करें और कपूर से आरती करें। सुंदरकांड पाठ करना इन्हे भाग्यशाली बनाता है।

19 मार्च/बलिदान दिवस : विकलांग क्रांतिवीर चारुचंद्र बोस

चारु चंद्र बोस का जन्म 26 फरवरी 1890 को खुलना जिले के शोभना गांव में हुआ था जो अब बांग्लादेश में है। उनके पिता केशव चंद्र बोस थे। जन्म से ही उनके दाहिने हाथ की हथेली नहीं थी।

बंगाल के क्रांतिकारियों की निगाह में अलीपुर का सरकारी वकील आशुतोष विश्वास बहुत समय से खटक रहा था। देशभक्तों को पकड़वाने, उन पर झूठे मुकदमे लादने तथा फिर उन्हें कड़ी सजा दिलवाने में वह अपनी कानूनी बुद्धि का पूरा उपयोग कर रहा था। ब्रिटिश शासन के लिए वह एक पुष्प था, जबकि क्रांतिकारी उस कांटे को शीघ्र ही अपने मार्ग से हटाना चाहते थे।

आशुतोष विश्वास यह जानता था कि क्रांतिकारी उसके पीछे पड़े हैं, अतः वह हर समय बहुत सावधान रहता था। वह प्रायः भीड़ से दूर ही रहकर चलता था। उसे उठाकर पटकने में सक्षम कोई हृष्ट-पुष्ट युवक यदि उसके पास से निकलता, तो वह दूर हट जाता था। वह रात में कभी अपने घर से नहीं निकलता था और अपरिचित लोगों से बिल्कुल नहीं मिलता था।

दूसरी ओर चारुचंद्र बोस नामक एक युवक था, जो आशुतोष को मजा चखाना चाहता था। ईश्वर ने चारुचंद्र के साथ बहुत अन्याय किया था। वह जन्म से ही अपंग था। उसके दाहिने हाथ में कलाई से आगे हथेली और उंगलियां नहीं थीं। दुबला-पतला होने के कारण चलते समय लगता था मानो वह अभी गिर पड़ेगा। उसके माता-पिता का भी देहांत हो चुका था।

इस पर भी चारुचंद्र साहसपूर्वक छापेखानों में काम कर पेट भर रहा था। उसने एक ही हाथ से काम करने की कला विकसित कर ली थी। इसके साथ ही उसके मन में देश के लिए कुछ करने की तड़प भी विद्यमान थी। उसे लगा कि आशुतोष विश्वास को यमलोक पहुंचाकर वह देश की सेवा कर सकता है। उसने कहीं से एक पिस्तौल का प्रबंध किया और जंगल में जाकर निशाना लगाने का अभ्यास करने लगा। धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ता गया और अंततः उसने अपने संकल्प की पूर्ति का निश्चय कर लिया।

10 फरवरी, 1909 को चारुचंद्र अलीपुर के न्यायालय में जा पहुंचा। आशुतोष विश्वास हर दिन की तरह आज भी जैसे ही न्यायालय से बाहर निकला, चारुचंद्र की पिस्तौल से निकली गोली उसके शरीर में घुस गयी। उसने मुड़कर देखा, तो पतला-दुबला चारुचंद्र उसके सामने था।

आशुतोष ''अरे बाप रे'' कहकर घायल अवस्था में वहां से भागा; पर चारुचंद्र को तो अपना काम पूरा करना था। उसने एक ही छलांग में अपने शिकार को दबोचकर बिल्कुल पास से एक गोली और दाग दी। आशुतोष विश्वास वहीं ढेर हो गया।

चारुचंद्र ने इसके लिए बड़ी बुद्धिमत्ता

से काम लिया था। अपने विकलांग हाथ पर रस्सी से पिस्तौल को अच्छी तरह बांधकर वह बायें हाथ से उसका घोड़ा दबा रहा था। जब पुलिस वालों ने उसे पकड़ा, तो उसने झटके से स्वयं को छुड़ाकर उन पर भी गोली चला दी; पर इस बार उसका निशाना चूक गया और कई पुलिसकर्मियों ने मिलकर उसे गिरफ्तार कर लिया।

पुलिसकर्मियों ने लातों, मुक्कों और डंडों से वहीं उसे बहुत मारा-पीटा; पर उसके चेहरे पर लक्ष्यपूर्ति की मुस्कान विद्यमान थी। न्यायालय में उस पर हत्या का मुकदमा चलाया गया। उसने बचने का कोई प्रयास नहीं किया। एक स्थितप्रज्ञ की तरह वह सारी कार्यवाही को देखता था, मानो वह अभियुक्त न होकर कोई दर्शक मात्र था। न्यायालय ने उसे मृत्यु दंड सुना दिया।

19 मार्च, 1909 को अलीपुर केन्द्रीय कारागार में उसने विजयी भाव से फंदा स्वयं गले में डाल लिया। उसके चेहरे पर आज भी वैसी ही मुस्कान तैर रही थी, जैसी देशद्रोही को मृत्युदंड देते समय थी। उसने सिद्ध कर दिया कि विकलांगता शुभ संकल्पों को पूरा करने में कभी बाधक नहीं होती।

तेजी से वजन घटाने की रखते हैं चाहत, तो रोज पिएं ये 5 तरह की चाय; स्वाद और सेहत दोनों में है बेस्ट

अगर आप वजन घटाने के लिए घंटों जिम में पसीना बहा रहे हैं या डाइटिंग के नाम पर मनपसंद खाना छोड़ रहे हैं तो एक और आसान तरीका आपके काम आ सकता है- हेल्दी वेट लॉस टी (Tea For Weight Loss)। जी हां कुछ खास तरह की चाय आपकी चर्बी को तेजी से कम करने में मदद कर सकती हैं। आइए यहां आपको इसके 5 ऑप्शन्स बताते हैं।

क्या आप भी वजन घटाने के लिए स्ट्रिक्ट डाइटिंग और घंटों वर्कआउट कर रहे हैं, लेकिन फिर भी मनचाहा रिजल्ट नहीं मिल रहा? अगर हां, तो यह आर्टिकल आपके लिए ही है। क्या आप जानते हैं कि सिर्फ एक कप हेल्दी टी आपका मेटाबॉलिज्म बूस्ट कर सकती है, फैट बर्न करने में मदद कर सकती है और डिटॉक्सिफिकेशन को तेज कर सकती है? जी हां, कुछ चाय ऐसी होती हैं, जो नेचुरली शरीर से एक्स्ट्रा चर्बी को कम करने में मदद करती हैं। खास बात ये है कि ये चाय न केवल आपकी सेहत के लिए अच्छी होती हैं, बल्कि स्वाद में भी बेहतरीन होती हैं। तो आइए, जानते हैं वजन घटाने में सबसे ज्यादा असरदार 5 चाय, जो आपकी फिटनेस जर्नी को और भी आसान बना सकती हैं।

ग्रीन टी : ग्रीन टी में मौजूद कैटेचिन और एंटीऑक्सीडेंट्स मेटाबॉलिज्म को तेज करके तेजी से फैट बर्न करने में मदद करते हैं।

यह शरीर में फैट ऑक्सीडेशन के प्रोसेस को तेज करती है, जिससे शरीर ज्यादा कैलोरी बर्न करता है।

इसमें कैफीन की हल्की मात्रा होती है, जो एनर्जी बूस्ट करने और वर्कआउट परफॉर्मेंस सुधारने में मदद करती है।

कैसे पिएं?

रोजाना खाली पेट एक कप ग्रीन टी पिएं।

अगर आपको हल्का स्वाद पसंद है, तो इसमें शहद या नींबू डाल सकते हैं।

लेमन-जिंजर टी

अदरक में मौजूद जिंजरोल (Gingerol) नामक कंपाउंड शरीर की गर्मी बढ़ाता है, जिससे फैट बर्निंग तेज हो जाती है।

नींबू डिटॉक्सिफिकेशन में मदद करता है और शरीर से टॉक्सिन्स निकालकर पाचन तंत्र को मजबूत करता है।

यह चाय पेट की सूजन को कम करके ब्लोटिंग से भी राहत दिलाती है।

कैसे पिएं?

एक कप पानी में 2-3 अदरक के टुकड़े उबालें और फिर उसमें आधा नींबू निचोड़कर पिएं।

इसे भोजन के बाद पीने से पाचन तंत्र बेहतर होता है और वजन घटाने में मदद मिलती है।

दालचीनी चाय

दालचीनी ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल करती है, जिससे अचानक लगने वाली मीठे की क्रेविंग कम होती है।

यह इंसुलिन सेंसिटिविटी को बेहतर बनाकर शरीर में फैट स्टोरेज को रोकने में मदद करती है।

यह चाय पेट की चर्बी कम करने के लिए सबसे ज्यादा असरदार मानी जाती है।

कैसे पिएं?

एक कप गर्म पानी में ½ टीस्पून दालचीनी पाउडर या एक दालचीनी स्टिक डालकर 5 मिनट तक उबालें।

इसे रात में सोने से पहले पीना ज्यादा फायदेमंद होता है।

पुदीना चाय

पुदीना चाय भूख को कंट्रोल करने में मदद करती है, जिससे आप ओवरईटिंग से बच सकते हैं।

सोमवार को करें ये आसान उपाय, बनेंगे बिगड़े काम

ज्योतिष शास्त्र में सोमवार के दिन को बेहद पवित्र और मनोकामना पूरी करने वाला बताया गया है। इस दिन शिवलिंग की विधिवत पूजा अर्चना करने से ग्रह-नक्षत्रों का शुभ प्रभाव प्राप्त होता है और कुछ उपाय करने से सभी कष्ट दूर होते हैं। देवों के देव महादेव, शिव शंभू की कृपा प्राप्त करने के लिए सोमवार का दिन बेहद फलदायी माना गया है। इस दिन विधिवत शिवजी की पूजा करने से सभी कष्ट दूर होते हैं और कुंडली में चंद्रमा की स्थिति भी मजबूत होती है। ज्योतिष शास्त्र में बताया गया है कि सभी देवी देवताओं में भगवान शिव जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं इसलिए महादेव को भोलेनाथ भी कहा जाता है। इसलिए सोमवार के दिन शिवजी की पूजा करने से और कुछ ज्योतिषिय उपाय करने से शिवजी की कृपा प्राप्त होती है और सभी बिगड़े काम बनने लगते हैं।

इस उपाय से चंद्रमा की स्थिति होगी मजबूत सोमवार के दिन ब्रह्म मुहूर्त और प्रदोष काल में शिवलिंग की विधिवत पूजा करें और 21 बेलपत्र पर सफेद चंदन लगाकर शिवलिंग को अर्पित करें। इसके बाद शिव चालीसा या शिवाष्टक का पाठ करें। ऐसा करने से भगवान शिव की कृपा प्राप्त होती है और कुंडली में चंद्रमा की स्थिति मजबूत होती है।

इस उपाय से भगवान शिव का मिलेगा आशीर्वाद सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध और जल चढ़ाएं, फिर गौरी-शंकर रुद्राक्ष अर्पित करें। इसके बाद घी, शक्कर, गेहूं के आटे का भोग लगाकर आरती उतारें। साथ ही प्रदोष काल में चावल, दूध, चांदी आदि का दान करें। ऐसा करने से वैवाहिक जीवन में खुशी बनी रहती है और सभी कार्य भगवान शिव के आशीर्वाद से पूरे होने लगते हैं।

इस उपाय से आर्थिक समस्या होगी दूर आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए सूर्योदय के समय शिवलिंग का गन्ने के रस से अभिषेक करें और प्रदोष काल में शहद की धारा अर्पित करें। इसके बाद रुद्राक्ष की माला से सुबह शाम 'ॐ नमो धनदाय स्वाहा' मंत्र का जप करें। ऐसा करने से धन संबंधित समस्याओं का अंत होगा और जीवन में सुख-शांति में वृद्धि होगी।

इस उपाय से व्यापार में होगी उन्नति कारोबार और व्यापार में उन्नति के लिए पंचामृत से शिवलिंग का अभिषेक करें और शिवलिंग पर चढ़े दूध को थोड़ा सा तांबे में बर्तन में भर लें। इसके बाद पूरी श्रद्धा के साथ 'ॐ नमः शिवायः' मंत्र का जप करते हुए व्यवसाय स्थल पर छिड़क दें। ऐसा करने से तरक्की में आ रही कोई भी बाधा दूर होगी और कारोबार और व्यवसाय में अच्छी वृद्धि होगी।

इस उपाय से धन धान्य में होगी वृद्धि सोमवार के दिन प्रदोष काल में शिवलिंग पर अक्षत, सफेद चंदन, धतूरा, दूध, आक, गंगाजल और कच्चे चावल में काले तिल मिलाकर शिवलिंग पर अर्पित करें और फिर चावल मे मिल तिल को दान कर दें। इसके बाद महामृत्युंजय मंत्र का जप और शिव रक्षा स्तोत्र का पाठ करें। ऐसा करने से आसपास सकारात्मक ऊर्जा का संचार बना रहेगा और जीवन में धन धान्य की वृद्धि होगी।

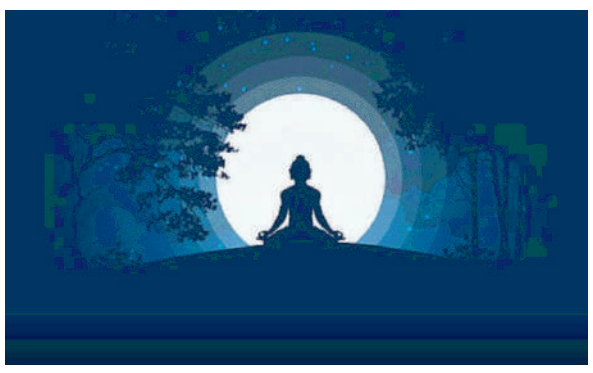

सत्ता, ताकत और जवानी सब की अंतिम तारीख तय होती है, इसीलिए हमेशा विनम्र बने रहिए!

अल्प मूल्य वास्तव में सबसे दीर्घ मूल्य पड़ता है। जो नुकसान उठाने की ताकत रखता है, वही लाभ कमा सकता है, चाहे वो व्यापार हो या संबंध। खुशी उससे नहीं मिलती जो हमें मिलता है, बल्कि उससे मिलती है जो हम देते हैं। जीवन ऐसे जीना है कि जब अंत समय आए तो कोई पछतावा न हो, अपनी पसंद का जीवन जीना है ताकि अंतिम सांसों से गुजरते समय कोई पछतावा न हो। झूठ में आकर्षण होता है पर स्थिरता सत्य में ही होती है।शब्दो का वजन तो बोलने वाले के भाव पर आधारित है, एक शब्द मन्त्र हो जाता है और एक शब्द गाली कहलाता है वाणी ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचय कराती है। भाग्य की एक प्रवृत्ति है कि वो सदा पलटती है और जब पलटती है, तब पलट कर रख देती है। इसलिये अच्छे दिनों मे अहंकार न करो और खराब समय में कुछ प्रतीक्षा करो। जब से मुझे पता चला है कि ऊपर वाला मेरे साथ है, तब से मैंने ये सोचना बंद कर दिया कि कौन मेरे विरूद्ध है। मन की बगिया में सकारात्मक फूलों की खेती करना ही हितकारी है। जिसका मन पवित्र है, वो प्रकाशमान दिए के समान है जहाँ भी रहे अंधकार रूपी बुराई का नाश करता है। नाकामियां हमे अपनी गलती सुधारने और वापस दोगुनी ताक़त से सफल होने के लिए प्रेरित करती है। अगर कोई आपकी आशा पर जीता है तो आप भी उसके विश्वास पर खरा उतरिए, क्योंकि मनुष्य उसी से आशा रखता है जिसको वह सबसे निकट मानता है। जो दूसरों को जीतता है, वो पहलवान है, जो स्वयं को जीतता है, वह शक्तिशाली है। सत्ता, ताकत और जवानी सब की अंतिम तारीख तय होती है, इसीलिए हमेशा विनम्र बने रहिए। जो तुम्हें मिल रहा है, वही तुम्हारे लिये बेहतर हैं, ये तुम नही जानते, लेकिन देने वाला अच्छे से जानता है, श्री हरि इच्छा के बिना कुछ भी नहीं होता, मनुष्य तो निमित्त मात्र है

हम बदलें तो दुनिया बदले

इन चीज़ों को भिगोकर खाएँ आस-पास भी नहीं फटकेंगीं बीमारियां

आयुर्वेद के अनुसार, अगर किसी चीज को रातभर भिगोकर रखा जाए और अगले दिन उसका सेवन किया जाए तो ज्यादा फायदेमंद होता है। जी हां,अंकुरित होने के बाद कुछ चीजों के पोषक तत्वों की अधिकता हो जाती है साथ ही इन्हें आसानी से पचाया भी जा सकता है। ताउम्र दवाइयों के सेवन से बचे रहना चाहते हैं तो आज हम आपको कुछ चीजों के बारे में बताएंगे जिन्हें भिगोकर ही खाना चाहिए।

अलसी के बीज यह ओमेगा- ३ फैटी के अलावा प्रोटीन, आयरन का भी अच्छा स्त्रोत हैं। इसको भिगोकर खाने से शरीर का बैड कोलेस्ट्रोल कम हो जाता है और दिल स्वस्थ रहता है। साथ ही इससे मेनोपॉज के दौरान होने वाली समस्या भी कम होती हैं।

खसखस थियामिन और पैंटोथैनिक एसिड से भरपूर खसखस का पूरा फायदा भी तभी मिलेगा जब आप इसे भिगोकर खाएंगे। इससे वजन कंट्रोल में रहता है और कई समस्याओं से भी बचे रहते हैं।

मुनक्का यह मैग्नीशियम, पोटेशियम और आयरन का पॉवर हाउस कहा जाता है। इसे भीगा हुआ खाने से शरीर में कैंसर कोशिकाएं नहीं बढ़ती हैं, जिससे आप इस बीमारी से बचे रहते हैं। साथ ही इसका सेवन एनीमिया, किडनी स्टोन, स्किन प्रॉब्लम्स और पेट की दिक्कतों से भी छुटकारा दिलाता है।

मेथी दाना फाइबर और फॉस्फोरस से भरपूर मेथी दाना डायबिटीज मरीजों के लिए एक अच्छी औषधी है। साथ ही इससे दांत व हड्डियां मजबूत होती हैं। इसके अलावा नियमित रूप से इसका पानी पीने से किडनी स्टोन भी निकल जाता है। इतनी ही नहीं, इन्हें भिगोकर खाने से महिलाओं में पीरियड्स के दौरान होने वाला दर्द भी कम होता है।

अंकुरित मूंग दाल यह प्रोटीन, फाइबर और विटामिन बी से भरपूर होती है। इसे खाने से पेट में बनी कब्ज और गैस की समस्या दूर होती है। इससे हाई ब्लड प्रेशर कंट्रोल रहता है। साथ ही यह कोलेस्ट्राल लेवल को भी नियंत्रित करता है।

सौंफ इसको भिगोकर खाने या इसका पानी पीने से यूरिन प्रॉब्लम से बचाव होता है क्योंकि इसमें डाइयूरेटिक प्रॉपर्टीज होती हैं। जिससे पेशाब से जुड़ी समस्याएं दूर रहती हैं। इतना ही नहीं इससे पाचन भी दुरुस्त रहता है और आंखों की रोशनी तेज होती है।

अंजीर रोजाना ३ से ५ भिगी हुई अंजीर खाने से कब्ज की समस्या दूर होती है। साथ ही दिल की बीमारियों की रोकथाम करते हैं। इसके अलावा इसमें कैल्शियम पाया जाता है जो हड्डियों को मजबूत बनाता है।

बादाम इन्हें भिगोकर खाने से eyes की रोशनी और दिमाग तेज होता है। साथ ही इससे कैंसर जैसी कई गंभीर बीमारियों का खतरा भी कम होता है।

रंग पंचमी का पर्व दैवीय ऊर्जा से शुभ्रता-समृद्धि

रंग पंचमी को देव होली भी कहते हैं। इस तिथि का हिंदू धर्म में बहुत धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व है। रंग पंचमी या देव होली, मनुष्यों की होली के पांचवें दिन यानी चैत्र माह में कृष्ण पक्ष की पंचमी को मनाई जाती है।*

दैवीय ऊर्जा का संचार शास्त्रों के मुताबिक़ इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने इंद्र सहित अन्य देवताओं के साथ होली खेली थी। इस दिन समूचे वातावरण में रंगों के माध्यम से सकारात्मक ऊर्जा का विस्तार होता है जिसे दैवीय ऊर्जा माना जाता है। रंग पंचमी या देव होली का यह धार्मिक-आध्यात्मिक पर्व विशेष रूप से मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन वातावरण में सत्व गुण से भरपूर दिव्य तरंगें सक्रिय होती हैं, जो नकारात्मक शक्तियों को नष्ट करने और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

सत्वगुण की वृद्धि यह पर्व वास्तव में होली का आध्यात्मिक विस्तार या कहें उसकी सम्पूर्णता है। होली राक्षसी प्रवृत्तियों के नाश का पर्व है, होलिका बुराई का प्रतीक है, जिसके लिए होली मनाई जाती है। इससे अलग रंग पंचमी दैवीय आनंद और सत्व गुण की वृद्धि का प्रतीक है। इसीलिए इसे देवताओं की प्रसन्नता का पर्व भी कहते हैं।इस दिन देवताओं के लिए मनुष्यों द्वारा कई विशेष अनुष्ठान किए जाते हैं, जिससे वे प्रसन्न होते हैं और भक्तों पर कृपा बरसाते हैं।

देवताओं की आराधना महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में इस दिन विशेष रूप से गुलाल उड़ाकर देवताओं की आराधना की जाती है। जबकि मथुरा-वृंदावन में इस दिन ब्रज की होली का समारोहपूर्वक समापन होता है। ब्रजभूमि में देव होली कृष्ण लीला का ही विस्तार है। जबकि मध्य प्रदेश के मालवा इलाके में और राजस्थान में इस दिन विशेष शोभायात्राएं निकलती हैं।

आंतरिक और बाह्य शुद्धता देव होली का वास्तव में रिश्ता हमारे गुणों के संतुलन से है। मनुष्य में जो सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण होते हैं, देव होली इन तीनों गुणों में से हममें सत्व गुण को बढ़ाती है। रंग पंचमी के दिन विभिन्न देव शक्तियों को प्रसन्न करने के लिए रंगों का उत्सव मनाया जाता है। मान्यता है कि इस दिन वातावरण में दैवीय शक्तियां सक्रिय होती हैं और रंग खेलने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है। यह पर्व वास्तव में दैवीय ऊर्जा तरंगों को जागृत करने का दिन है, जो वातावरण को शुद्ध और सकारात्मक बनाती हैं। इसे आध्यात्मिक रूप से आंतरिक और बाह्य नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करने वाला पर्व माना जाता है। इस पर्व में रंगों के जरिये मन की आंतरिक शुद्धि होती है। क्योंकि भारतीय अध्यात्म परंपरा में रंगों का सीधा संबंध चक्रों (ऊर्जा केंद्रों) और मन की अवस्थाओं से होता है।

प्रेममई भक्ति का संचार रंग पंचमी पर रंगों के प्रयोग से हमारा अपना आंतरिक चैतन्य यानी सप्रिचुअल कांशियसनेस जागृत होता है। इसके साथ ही यह पर्व प्रेममई भक्ति का संचार करता है। क्योंकि इसमें लोग सामाजिक सौहार्द और आंतरिक अध्यात्म की डोर से एक-दूसरे के साथ जुड़ते है। इस पर्व में प्रेम, सद्भाव और एकता का संदेश छिपा होता है, जो अंततः हमें भक्ति और ईश्वरीय प्रेम की ओर ले जाता है।

शुभ्रता और समृद्धि देव होली पर सम्पन्न किये जाने वाले कुछ विशेष अनुष्ठान और परंपरायें हैं। महाराष्ट्र में यह श्रीमंत पेशवाओं के काल से चली आ रही परंपरा है, जहां लोग ढोल-ताशों और गुलाल के साथ यह उत्सव मनाते हैं। कई जगह इस दिन विशेष हवन और पूजन किए जाते हैं, ताकि जीवन में शुभ्रता और समृद्धि बनी रहे। इसलिए वृहद सन्दर्भ से देखा जाये तो रंग पंचमी खुद को धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से समृद्ध करने का जरिया है।

एलजी, मुख्यमंत्री और पीडब्ल्यूडी मंत्री ने किया सुनेहरी पुल नाले की सफाई कार्य का निरीक्षण – जलभराव मुक्त दिल्ली की ओर एक बड़ा कदम

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ और विकसित दिल्ली के विजन को आगे बढ़ाते हुए, शहर अपने नागरिक बुनियादी ढांचे को सुधारने की दिशा में तेज़ी से कदम बढ़ा रहा है। इसी कड़ी में, माननीय उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना, मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और सांसद बंसुरी स्वराज, पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा के साथ आज लोधी रोड के पास सुनेहरी पुल नाले की सफाई कार्य का निरीक्षण किया।

सुनेहरी पुल नाला, जो वर्षों से गाद और कचरे से भरा पड़ा था, बारिश के दौरान जलभराव और बदबू का प्रमुख कारण बनता रहा है। मौके पर बोलते हुए, पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा ने ज़ोर देकर कहा कि दिल्ली सरकार इस समस्या का स्थायी समाधान निकालने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है, ताकि नागरिकों को इस समस्या का बार-बार सामना न करना पड़े।

आधुनिक तकनीक से सफाई, बहु-एजेंसी समन्वय

इस समस्या का स्थायी समाधान निकालने के लिए, उन्नत सक्शन मशीनों का उपयोग किया जा रहा है, जो

कुशलतापूर्वक गाद और कचरा हटाकर जल निकासी की क्षमता को सुधार रही हैं। निकाले गए पानी को फिल्टर और ट्रीट कर फिर से नाले में छोड़ा जा रहा है, जिससे जल प्रवाह सुचारू बना रहे और भविष्य में कोई अवरोध न हो। इसके अलावा, विभिन्न एजेंसियों को शामिल किया गया है ताकि शहर के नाली और जल निकासी सिस्टम को साफ और कार्यशील बनाए रखने के लिए एक दीर्घकालिक योजना तैयार की जा सके।

जलभराव रोकने के लिए मानसून पूर्व तैयारियां तेज़

आगामी मानसून को ध्यान में रखते हुए, जलभराव से निपटने के लिए एहतियाती कदम तेज़ी से उठाए जा रहे हैं। प्रशासन शहरभर में जल निकासी व्यवस्था की निगरानी कर रहा है और दिल्ली में बाढ़ प्रबंधन और जल निकासी तंत्र को मजबूत करने के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है।

प्रवेश वर्मा का संकल्प – स्वच्छ, सुंदर और जलभराव मुक्त दिल्ली

इस अवसर पर, मंत्री प्रवेश वर्मा ने कहाः

"प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ और विकसित भारत के विजन से प्रेरित होकर, हम दिल्ली को जलभराव मुक्त और नागरिक सुविधाओं से परिपूर्ण बनाने के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। यह केवल नाले की सफाई का मामला नहीं है, बल्कि यह एक बड़े बदलाव की दिशा में उठाया गया अहम कदम है। हमारा लक्ष्य एक साफ-सुथरी, सुव्यवस्थित और आधुनिक दिल्ली बनाना है, और सरकार इस दिशा में निरंतर कार्य करती रहेगी ताकि दिल्ली के नागरिकों को एक बेहतर और टिकाऊ शहरी वातावरण मिल सके।"

दिल्ली सरकार और प्रशासन यह सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है कि राजधानी एक स्वच्छ, हरित और सुव्यवस्थित शहर के रूप में विकसित होती रहे, जिससे नागरिकों का जीवन आसान और स्वस्थ बन सके।

हम उम्मीद करते हैं की सी.सी.टी.वी. लगाने के और भी घोटाले अब खुलेंगे : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री सत्येन्द्र जैन पर दिल्ली में सी.सी.टी.वी. लगाने के मामले में ए.सी.बी. द्वारा एफ.आइ.आर. पंजीकरण का स्वागत किया और कहा है की यह तो शुरूवात है अभी आगे ऐसे अनेक मामले सामने आयेंगे जिन्हे अरविंद केजरीवाल सरकार ने दबा रखा था या जिनकी जांच विलंबित की हुई थी।

उन्होंने कहा था की केजरीवाल सरकार ने 2017-18 में एक निजी कम्पनी ₹बी.इ.एल.₹ को सी.सी.टी.वी. लगाने का 571 करोड़ रूपए का ठेका दिया और जिसमें विलंब को लेकर कम्पनी पर 16 करोड़ रूपए का जुर्माना 2019 में लगाया जिसे कुछ ही दिन बाद सत्येन्द्र जैन ने 7 करोड़ लेकर माफ कर दिया था।

इस मामले की शिकायत अन्य विभागीय सूत्रों के आलावा दिल्ली भाजपा के तत्कालीन अध्यक्ष मनोज तिवारी ने भी की थी और मामला ए.सी.बी. तक पहुंचा था।

ए.सी.बी. ने 2023 में सत्येन्द्र जैन पर ₹बी.इ.एल.₹ से 7 करोड़ रूपये रिश्वत मामले की जांच पूरी कर ली थी पर केजरीवाल सरकार की लीपापोती के चलते एफ.आइ.आर. नही हो पा रही थी।

सचदेवा ने कहा है की अंततः अब एफ.आइ.आर. हुई है और हम उम्मीद करते हैं की सी.सी.टी.वी. लगाने के और भी घोटाले अब खुलेंगे।

निगम में नेता सदन मुकेश गोयल ने संशोधित बजट अनुमान 2024-25 और बजट अनुमान 2025-26 सदन में कराया पारित

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम की आम आदमी पार्टी की सरकार ने बुधवार को इतिहास रच दिया। ₹आपर₹ सरकार ने एक साथ निगम के 12 हजार कच्चे कर्मचारियों को पक्का करके अपना वादा पूरा कर दिया। मेयर महेश कुमार ने बताया कि 12 हजार कर्मचारियों के वेतन के लिए बजट में 800 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है। दिल्ली वासियों के हर वर्ग के लिए आम आदमी पार्टी की सरकार सदन में बड़े निर्णय ले रही है। लेकिन भारतीय जनता पार्टी का व्यवहार दलित मेयर के प्रति अपमानजनक रहा। सदन में भाजपा के पार्षदों ने धक्का मुक्की की, जिससे हमारे कई पार्षदों को चोटें आई हैं। भाजपा ने पिछले 2 साल से सदन नहीं चलने दिया है।

दिल्ली के मेयर महेश कुमार ने बुधवार को दिल्ली नगर निगम के सदन की बैठक में वर्ष 2024-25 के संशोधित बजट एवं वर्ष 2025-26 के बजट अनुमान के मुद्दे पर एक प्रेस वार्ता को संबोधित किया। इस अवसर पर डिप्टी मेयर रविन्द्र भारद्वाज एवं नेता सदन मुकेश गोयल भी उपस्थित रहे। मेयर महेश कुमार ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी को एक दलित मेयर का कार्यकाल हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने कहा कि विपक्ष के पार्षद के दुर्व्यवहार के चलते सदन की बैठक सुचारु रूप से नहीं चल पाई और सत्तापक्ष के कुछ पार्षदों को चोटें भी आई हैं। भारतीय जनता पार्टी ने पिछले 2 वर्षों में ढंग से सदन

नहीं चलने दिया है।

उन्होंने कहा कि नेता विपक्ष द्वारा प्रस्तावित कट मोशन जिन में उन्होंने स्ट्रीट लाइट एवं हाई मास्ट लाइट के लिए 1 करोड़ रुपए अतिरिक्त, छठ पूजा के लिए 50 लाख रुपए अतिरिक्त, महिला शौचालय के लिए 25 लाख रुपए अतिरिक्त बजट व्यवस्था जैसे प्रस्तावों को मंजूरी दी गई है।

मुकेश गोयल ने कहा कि निगम में आम आदमी पार्टी की सरकार पिछले दो वर्षों से है और इन दो वर्षों में हमने कर्मचारियों के वेतन एवं पेंशनभोगियो की बकाया राशि के बैकलॉग को दूर किया है। भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में सेवानिवृत कर्मचारियों का पिछले 10 वर्षों के भुगतान का बैकलॉग था जिसे निगम की ₹आपर₹ सरकार 2 वर्षों पर ले आई है। पहले की भाजपा सरकार के कार्यकाल में कर्मचारियों को 6 महीने तक वेतन नहीं मिलता था जिसके चलते आए दिन हड़तालें होता थी अब ₹आपर₹ सरकार के कार्यकाल में यह सब बंद हो गया है क्योंकि हम समय पर कर्मचारियों के वेतन का भुगतान कर रहे हैं।

मुकेश गोयल ने कहा कि निगम की ₹आपर₹ सरकार ने शेड्यूल ऑफ पोस्ट को यथावत रखा है और निगम में न तो कोई नई नौकरी सृजित की जाएगी और न ही किसी कर्मचारी की नौकरी जाएगी। उन्होंने कर्मचारियों को विश्वास दिलाया कि किसी भी कर्मचारी की नौकरी नहीं जाएगी। मुकेश गोयल ने कहा कि आम आदमी पार्टी सरकार दिल्लीवासियों को हर सुविधाएं देने के लिए प्रतिबद्ध है और आज निगम के सदन से पारित यह बजट हर दिल्लीवासी की आकांक्षाओं पर खरा उतरेगा।

राजस्थान का सबसे भरोसेमंद और सबसे ज़्यादा देखा जाने वाला न्यूज़ चैनल ज़ी राजस्थान

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

राजस्थान का सबसे भरोसेमंद और सबसे ज़्यादा देखा जाने वाला न्यूज़ चैनल ज़ी राजस्थान, न केवल समाचारों की रिपोर्टिंग करके बल्कि वास्तविक बदलाव लाकर पत्रकारिता को फिर से परिभाषित करना जारी रखे हुए है... 50% से ज्यादा मार्केट शेयर (स्रोत: BARC; मार्केट: राजस्थान; TG 22 - 50 पुरुष ABC; TB: 0600-2400; अवधि: सप्ताह 01 - 08'25; 4 चैनलों पर शेयर% की गणना; स्क्रीन: टीवी) के साथ, ज़ी राजस्थान लोगों की आवाज़ के रूप में मजबूती से खड़ा है... उनकी समस्याओं को उठाता है, जवाबदेही सुनिश्चित करता है....

साथ ही प्रदेश में अगर बात सामाजिक सरोकारों की हो तो उसमें भी ज़ी राजस्थान सबसे आगे रहता है...इसी कड़ी में ज़ी राजस्थान ने 'स्वर्णिम राजस्थान' कार्यक्रम के जरिए प्रदेश भर में हितधारकों को सफलतापूर्वक जोड़ा है. शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, बुनियादी ढाँचा, व्यवसाय और रोजगार जैसे प्रमुख मुद्दों पर संवाद को बढ़ावा दिया है.... अक्टूबर 2024 से मार्च 2025 तक, ज़ी राजस्थान ने प्रदेश के 9 जिलों में रेवोल्यूशनरी प्रोग्राम्स का नेतृत्व किया... जिसमें सरकारी प्रतिनिधियों, उद्योग जगत, जनप्रतिनिधियों और स्थानीय समुदायों को एक साथ लाकर जिलों के भविष्य को आकार देने पर मंथन किया. इस प्रतिबद्धता के मूल में 'स्वर्णिम राजस्थान' की अवधारणा है, जो कि, राज्य की सबसे बड़ी विकास चुनौतियों का समाधान करते हुए नागरिकों और नीति निर्माताओं के बीच की खाई को पाटने में सफल रही है....साथ ही ज़ी राजस्थान का विज़न है कि हम नए वित्त वर्ष में इन जिलों में फिर जाएंगे.और यह जानने की कोशिश करेंगे..कि आखिर हमारे मंच से जिलों के विकास को लेकर जो घोषणाएं और चर्चा की गई थी....वो कितनी फलीभूत हुई उनका कितना असर दिखा है?

साथ ही, इस वित्त वर्ष में हमारा लक्ष्य बचे हुए 32 जिलों तक भी पहुंचने का है, जहां हम पिछले वित्त वर्ष में नहीं जा सके थे। वहां की ज़मीनी सच्चाई को समझेंगे, स्थानीय चुनौतियों को उजागर करेंगे और विकास की दिशा में आगे बढ़ने के लिए नए संवाद स्थापित करेंगे।

चैनल हेड - ज़ी राजस्थान और ज़ी 24 घंटा, आशीष दवे, ने कहा, कि ₹ज़ी राजस्थान नागरिकों और शासन के बीच एक सेतु के रूप में खड़ा है.... जो यह सुनिश्चित करता है कि लोगों की चिंताएं गुमनामी में न खो जाएं... बल्कि उन्हें वास्तविक समाधान की ओर ले जाएं.... 'स्वर्णिम राजस्थान' एक प्रभावशाली कार्यक्रम है, जो जनता की आवाज़ को बुलंद करता है....जवाबदेही को बढ़ावा देता है और राजस्थान की विकास गाथा को आगे बढ़ाता है. राज्य के नंबर 1 न्यूज़ चैनल के रूप में, हमारी ज़िम्मेदारी रिपोर्टिंग से कहीं आगे तक हम यहाँ बदलाव लाने और भविष्य को बेहतर स्वरूप देने के लिए हैं....₹

Zee Media Corporation Limited के सीईओ श्री करण अभिषेक सिंह ने आगे कहा ₹पत्रकारिता की असली ताकत उसकी जवाबदेही में है, और 'स्वर्णिम राजस्थान' इस सिद्धांत का एक बेहतरीन उदाहरण है। नागरिकों को शासन और विकास में भागीदार बनाकर, ज़ी राजस्थान जिम्मेदार पत्रकारिता का नया मापदंड स्थापित कर रहा है। ZMCL में, हम उन नवाचारों पर गर्व करते हैं जो समाचार कवरेज से आगे बढ़कर प्रगति में योगदान करती हैं. और हम इन प्रभावशाली प्रयासों को आगे भी जारी रखेंगे।

ज़ी राजस्थान राज्य का सबसे विश्वसनीय और प्रभावशाली समाचार चैनल बना हुआ है, जो नागरिकों को सशक्त बनाने के साथ ही निडर और उद्देश्यपूर्ण पत्रकारिता के माध्यम से राजस्थान के भविष्य को आकार देने के लिए समर्पित है।

जनता से अफवाहों पर ध्यान न देने और सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने की अपील

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली : जमीयत उलमा-ए-हिंद के एक प्रतिनिधि मंडल ने आज महासचिव मौलाना हकीमुद्दीन कासमी की नेतृत्व में बरहमपुरी , दिल्ली की गली नंबर 12 स्थित मस्जिद अल-मतीन का दौरा किया और मस्जिद प्रबंधन से मुलाकात की। इस प्रतिनिधि मंडल में मौलाना आबिद कासमी (अध्यक्ष, जमीयत उलमा-ए-दिल्ली), मौलाना मुफ्ती ज़कावत हुसैन कासमी (नायब अमीर-ए-शरीअत, दिल्ली), एडवोकेट मिर्ज़ा आकिब बेग और केंद्रीय कार्यालय से मौलाना अज़ीमुल्लाह सिद्दीकी शामिल थे।

यह दौरा हाल के दिनों में मस्जिद अल-मतीन को लेकर चल रही अफवाहों के मद्देनज़र किया गया, जिनमें मस्जिद के विस्तार और एक नए द्वार के निर्माण की बातें कही जा रही थीं। इसी बीच, एमसीडी द्वारा मस्जिद प्रशासन को एक नोटिस जारी कर अवैध निर्माण का आरोप लगाया गया है।

मस्जिद प्रशासन ने जमीयत के प्रतिनिधियों को स्पष्ट किया कि कुछ शरारती तत्वों द्वारा भ्रामक प्रचार किया जा रहा है, जिससे जनता में गलतफहमियां फैल रही हैं, जबकि हकीकत यह है कि स्थानीय लोग वर्षों से सौहार्दपूर्ण वातावरण में रह रहे हैं। मस्जिद के विस्तार की कोई योजना नहीं है, बल्कि मस्जिद से सटे एक अतिरिक्त भूखंड को अल-मतीन वेलफेयर सोसायटी ने खरीदा है, जहां एक अलग निर्माण किया जा रहा है।

एमसीडी के नोटिस पर प्रतिक्रिया देते हुए, मस्जिद प्रशासन ने बताया कि संबंधित भूमि के सभी कानूनी दस्तावेज पहले ही एमसीडी शाहदरा कार्यालय में जमा कर दिए गए हैं और एक महीने

पहले ही नोटिस का उत्तर दिया जा चुका है। इसके साथ ही, स्ट्रक्चरल इंजीनियर का लाइसेंस भी संलग्न किया गया था।

इस अवसर पर जमीयत उलमा-ए-हिंद के महासचिव मौलाना हकीमुद्दीन कासमी ने कहा कि सामाजिक सद्भाव और आपसी एकता समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। भारत में हिंदू-मुस्लिम सदियों से साथ रहते आए हैं और यही हमारे देश की साझा संस्कृति की पहचान है। उन्होंने कहा कि किसी भी कृत्य से पड़ोसियों को कष्ट पहुँचाना इस्लाम में अनुचित माना गया है और अल्लाह के निकट इसके लिए जवाबदेही होगी, जबकि मस्जिद की रक्षा भी हमारी ज़िम्मेदारी है। मौलाना कासमी ने मस्जिद प्रशासन को आश्वासन दिया कि यदि आवश्यकता पड़ी, तो जमीयत उलमा-ए-हिंद हर संभव सहयोग देने के लिए तैयार है।

इस अवसर पर मस्जिद प्रशासन के प्रमुख सदस्य, जिनमें जनाब नईम अहमद, याकूब भाई, अमजद साहब और इमाम व खतीब मुफ्ती फ़ुरक़ान साहब शामिल थे,

दिल्ली में भीषण गर्मी से बढ़ेगी बिजली की डिमांड, इस बार टूट सकते हैं सारे रिकॉर्ड

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में इस साल मार्च महीने से ही गर्मी पड़ने लगी है। इससे बिजली की मांग भी बढ़ रही है। इस साल गर्मी में दिल्ली में बिजली की मांग के सारे रिकॉर्ड टूट सकते हैं। दिल्ली में बिजली की मांग नौ हजार मेगावाट से ऊपर पहुंच सकती है। इसे लेकर बिजली वितरण कंपनियों ने तैयारी शुरू कर दी है।

नई दिल्ली। राजधानी में गर्मी बढ़ने के साथ बिजली की खपत भी बढ़ने लगी है। इस बार गर्मी में अधिकतम मांग नौ हजार मेगावाट से ऊपर पहुंच सकती है। इसे ध्यान में रखकर बिजली वितरण कंपनियों (डिस्काम) ने तैयारी कर रही हैं। पिछले साल अधिकतम मांग 8656 मेगावाट पहुंच गई थी।

पहले कितनी पहुंची थी बिजली की मांग?

पहले कभी भी मांग आठ हजार मेगावाट नहीं पहुंची थी। बिजली की मांग का अनुमान लगाने के लिए बीएसईएस राजधानी पावर लिमिटेड (बीआरपीएल), बीएसईएस यमुना पावर लिमिटेड (बीवाईपीएल) और टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रीब्यूशन लिमिटेड (टीपीडीडीएल) ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग जैसी अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करती हैं।

अधिकारियों का कहना है कि बिजली की खपत का मौसम का भी असर पड़ता है, इसलिए मौसम पूर्वानुमान का ध्यान रखा जाता है। निर्बाध आपूर्ति के लिए बिजली नेटवर्क का भी उन्नयन किया है।

नए ट्रांसफार्मर लगाने के साथ ही जरूरत के अनुसार पुराने की क्षमता बढ़ाई गई है। अतिरिक्त कर्मचारियों की तैनाती के साथ ही आपात स्थिति से निपटने के लिए त्वरित प्रक्रिया दल (क्यूआरटी) की तैनाती की जा रही है।

आम आदमी पार्टी को केंद्र की मोदी सरकार हमेशा परेशान करने में लगी रहती है, इसी कड़ी में यह एक और प्रयास है- संजय सिंह

मुख्य संवाददाता,/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री सत्येंद्र जैन के खिलाफ एक और फर्जी केस बनाने पर भाजपा और केंद्र सरकार को आड़े हाथ लिया है। ''आप'' के वरिष्ठ नेता राज्यसभा सांसद संजय सिंह का कहना है कि सत्येंद्र जैन के खिलाफ फिर से एक झूठा मामला तैयार किया जा रहा है। केंद्र की मोदी सरकार आम आदमी पार्टी को हमेशा परेशान करने में लगी रहती है। इसी कड़ी में यह एक और प्रयास है। इसके अलावा और कुछ नहीं है।

उधर, इस मुद्दे पर ''आप'' की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि आरोप लगाए गए हैं कि केंद्र सरकार की नवरत्न पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग की भारतीय इलेक्ट्रौनिक्स

लिमिटेड (बीईएल) ने आम आदमी पार्टी की दिल्ली सरकार को 7 करोड़ रुपए की रिश्वत दी, ताकि उनकी 16 करोड़ रुपये का जुर्माना माफ कर दी जा सके। यह कितना हास्यास्पद आरोप है। क्या केंद्र सरकार 16 करोड़ रुपए का जुर्माना लगने पर इसे माफ करवाने के लिए कोर्ट नहीं जा सकती थी। 16 करोड़ का जुर्माना माफ करवाने के लिए उन्होंने दिल्ली सरकार को सात करोड़ रुपए की रिश्वत दी।

प्रियंका कक्कड़ ने पूछा कि केंद्र सरकार से दिल्ली सरकार को किसने यह रिश्वत दी है? दरअसल, यह भाजपा का हताशा भरा प्रयास है। आज तक इन्होंने हमारे खिलाफ कितनी कार्रवाई और जांचें करवा लीं। लेकिन एक चवन्नी का कहीं कोई प्रमाण नहीं मिला और आगे भी नहीं मिलेगा। क्योंकि कहीं कोई घोटाला हुआ ही नहीं है। भाजपा को अपनी एजेंसियों को उन लोगों के पीछे लगाना चाहिए जो देश का पैसा लेकर भाग गए। पीएम मोदी का वादा था कि ये पैसा वापस लेकर आएंगे। भाजपा को अपनी जांच एजेंसियों का सही इस्तेमाल कर असली अपराधियों को पकड़ना चाहिए। भाजपा को यह पैसे और सार्वजनिक संसाधन की बर्बादी बंद करनी चाहिए।

नव-निर्वाचित विधायकों के लिए आयोजित ओरिएंटेशन कार्यक्रम ने प्रदान की संसदीय प्रक्रियाओं की महत्वपूर्ण जानकारी

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने आज 'वर्ष के सर्वश्रेष्ठ विधायक' पुरस्कार की घोषणा की। यह प्रतिष्ठित वार्षिक पुरस्कार उत्कृष्ट विधायी प्रदर्शन को मान्यता देने और प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया है। इसके लिए मुख्य मानदंडों में संसदीय बहस में उत्कृष्ट योगदान, सदन में उपस्थिति रिकॉर्ड, तथा सदन में अनुशासन और मर्यादा बनाए रखना शामिल है। इस अवसर पर विधानसभा के डिप्टी स्पीकर मोहन सिंह बिस्ट भी मौजूद थे1

गुप्ता ने आगे कहा, "यह पुरस्कार विधायकों को संसदीय मर्यादा के उच्चतम मानकों को बनाए रखने और सार्थक विधायी चर्चाओं में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा। यह दिल्ली विधानसभा को एक

'आदर्श विधानसभा' बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो लोकतांत्रिक शासन में नए मानदंड स्थापित करेगा।" इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष ने विधायकों को स्मृति-चिह्न भी प्रदान किए1

दो दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन संसदीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (PRIDE) द्वारा किया गया, जिसमें नव-निर्वाचित विधायकों को महत्वपूर्ण संसदीय ज्ञान प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में संवैधानिक प्रावधानों, कार्य संचालन नियमों, प्रश्नकाल प्रक्रियाओं, विधायी प्रस्तावों और नीति निर्माण रूपरेखा पर विस्तृत चर्चा की गई। विशेषज्ञों द्वारा संचालित व्याख्यान, संवाद और इंटरैक्टिव सत्रों ने सुशासन और विधायी प्रक्रियाओं पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की।

कार्यक्रम की सफलता पर संतोष व्यक्त करते हुए, गुप्ता ने विधानसभा की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए इस तरह की प्रशिक्षण पहलों की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "इन व्यापक प्रशिक्षण सत्रों से हमारे विधायकों को आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में मदद मिलेगी, जिससे वे जनता की अधिक प्रभावी सेवा कर सकें।"

दिल्ली विधानसभा लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुदृढ़ करने और अपने विधायकों की क्षमता निर्माण के लिए निरंतर प्रयासरत है, जिससे राष्ट्रीय राजधानी में सुशासन और जवाबदेही सुनिश्चित हो सके।

कहानी कहने की परंपरा: दादी-नानी की गोद से वैश्विक मंच तक

20 मार्च : विश्व किस्सागोई दिवस

[हर दिल में बसती है एक कहानी : सुनो, कहो और जियो]

जब शब्द नृत्य करते हैं, भावनाएँ जागती हैं, और समय की धारा में एक जादुई चित्र उभरता है—तब जन्म लेती है एक कहानी। हर साल 20 मार्च को मनाया जाने वाला विश्व किस्सागोई दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि उस अनमोल परंपरा का उत्सव है जो मानव सभ्यता की नींव में बसी है। कहानियाँ सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं होतीं, वे समय की नदी में बहती जादुई लहरें हैं, जो सुनने वाले को एक अनदेखे सफर पर ले जाती हैं और कहने वाले के मन को अभिव्यक्ति का आकाश देती हैं। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हमारा वजूद, हमारी पहचान और हमारा इतिहास—सब कुछ कहानियों के रंगीन धागों से बुना गया है। चाहे वह दादी-नानी की गोद में सुनी लोककथाएँ हों, किताबों में दर्ज ऐतिहासिक गाथाएँ हों, या आज के डिजिटल मंचों पर वायरल होती कहानियाँ—हर कथा में जीवन को समझने और उसे नई नजर से देखने की शक्ति छिपी है।

विश्व किस्सागोई दिवस एक ऐसा अनुपम उत्सव है, जो कहानियों के अलौकिक आकर्षण को केंद्र में लाता है और मानव सभ्यता की अनमोल विरासत को संजोते हुए सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बनता है। इसकी नींव 1991 में स्वीडन में पड़ी, जब इसे ₹राष्ट्रीय किस्सागोई दिवस₹ के रूप में मनाया गया; किंतु 2001 में यह ₹विश्व किस्सागोई दिवस₹ के रूप में वैश्विक मंच पर स्थापित हो गया। 2002 में स्कैंडिनेविया से आगे बढ़ते हुए, 2005 तक यह 25 देशों में अपनी पहचान बना चुका था। यह दिन मौखिक कथाओं और लोकसाहित्य की असीम शक्ति का उत्सव है, जहां हर साल एक नई थीम—2025 में ₹गहरा पानी₹—कथाकारों को प्रेरित करती है। इस थीम के अंतर्गत वे संकट की घड़ियों, जल के रहस्यमयी संसार या सागर की अथाह गहराइयों से कथाएं गढ़ते हैं। 20 मार्च को ये कथावाचक अपनी सम्मोहक कहानियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते हैं—ये कथाएं अतीत को जीवंत करती हैं, नैतिकता की ज्योति प्रज्वलित करती हैं और भविष्य के लिए प्रेरणा का आलोक फैलाती हैं। यह आयोजन केवल कला का प्रदर्शन नहीं, बल्कि मानव रचनात्मकता और वैश्विक सामंजस्य का एक प्रदीप्त प्रतीक है।

कहानी कहना मानवता की सबसे पुरानी कला है। जब हमारे पूर्वज गुफाओं में आग के चारों ओर बैठते थे, तब भी वे अपने अनुभवों को कहानियों में ढालते थे। उन कहानियों ने न केवल उनका मनोरंजन किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को जीवन के सबक, नैतिकता और साहस की प्रेरणा दी। आज भी यह सिलसिला जारी है। एक माँ अपने बच्चे को सोते वक्त जो कहानी सुनाती है, वह सिर्फ नींद लाने का जरिया नहीं होती—वह उसके कोमल मन में सपनों के बीज बोती है। एक लेखक जो अपनी किताब में समाज की सच्चाई उकेरता है, वह पाठक के विचारों को झकझोर देता है। कहानी केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि एक दर्पण है जो हमें हमारा अतीत दिखाता है, एक खिड़की है जो भविष्य की झलक देता है, और एक पुल है जो हमें एक-दूसरे से जोड़ता है।

डिजिटल युग ने कहानियों को नए पंख दिए हैं। पहले जो किस्से गाँव के चबूतरे पर या अलाव की गर्माहट में सुनाए जाते थे, वे आज पॉडकास्ट की आवाज में, वेब सीरीज़ के दृश्यों में, और सोशल मीडिया के छोटे-छोटे वीडियो में जीवंत हो उठे हैं। टेक्नोलॉजी ने कहानी कहने के तरीके को बदला है, लेकिन उसकी आत्मा को नहीं छुआ। आज भी एक अच्छी कहानी सुनते ही हमारा मन उसमें खो जाता है, हमारी आँखों के सामने चित्र उभरने लगते हैं, और हमारा दिल भावनाओं की लहरों में डूब जाता है। चाहे वह नेटफ्लिक्स पर कोई सीरीज़ हो या यूट्यूब पर कोई प्रेरक वीडियो—कहानी की वह ताकत अब भी बरकरार है जो हमें हँसाती है, रुलाती है, और सोचने पर मजबूर करती है।

इतिहास गवाह है कि कहानियों ने समाज को बदलने में अहम भूमिका निभाई है। महाभारत और रामायण जैसी पौराणिक कथाएँ हमें धर्म और कर्म का पाठ पढ़ाती हैं, तो मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ हमें गरीबी और अन्याय की कड़वी सच्चाई से रूबरू कराती हैं। भगत सिंह की डायरी के पन्ने और गांधी जी की आत्मकथा हमें आजादी के संघर्ष की कहानी सुनाते हैं, जो आज भी युवाओं में जोश भर देती हैं। एक कहानी नायक को जन्म दे सकती है, एक क्रांति को प्रज्वलित कर सकती है, और एक समाज को नई दिशा दे सकती है। जब मार्टिन लूथर किंग ने अपने सपनों की कहानी सुनाई, तो उसने नस्लवाद के खिलाफ एक आंदोलन खड़ा कर दिया। जब मलाला ने अपनी कलम से अपनी कहानी लिखी, तो उसने शिक्षा के लिए लड़ने की प्रेरणा दी। कहानियाँ सिर्फ शब्द नहीं, बल्कि बदलाव का हथियार हैं।

20 मार्च का यह दिन हमें न केवल कहानियाँ सुनने और सुनाने की प्रेरणा देता है, बल्कि यह भी याद दिलाता है कि हर इंसान के भीतर एक अनकही कहानी छिपी है। आपकी जिंदगी का वह छोटा-सा किस्सा, जो आपको हँसाता है, या वह अनुभव, जो आपको रुला देता है—वह भी एक कहानी है। इस दिन हम यह संकल्प ले सकते हैं कि हम अपनी कहानियों को दुनिया के सामने लाएँगे। एक बच्चे को लोककथा सुनाएँगे, एक दोस्त के साथ अपने जीवन का कोई यादगार पल साझा करेंगे, या अपनी संस्कृति की गाथाओं को अगली पीढ़ी तक पहुँचाएँगे। कहानी कहना सिर्फ कला नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है—खुद को और दूसरों को जोड़ने की, प्रेरित करने की, और दुनिया को बेहतर बनाने की।

कहानी सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं, यह अनुभवों का उजाला है—एक रोशनी, जो न केवल हमारे भीतर के अंधेरे को मिटाती है, बल्कि दूसरों के जीवन में भी उजाला भरती है। जब हम कोई कथा कहते या सुनते हैं, तो यह केवल संवाद नहीं, बल्कि एक यात्रा का आरंभ होता है—एक ऐसी यात्रा, जो समय की सीमाओं को लाँघकर अनंत तक पहुँचती है। 20 मार्च, विश्व किस्सागोई दिवस, केवल एक तिथि नहीं, बल्कि एक अवसर है अपनी कहानियों को मुक्त करने का, अपनी आवाज़ को नई ऊँचाइयाँ देने का। आपकी कहानी, मेरी कहानी, हमारी कहानी—ये वे धागे हैं जो दुनिया को जोड़ते हैं, इसे संवेदनाओं की डोर में बाँधते हैं। तो आज, अपने शब्दों को पंख दें, अपने किस्सों को खुलकर बयां करें और उस जादू को महसूस करें, जो हर कहानी के भीतर छिपा होता है।

हर दिल में बस्ती है एक कहानी अधूरी,
सुनो, कहो, बनाओ इसे दुनिया की सबसे प्यारी सौगात पूरी,
जहां हर सपना सच हो, हर आंसू मुस्कान बन जाए,
और ये अधूरी कहानी, प्यार की अनमोल निशानी कहलाए।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

अंग्रेजों के घुटने टेकने की खुशी का परिणाम कानपुर का गंगामेला आज

– साथियों को मुक्त करा स्वतंत्रता सेनानियों ने होली के दिन ही फहराया था कानपुर में तिरंगा

सुनील बाजपेई

कानपुर। आज यहां गुरुवार को गंगा मेला लगेगा। और इसी के साथ आज से ही होली यानी रंगोत्सव का समापन हो जाएगा।

साथ ही यह भी अवगत कराते चलें कि यहां सरसैयाघाट पर लगने वाला एतिहासिक गंगा मेला क्रांतिबीरों के सामने अंग्रेजों द्वारा घुटने टेकने की खुशी का ही परिणाम है। यह क्रांतिकारियों की ही स्मृति में हर साल लगाया जाता है। जहां तक आज गुरुवार को लगने वाले इस मेले के अनुराधा नक्षत्र में ही आयोजित किये जाने का सवाल है।

दरअसल यह भी क्रांति कारियों की अंग्रेजों की दमन नीति पर विजय हासिल करने के समय की बात है। उस दिन अनुराधा नक्षत्र ही था, जब शहर के बंदी क्रांतिकारी न केवल मुक्त हुए थे, बल्कि उन्होंने उसी दिन तिरंगा भी फहराया था। उस दिन पूरे शहर में पूरे दिन होली मनाई गई थी और मेले का भी आयोजन किया गया था। तब से लेकर आजतक इस गंगा मेला का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया जाता है।

देश की स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आंदोलन अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन का यह दौर 1942 का था। जब स्वतंत्रता सेनानियों ने होली के दिन पर तिरंगा फहराया था।

ऐसा करने पर ही अंग्रेजों ने चंद सेठ , हामिद खान , झंडा ऊंचा रहे हमारा के गीतकार श्याम लाल गुप्ता ,अमरीक सिंह ,रघुवर दयाल भट्ट , बाल किशन शर्मा , पीताम्बर लाल समेत अनेक क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया था।

इससे पूरा शहर बहुत गुस्से में था। लोग होली खेलना बंद कर सभी स्वतंत्रता सेनानियों की रिहाई की मांग करने लगे थे। इस भारी विरोध को देखकर ब्रिटिश शासन को उन्हें रिहा करना पड़ा था। उस दिन अनुराधा नक्षत्र ही था । इसकी खुशी में ही तब से लेकर आजतक पूरे दिन होली त्योहार मनाया जाता है और शाम को पवित्र गंगा के तट सरसैया घाट पर मेले का आयोजन किया जाता है।

गोंडी विद्यालय बंद: आदिवासी संस्कृति के अस्तित्व को ख़तरा

प्रियंका सौरभ

महाराष्ट्र में गोंडी-माध्यम विद्यालय का बंद होना आदिवासी समुदाय की भाषाई और सांस्कृतिक विरासत के लिए एक चिंताजनक प्रवृत्ति का संकेतहै। मध्य भारत में 2 मिलियन से अधिक व्यक्तियों द्वारा बोली जाने वाली गोंडी, गोंड जनजाति की पहचान के लिए आवश्यक है। गोंडी-माध्यम शिक्षा में कमी से न केवल भाषा के संरक्षण को ख़तरा है, बल्कि समुदाय की सांस्कृतिक निरंतरता और आत्मनिर्णय को भी ख़तरा है। दुनिया भर के आदिवासी समुदायों में समृद्ध भाषाई और सांस्कृतिक विरासत है जो पीढ़ियों से चली आ रही है। ये भाषाएँ, परंपराएँ और ज्ञान प्रणालियाँ अलग-अलग दृष्टिकोणों को दर्शाती हैं और मानव सभ्यता की विविधता को बढ़ाती हैं। दुर्भाग्य से, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण और बाहरी प्रभाव इन परंपराओं को तेजी से खतरे में डाल रहे हैं, जिससे उनका संरक्षण महत्त्वपूर्ण हो गया है। गोंडी-माध्यम विद्यालयों का बंद होना केवल एक शैक्षिक चिंता से कहीं अधिक है; यह गोंड समुदाय के सांस्कृतिक अस्तित्व को खतरे में डालता है। ऐसे में आने वाली पीढ़ियाँ ख़ुद को अपनी भाषाई विरासत से अलग पा सकती हैं, जिसके परिणामस्वरूप अपरिवर्तनीय सांस्कृतिक क्षति हो सकती है।

महाराष्ट्र में गोंडी-माध्यम विद्यालय का बंद होना भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए संवैधानिक अधिकारों को लागू करने में कठिनाइयों को उजागर करता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 350A के अनुसार राज्यों को भाषाई अल्पसंख्यक बच्चों की मूल भाषा में प्राथमिक शिक्षा प्रदान करनी होती है, लेकिन विभिन्न प्रशासनिक, वित्तीय और सामाजिक-राजनीतिक बाधाएँ अक्सर इस लक्ष्य को बाधित करती हैं। जनजातीय भाषाएँ और संस्कृतियाँ पहचान, इतिहास और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों से निकटता से जुड़ी हुई हैं। किसी भाषा के ख़त्म होने का मतलब है दुनिया के बारे में एक अलग दृष्टिकोण का गायब होना। वैश्वीकरण, जबरन आत्मसात करने और अपर्याप्त औपचारिक मान्यता के कारण कई जनजातीय भाषाएँ खतरे में हैं। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक विरासत-जिसमें अनुष्ठान, कला, लोकगीत और पारंपरिक प्रथाएँ शामिल हैं, को पलायन, वनों की कटाई और आधुनिकीकरण से ख़तरा है। जबकि भारतीय संविधान अनुच्छेद 350A के माध्यम से भाषाई अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करता है, जो मातृभाषा शिक्षा को अनिवार्य बनाता है, मैसूर में केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान की रिपोर्ट है कि पिछले 50 वर्षों में 220 से अधिक भाषाएँ लुप्त हो गई हैं, जिनमें से कई स्वदेशी भाषाओं को शैक्षिक समर्थन की कमी है।

गोंडी-माध्यम विद्यालयों का बंद होना भाषाई विरासत को संरक्षित करने के लिए चल रहे संघर्ष को उजागर करता है। अनुच्छेद 29 अल्पसंख्यकों को अपनी भाषा, लिपि और संस्कृति को बनाए रखने का अधिकार देता है, जो जबरन आत्मसात करने से रोकने में मदद करता है और शिक्षा और शासन दोनों में सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देता है। सर्वोच्च न्यायालय ने टी.एम.ए. पाई फाउंडेशन मामले में भाषाई अल्पसंख्यकों के अधिकारों को सुदृढ़ किया, शैक्षिक संस्थानों के प्रबंधन में उनकी स्वतंत्रता की पुष्टि की। अनुच्छेद 350A के तहत राज्यों को बच्चों की मूल भाषाओं में प्राथमिक शिक्षा का समर्थन करने की आवश्यकता होती है, जिससे भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए सीखने के परिणामों में सुधार होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुभाषी शिक्षा की वकालत करती है, जिसमें बचपन में मातृभाषा आधारित शिक्षा पर ज़ोर दिया जाता है। आठवीं अनुसूची 22 भाषाओं को मान्यता देती है, जिससे भाषाई विकास के लिए राज्य का समर्थन सुनिश्चित होता है; हालाँकि, गोंडी और भीली जैसी महत्त्वपूर्ण आदिवासी भाषाएँ उल्लेखनीय रूप से अनुपस्थित हैं। जबकि लगभग 25, 000 लोगों द्वारा बोली जाने वाली संस्कृत को आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है, लगभग 2.9 मिलियन बोलने वालों वाली गोंडी को शामिल नहीं किया गया है, जो व्यवस्थित बहिष्कार के पैटर्न को दर्शाता है। आदिवासी क्षेत्रों में स्वायत्त शासन और सांस्कृतिक संरक्षण की आवश्यकता है, जिसमें शिक्षा और भाषा नीतियों के प्रबंधन का अधिकार भी शामिल है। हालाँकि पूर्वोत्तर में स्वायत्त ज़िला परिषदें आदिवासी भाषाओं का समर्थन करती हैं, लेकिन मध्य भारत में समान सुरक्षा का अभाव है।

1996 का ₹पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम₹ आदिवासी स्वशासन के महत्त्व को स्वीकार करता है, ग्राम सभाओं को सांस्कृतिक और शैक्षिक मुद्दों के बारे में निर्णय लेने का अधिकार देता है, जिससे संवैधानिक सुरक्षा मज़बूत होती है। हालाँकि, मोहगाँव ग्राम पंचायत द्वारा गोंडी-माध्यम विद्यालय स्थापित करने के प्रस्ताव को नौकरशाही नियमों के कारण खारिज कर दिया गया था। गोंडी-माध्यम विद्यालय को बंद करना इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे अनम्य प्रशासनिक प्रथाएँ आदिवासी स्वायत्तता को कमज़ोर कर सकती हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी मूल भाषा में शिक्षा की कमी होती है। हालाँकि शिक्षा के अधिकार के दिशा-निर्देशों का उपयोग स्कूल को बंद करने को सही ठहराने के लिए किया गया था, लेकिन संवैधानिक प्रावधान हैं जो स्थानीय शासन का समर्थन करते हैं। आदिवासी भाषाओं को अक्सर संस्थानों द्वारा अनदेखा किया जाता है, जो संस्कृत और हिन्दी जैसी भाषाओं को दिए जाने वाले समर्थन के विपरीत है, जो सामाजिक-राजनीतिक हाशिए के पैटर्न को दर्शाता है। गोंडी-माध्यम की पाठ्यपुस्तकों के लिए न्यूनतम धन उपलब्ध है, जबकि संस्कृत को राज्य का काफ़ी समर्थन प्राप्त है। आठवीं अनुसूची से आदिवासी भाषाओं को बाहर करने से उनका विकास बाधित होता है, जिससे उनके लुप्त होने का ख़तरा है। जबकि ₹राष्ट्रीय शिक्षा नीति₹ 2020 संस्कृत संस्थानों को बढ़ावा देता है, आदिवासी भाषाओं के लिए कोई समान ढांचा नहीं है। इसके अतिरिक्त, आदिवासी भाषाएँ औपचारिक नौकरी के अवसरों से जुड़ी नहीं हैं, जो शिक्षा में उनके महत्त्व को कम करती हैं। नौकरी की आवश्यकताओं में आमतौर पर हिन्दी या अंग्रेज़ी को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे आदिवासी भाषाओं में शिक्षा कम आकर्षक हो जाती है।

ऐसी स्कूल बंद होने से आदिवासी पहचान के लिए एक बड़ा जोखिम पैदा होता है, जो मौखिक परंपराओं और सांस्कृतिक साझाकरण में गहराई से निहित है, जिसके परिणामस्वरूप भाषा का संभावित नुक़सान हो सकता है। शहरीकरण और वनों की कटाई ने पहले ही आदिवासी कहानी कहने की प्रथा को कम कर दिया है और स्कूलों के बंद होने से यह गिरावट और तेज़ हो गई है। हालाँकि ₹पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम₹ स्वायत्तता की एक हद तक सुविधा प्रदान करता है, लेकिन स्थानीय निर्णय, जैसे कि मोहगाँव द्वारा अपने स्कूल के बारे में लिए गए निर्णय, अक्सर अनदेखा कर दिए जाते हैं, जो जमीनी स्तर पर शासन को कमजोर करता है। कानूनी समर्थन के साथ भी, भाषा और शिक्षा से सम्बंधित आदिवासी निर्णयों को अक्सर ज़िला प्रशासन के विकल्पों द्वारा दरकिनार कर दिया जाता है। अतिरिक्त भाषाओं को मान्यता देने की प्रक्रिया राजनीति में फंसी हुई है और धीमी गति से आगे बढ़ रही है, जिससे आदिवासी भाषाओं की मान्यता में बाधा आ रही है। उदाहरण के लिए, बोडो को व्यापक वकालत के बाद 2003 में आधिकारिक तौर पर मान्यता दी गई थी, फिर भी बड़ी संख्या में बोलने वालों के बावजूद गोंडी को मान्यता नहीं मिली है। जबकि न्यायालयों ने भाषाई अल्पसंख्यकों के अधिकारों की पुष्टि की है, उन्होंने आदिवासी भाषाओं के संरक्षण को प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया है। टी.एम.ए. पै मामले ने शिक्षा में अल्पसंख्यक अधिकारों को मज़बूत किया, लेकिन आदिवासी भाषाओं पर केंद्रित स्कूलों की उपेक्षा जारी है। सरकारी पहल का उद्देश्य बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देना है, लेकिन आदिवासी भाषाओं के लिए मज़बूत कार्यान्वयन का अभाव है। ₹भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ₹ और आदिवासी सांस्कृतिक संवर्धन जैसे कार्यक्रम आदिवासी संस्कृति की रक्षा के लिए मौजूद हैं, लेकिन वे अक्सर असंगत होते हैं और शिक्षा को प्रभावी ढंग से शामिल करने में विफल होते हैं।

"भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ₹ आदिवासी शिल्प का समर्थन करता है, लेकिन इसमें भाषा संरक्षण के लिए जनादेश का अभाव है, जो व्यापक विकास में बाधा डालता है। जबकि ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) गोंडी प्रसारण जैसी पहल मौजूद हैं, उनकी पहुँच सीमित है। बस्तर में गोंडी रेडियो कार्यक्रम भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करते हैं, लेकिन शैक्षिक नीतियाँ इन प्रयासों का समर्थन नहीं करती हैं। आठवीं अनुसूची में गोंडी और अन्य महत्त्वपूर्ण आदिवासी भाषाओं को मान्यता देना नीति-संचालित समर्थन को बढ़ावा देगा। शैक्षिक निर्णयों में स्थानीय शासन को बढ़ाने से गोंडी-माध्यम विद्यालयों जैसी पहलों में नौकरशाही के हस्तक्षेप को रोकने में मदद मिल सकती है। आदिवासी भाषा शिक्षा के लिए समर्पित संसाधन, शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण और डिजिटल उपकरण प्रदान करने से सीखने की कमियों को दूर करने में मदद मिलेगी। हालाँकि संवैधानिक सुरक्षा और सरकारी कार्यक्रम आदिवासी समुदायों की भाषाई और सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए एक कानूनी आधार बनाते हैं, लेकिन कार्यान्वयन में चुनौतियाँ, अपर्याप्त संसाधन और नीतिगत उपेक्षा अक्सर उनके प्रभाव को कमज़ोर कर देती हैं। गोंडी-माध्यम विद्यालयों का बंद होना मज़बूत संस्थागत समर्थन, समुदाय-नेतृत्व वाली पहल और बेहतर शैक्षिक बुनियादी ढाँचे की तत्काल आवश्यकता को उजागर करता है। युवा पीढ़ी अक्सर बेहतर नौकरी की संभावनाओं के लिए प्रमुख भाषाओं की ओर आकर्षित होती है और कई आदिवासी भाषाएँ स्कूली पाठ्यक्रमों से अपरिचित या अनुपस्थित रहती हैं।

सांस्कृतिक विरासत भूमि और प्राकृतिक पर्यावरण से जटिल रूप से जुड़ी हुई है। वनों की कटाई और विस्थापन के खतरे दोनों को खतरे में डालते हैं। कई आदिवासी समुदाय डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म तक पहुँचने के लिए संघर्ष करते हैं, जिससे उनकी विरासत को ऑनलाइन प्रदर्शित करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। स्कूलों के लिए आदिवासी भाषाओं को अपने पाठ्यक्रम में शामिल करना आवश्यक है। मोबाइल ऐप, यूट्यूब ट्यूटोरियल और पॉडकास्ट का उपयोग करके सीखने को आकर्षक और सुलभ बनाया जा सकता है। बुजुर्गों को मौखिक परंपराओं और कहानियों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। स्थानीय और राष्ट्रीय त्योहारों और समारोहों को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाना चाहिए। पारंपरिक ज्ञान को साझा करना, औषधीय पौधों, खेती के तरीकों और कला रूपों का दस्तावेजीकरण करना स्वदेशी ज्ञान को संरक्षित करने में मदद कर सकता है। सरकारों को पवित्र स्थलों और स्वदेशी लोगों के बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा करने की आवश्यकता है। आदिवासी भाषाओं में रेडियो स्टेशन, समाचार पत्र और सोशल मीडिया का उपयोग जागरूकता बढ़ा सकता है। हस्तशिल्प और पारंपरिक कला का विपणन ई-कॉमर्स और पर्यटन के माध्यम से किया जा सकता है। संरक्षण प्रयासों को निधि देने के लिए गैर सरकारी संगठनों, विश्वविद्यालयों और सरकारों के बीच सहयोग महत्त्वपूर्ण है। गोंडी-माध्यम विद्यालयों के बंद होने से न केवल शैक्षिक चुनौती है, बल्कि गोंड समुदाय के सांस्कृतिक अस्तित्व के लिए भी एक बड़ा ख़तरा है। शीघ्र कार्यवाही के बिना, भावी पीढ़ियों को अपनी भाषाई विरासत खोने का ख़तरा होगा, जिससे अपरिवर्तनीय सांस्कृतिक पतन हो सकता है।

ट्रंप पुतिन बातचीत- रूस यूक्रेन युद्ध के 30 दिन के संघर्ष विराम की संभावना- एक हफ्ते की मशक्कत का नतीजा

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर चौथे साल में प्रवेश कर चर्चा का मुद्दा बने व तीसरे विश्व युद्ध की ओर बढ़ती परिस्थितियों के बीच, पिछले एक सप्ताह से युद्ध रोकने के लिए तेजी से चल रही बातचीत तथा अन्य प्रिक्रिया की मशक्कत के बीच दिनांक 18 मार्च 2025 को ट्रंप-पुतिन की टेलीफोन पर करीब 90 मिनट की बातचीत में 30 दिन के युद्ध विराम के समझौते पर बात बनने की संभावना व्यक्ति की जा रही है जिसमें रूस व यूक्रेन दोनों देशों की कुछ शर्तों का आपसी तालमेल व बीच का रास्ता निकालते हुए युद्ध विराम का रोडमैप तेजी से तैयार करने के लिए अमेरिका लगा हुआ है, जिसमें करीब करीब सफ़लता प्राप्त की जा चुकी है,अब मामला शर्तों में बीच का रास्ता निकालना और आपसी तालमेल से समझौता शीघ्र होने कीसंभावना से इनकार नहीं किया जा सकता, आशा है युद्ध विराम के लिए ट्रंप- पुतिन की 90 मिनट की बातचीत रंग लाने की संभावना व्यक्ति की जा रही है,क्योंकि अब ट्रंप पुतिन की इस 90 मिनट की बातचीत के नए आयाम का आगाज़ शीघ्र सुनने को मिलेगा इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, ट्रंप पुतिन बातचीत, रूस- यूक्रेन युद्ध के 30 दिनों के संघर्ष विराम की संभावना, एक हफ्ते की मशक्कत का नतीजा।

साथियों बात अगर हम रूस यूक्रेन युद्ध विराम शीघ्र होने की करें तो,रूस-यूक्रेन के बीच शांति को लेकर अमेरिका के राष्ट्रपति और रूस के राष्ट्रपति के बीच मंगलवार को करीब 90 मिनट तक फोन पर बातचीत हुई। इस बातचीत के दौरान दोनों नेताओं ने यूक्रेन में चल रहे युद्ध को रोकने के लिए 30 दिनों के अस्थायी युद्धविराम पर सहमति जताई। हालांकि, पुतिन ने ट्रंप से यह भी कहा कि अगर अमेरिका और उसके सहयोगी देश यूक्रेन को सैन्य और खुफिया सहायता देना बंद नहीं करेंगे, तो संघर्ष पूरी तरह नहीं रुकेगा ।गौरतलब है कि यह ट्रंप और पुतिन के बीच जनवरी के बाद दूसरी बातचीत थी। इससे पहले फरवरी में दोनों नेताओं ने फोन पर चर्चा की थी। उसके बाद दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संपर्क बढ़े हैं। ट्रंप ने बातचीत से पहले सोशल मीडिया पर बताया था कि अंतिम समझौते के कई बिंदुओं पर सहमति बन गई है, लेकिन अब भी बहुत कुछ तय होना बाकी है। उन्होंने संकेत दिए कि दोनों पक्ष संपत्तियों के बंटवारे पर भी चर्चा कर रहे हैं, जिससे यूक्रेन और यूरोपीय देश चिंतित हैं ।वहीं यूक्रेन और उसके सहयोगी यूरोपीय देशों को आशंका है कि रूस इस समझौते को तोड़ सकता है और भविष्य में फिर से हमला कर सकता है। ट्रंप के तेजी से युद्ध समाप्त करने के वादे को देखते हुए यूरोपीय देश भी चिंतित हैं कि रूस इस स्थिति का फायदा उठाकर अतिरिक्त शर्तें न थोप दे।...रूस-यूक्रेन युद्ध को रोकने के लिए प्रयास कर रहे अमेरिकी राष्ट्रपति रूसी राष्ट्रपति से लगातार बातचीत कर रहे हैं। इस दौरान युद्ध विराम समझौते के साथ-साथ अन्य मुद्दों पर भी चर्चा की गई. इस बात की जानकारी व्हाइट हाउस के डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ ने दी ।बीते दिन सोमवार (17 मार्च, 2025) को ट्रंप ने कहा था,हम देखेंगे कि क्या हम युद्ध विराम और शांति स्थापित कर सकतेहैं। मुझे लगता है कि हम ऐसा करने में सक्षम होंगे,वहीं, पुतिन ने पिछले सप्ताह अमेरिका के युद्ध विराम प्रस्ताव के लिए समर्थन व्यक्त किया था, लेकिन उन्होंने संकेत दिया कि रूस की ओर से अपने आक्रमण को रोकने के लिए सहमत होने से पहले कई शर्तें पूरी होनी चाहिए। क्रेमलिन ने क्रीमिया और पूर्वी यूक्रेन के बड़े हिस्सों सहित कब्ज़ा किए गए इलाकों पर नियंत्रण बनाए रखने पर जोर दिया है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की इस बातचीत से पूरी तरह आश्वस्त नहीं हैं, उनका मानना है कि पुतिन शांति के लिए तैयार नहीं होंगे, क्योंकि रूसी सेना लगातार यूक्रेन पर हमले कर रही है। पुतिन के साथ फोन पर बातचीत से पहले, डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि वे पुतिन के साथ युद्ध के दौरान कब्जे में लिए गए भूमि और बिजली संयंत्रों पर चर्चा करेंगे ।यूक्रेन के विदेश मंत्री ने मंगलवार को कहा था कि यूक्रेन रूस के साथ विवाद का शांतिपूर्ण समाधान चाहता है, लेकिन वह अपनी क्षेत्रीय अखंडता से समझौता नहीं करेगा, उन्होंने कहा कि यदि अमेरिका और रूस के बीच बातचीत सफल रहती है, तो युद्धविराम के प्रस्ताव पर स्पष्ट स्थिति सामने आ सकती है। उनका कहना था कि वैश्विक स्तर पर दीर्घकालिक और टिकाऊ शांति स्थापित करना एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होगा ।यूक्रेन के विदेश मंत्री ने यह स्पष्ट किया कि यूक्रेन शांति पहल का विरोधी नहीं है, और अमेरिका के 30 दिन के युद्धविराम प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। हालांकि, यूक्रेन ने अपनी क्षेत्रीय अखंडता और सुरक्षा को लेकर कड़ा रुख अपनाया है, और किसी भी समझौते में इनका उल्लंघन नहीं होने दिया जाएगा. अमेरिका और रूस के बीच यह वार्ता रूस-यूक्रेन युद्ध के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हो सकती है। हालांकि, यूक्रेन की अपनी क्षेत्रीय अखंडता को लेकर चिंता बनी हुई है, लेकिन युद्धविराम की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसका परिणाम हम आगे देखेंगे।

साथियों बात अगर हम युद्ध विराम समझौते में रुस की मांगों की करें तो, पुतिन ने कहा है कि वह एक दीर्घकालिक समाधान के पक्षधर हैं जो संघर्ष के मूल कारणों₹ को संबोधित करता हो। पुतिन द्वारा लंबे समय से व्यक्त की गई कुछ मुख्य मांगें इस प्रकार हैं: (1) यूक्रेन को नाटो की सदस्यता नहीं (2) रूस केविरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंध समाप्त करें (3) यूक्रेन और उसके सहयोगी उस क्षेत्र को रूस का हिस्सा मानते हैं जिस पर रूस ने पिछले एक दशक में यूक्रेन से कब्ज़ा करने का दावा किया है। इसमें क्रीमिया प्रायद्वीप शामिल है, जिस पर 2014 में रूस ने कब्ज़ा कर लिया था, और चार अन्य यूक्रेनी क्षेत्र (डोनेट्स्क, लुहांस्क, ज़ापोरिज्जिया और खेरसॉन) शामिल हैं, जिन पर रूस ने 2022 में अपने आक्रमण के बाद से आंशिक रूप से नियंत्रण कर लिया है। (4) यूक्रेन ने अपनी सेना का आकार छोटा किया (5) यूक्रेन ने रूसी नियंत्रण वाले क्षेत्रों से अपने सैनिक वापस बुला लिए हैं ।पुतिन ने यूक्रेन में युद्ध समाप्त करने के लिए ट्रम्प के प्रयासों की प्रशंसा की है और कहा है कि वे अमेरिका के युद्ध विराम प्रस्ताव से सैद्धांतिक रूप से सहमत हैं। फिर भी क्रेमलिन नेता ने यह भी कहा कि उनके पास सवाल हैं और कुछ बारीकियाँ हैं जिनपर किसी समझौते पर पहुँचने से पहले आगे चर्चा की आवश्यकता है। पुतिन ने कहा कि उन्हें इस बात की गारंटी चाहिए कि यूक्रेन लड़ाई में विराम का उपयोग अपनी सेना को फिर से आपूर्ति करने या रूसियों द्वारा पकड़े जाने से बचने के लिए यूक्रेनी लड़ाकों को बाहर निकालने के लिए नहीं करेगा। पुतिन ने सुझाव दिया कि यूक्रेन ने हाल ही में रूसी युद्धक्षेत्र की प्रगति को रोकने के लिए केवल अमेरिकी प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किए थे ।पुतिन ने यह भी पूछा कि इस समझौते की निगरानी कौन करेगा, साथ ही इसकी शर्तों का उल्लंघन करने पर क्या दंड होगा। रूसी अधिकारियों ने नाटो-गठबंधन वाले देशों से शांति सेना की टुकड़ी के विचार को बार-बार खारिज किया है ।पुतिन ने पिछले हफ़्ते व्हाइट हाउस के दूत से मॉस्को में बंद दरवाज़ों के पीछे इस प्रस्ताव पर चर्चा की थी। क्रेमलिन के प्रवक्ता के अनुसार, पुतिन ने उनको को सीधे ट्रंप तक पहुंचाने के लिए संकेत दिए थे । उन्होंने यह नहीं बताया कि वे क्या थे।

साथियों बात अगर हम रूस- यूक्रेन युद्ध में समझौते में यूक्रेन की मांगों की करें तो, यूक्रेन पहले ही 30 दिन के युद्ध विराम पर सहमत हो चुका है, अगर रूस भी इसपर हस्ताक्षर करता है, तो इससे लंबे समय तक चलने वाले शांति समझौते पर चर्चा की जा सकती है। युद्ध विराम में सभी सैन्य गतिविधियों - जमीन, समुद्र और हवा से दागी जाने वाली मिसाइलों, ड्रोन और बमों की समाप्ति शामिल होगी। यूक्रेन कैदियों की अदला-बदली और उन हजारों बच्चों की वापसी चाहता है जिन्हें रूस ने अवैध रूप से बंधक बना लिया है। उक्रेनी राष्ट्रपति के सहयोगी ने कहा कि यूक्रेनवासी युद्ध विराम का समर्थन करते हैं, लेकिन एक और आक्रमण को रोकने के लिए सुरक्षा की गारंटी चाहते हैंलेकिन येरमक ने कहा कि कुछ लाल रेखाएं हैं जिन्हें यूक्रेन पार करने से इंकार कर देगा: वह कभी भी कब्जे वाले क्षेत्रों को रूस का हिस्सा नहीं मानेगा, वह अपनी सेना का आकार कम नहीं करेगा और वह एक तटस्थ राज्य नहीं बनेगा ।रविवार को दिए गए भाषण में ज़ेलेंस्की ने पुतिन पर युद्ध विराम वार्ता को खींचने का आरोप लगाया ताकि रूसी सेना युद्ध के मैदान में आगे बढ़ सके। ज़ेलेंस्की ने रूस पर यूक्रेन और अमेरिका द्वारा समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद से युद्ध का एक और सप्ताह ₹चुराने₹ का आरोप लगाया।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि ट्रंप पुतिन बातचीत- रूस यूक्रेन युद्ध के 30 दिन के संघर्ष विराम की संभावना- एक हफ्ते की मशक्कत का नतीजा, रूस-यूक्रेन वार-द-एन्ड क़ी ओर....रूस यूक्रेन की शर्तों के बीच ट्रंप- पुतिन की युद्ध रोकने की बातचीत क़ी सकारात्मक दूरगामी परिणाम की सराहनीय संभावना।

साधारण हवा या नाइट्रोजन गैस? गर्मियों में टायरों के लिए कौन है बेस्ट

गर्मियों में टायरों के लिए कौन-सी हवा का इस्तेमाल करना चाहिए यह एक जरूरी सवाल है जो बहुत से वाहन मालिकों के दिमाग में आता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि आपको अपनी गाड़ी के टायर में साधारण हवा या नाइट्रोजन गैस में से किसे भरवाना चाहिए। दोनों में से किसे भरवाना सबसे बेहतर रहेगा।

नईदिल्ली। गर्मियों का मौसम आते ही तेज धूप, गर्म हवाएं चलने के साथ ही सड़कें भी गर्म हो जाती है। सड़कों के गर्म होना वाहनों के लिए कई चुनौतियां आती है। इनमें से एक चुनौती है टायरों का सही से रखरखाव करना। टायरों में हवा का सही दबाव बनाए रखने से न केवल गाड़ी की परफॉर्मेंस बनी रहती है, बल्कि ज्यादा माइलेज मिलने के साथ ही आपकी सुरक्षा भी बनी रहती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि गर्मी के मौसम में टायरों के लिए साधारण हवा और नाइट्रोजन गैस में से कौन बेहतर होती है और दोनों में से कौन सा ऑप्शन आपके लिए सबसे अच्छा हो सकता है।

साधारण हवा

इसे आमतौर पर टायरों में भरते हैं। इसमें करीब 78% नाइट्रोजन, 21% ऑक्सीजन और 1% दूसरी गैसें होती है। यह आसानी से हर जगह उपलब्ध हो जाती है और बहुत कम कीमत में टायरों में भरी जा सकती है। गर्मी में इसका टायरों में इस्तेमाल करने पर कुछ नुकसान देखने के लिए मिल सकते हैं। दरअसल, गर्मी के कारण टायरों के अंदर तापमान बढ़ता है, जिससे हवा का दबाव भी बढ़ सकता है। जिसका सीधा असर टायरों पर पड़ता है और टायर को नुकसान भी पहुच सकता है। वहीं, नहीं के कारण टायर के रिम में जंग लगने की संभावना भी रहती है।

नाइट्रोजन गैस

पिछले कुछ वर्षों से इसे टायरों के लिए बेहतर ऑप्शन के रूप में बताया जा रहा है। इसमें नमी और ऑक्सीजन की मात्रा न के बराबर होती है। गर्मियों में इसका इस्तेमाल करने का यह फायदा मिलता है कि यह तापमान के उतार-चढ़ाव के साथ फैलती या सिकुड़ती है। इससे टायरों में दबाव स्थिर रहता है, जिससे टायर की उम्र बढ़ती है और ड्राइविंग सुरक्षित रहती है। नाइट्रोजन रबर को ऑक्सीजन से बचाने का काम करने के साथ ही रिम पर जंग लगने की समस्या को भी कम करती है। हालांकि, इसे भरवाने की सुविधा हर जगह पर नहीं होती है और इसकी कीमत भी साधारण हवा से ज्यादा होती है।

गर्मियों के लिए कौन बेहतर?

गर्मियों में टायरों का परफॉर्मेंस कई चीजों पर निर्भर करता है, जिसमें मौसम की तीव्रता, सड़क की स्थिति और ड्राइविंग आदतें शामिल है। साधारण हवा रोजमर्रा इस्तेमाल के लिए पर्याप्त है, खासकर उन लोगों के लिए जो नियमित रूप से टायरों के दबाव की जांच करते हैं। अगर आप लंबी दूरी का सफर करते हैं या गर्मी में टायरों की सुरक्षा और स्थिरता को प्राथमिकता देना चाहते हैं, तो नाइट्रोजन गैस आपके लिए एक बेहतर ऑप्शन हो सकता है। यह फ्यूल की खपत को कम कर सकता है, क्योंकि एयर प्रेशर स्थिर रहता है, तो घर्षण सही रहता है।

टाटा ला रही क्यूट सी इलेक्ट्रिक कार, सेल्फ-ड्राइविंग समेत मिलेंगे एडवांस फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

टाटा मोटर्स ने हाल ही में Tata Yu ऑटोनोमस सेल्फ ड्राइविंग व्हीकल को पेटेंट करवाया है। यह एक सेल्फ ड्राइविंग वाली गाड़ी होने वाली है। जिससे सामान डिलीवरी करने से लेकर कैब तक की तरह एक जगह से दूसरी जगह पर आने जाने के लिए किया जा सकेगा। कंपनी ने इसे अभी एक कॉन्सेप्ट के रूप में पेश किया है।

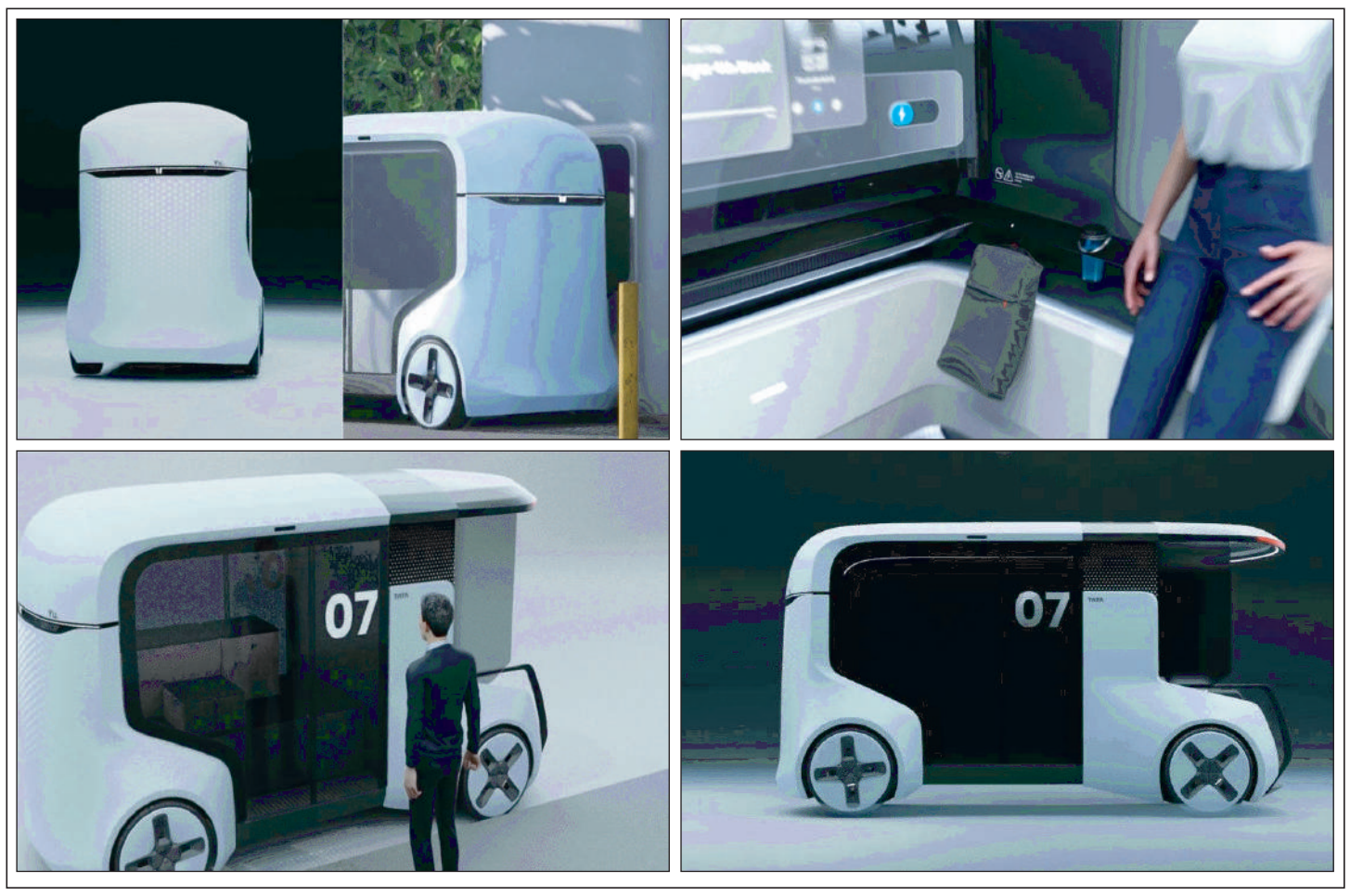

नई दिल्ली। हाल ही में भारतीय वाहन निर्माता कंपनी टाटा मोटर्स ने ऐसी गाड़ी का पेटेंट फाइल किया है, जो खुद-ब-खुद (Automated Vehicles) चल सकती है। यह ऑटोमेटिक व्हीकल न केवल सामान डिलीवरी कर सकती है, बल्कि लोगों को उनके मंजिल तक भी पहुंचा सकती है। टाटा की इस ऑटोमेटिक गाड़ी का नाम Tata Yu है, जो सेल्फ ड्राइविंग फीचर के साथ आती है। आइए जानते हैं कि Tata Yu कैसे काम करती है और यह किन फीचर्स से लैस होने वाली है।

Tata Yu कैसे काम करता है?

इसे इस तरह से डिजाइन किया गया है, जिससे यह सामान और लोगों को एक साथ लेकर चल सकें। इसके बीच वाले भाग में बड़ी जगह दी गई है, जहां पर ई-कॉमर्स पार्सल रखे जा सकते हैं, जिन्हें अलग-अलग साइज के बॉक्स में भरा जा सकता है। इनको सीधे गोदाम से कलेक्ट करके उनकी डिलीवरी वाले पते पर पहुचाया जा सकता है। इससे पार्सल को दो तरीकों से वितरित किया जा सकता है।

कुछ जगहों पर ऑटोमेटिक ट्रांसफर सिस्टम उपलब्ध होता है, जहां पर पार्सल सीधे इससे पहुंचाए जा सकते हैं। आगे चलकर इस सिस्टम को ऑफिस और आवासीय परिसर में स्थापित किए जा सकते हैं।

इस सिस्टम में वर्कर्स को पैकेज के बारे में जानकारी दी जाती है। वह उस पैकेज को निर्धारित जगह से हासिल करते हैं और इसे डिलीवरी करने के बाद कमीशन को हासिल कर सकते हैं।

Tata Yu का इस्तेमाल एक टैक्सी की तरह भी किया जा सकेगा। लोग अपनी मंजिल तक जाने के लिए ऐप के जरिए बुक कर सकेंगे। अगर कोई वैन उसी दिशा में जा रही है, तो वह इस वैन में सवार हो सकते हैं। सफर पूरा होने के बाद ऐप के जरिए ही पेमेंट हो जाएगा। इस वैन से दो लोग एक साथ सफर कर सकेंगे।

Tata Yu के फीचर्स

Tata Yu 3,700 मिमी लंबी, 1,500 मिमी चौड़ी और 1,800 मिमी ऊंची हो सकती है। इसे हब-माउंटेड मोटर्स के जरिए संचालित किया जाएगा। अभी तक कंपनी की तरफ से इसकी बैटरी कैपेसिटी और रेंज के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं दी गई है। हाल में यह एक कॉन्सेप्ट के रूप में है और इसे बनाने में कई साल लग सकते हैं। यह न केवल ऑटोमेटिक गाड़ी होगी, बल्कि स्मार्ट शहरों, गिग इकॉनमी और स्वचालित परिवहन प्रणालियों के भविष्य का एक संकेतक भी हो सकता है।

होण्डा की प्रीमियम मोटरसाइकिल पर बंपर डिस्काउंट, सबसे ज्यादा हॉर्नेट पर छूट

मार्च 2025 में Honda की प्रीमियम मोटरसाइकिलों पर बंपर डिस्काउंट दिया जा रहा है। कंपनी अपनी कुछ चुनिंदा बाइक के मॉडल पर यह छूट दे रही है। कंपनी की तरफ मोटरसाइकिलों पर दी जा रही छूट में 2025 CB350 Hornet 2.0 और NX200 शामिल है। इन मोटरसाइकिल को आप होंडा की RedWing डीलरशिप से खरीद सकते हैं। आइए इनके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। Honda अपनी प्रीमियम मोटरसाइकिल पर जबरदस्त डिस्काउंट दे रही है। कंपनी अपनी कुछ चुनिंदा बाइक मॉडलों पर ही डिस्काउंट दे रही है। यह छूट केवल उन मोटरसाइकिल पर मिल रही है, जो साल 2024 में बनाई गई है। इसके अलावा, इनपर कॉर्पोरेट डिस्काउंट भी दिया जा रहा है। इन बाइक्स को होंडा के बिगविंग डीलरशिप नेटवर्क के जरिए खरीदी जा सकती है।

कौन-सी मोटरसाइकिल ऑफर में शामिल?

होंडा बिगविंग नेटवर्क के तहत कई मोटरसाइकिल को बेचा जाता है, लेकिन इस स्पेशल ऑफर में कुछ बाइक को शामिल नहीं किया गया है। इसमें हाल ही में लॉन्च हुई CB200X और Hornet 2.0 पर कोई डिस्काउंट नहीं मिल रहा है। इन दोनों को ही बिगविंग नेटवर्क के जरिए बेचा जाता है। कंपनी की तरफ से दी जा रही छूट में पिछले साल की बची हुई गाड़ियों को शामिल किया गया है।

हाल में होंडा के बिगविंग डीलरशिप पर कुल 14 मॉडल मिलते हैं, जो Hornet 2.0, CB200X, NX200, CB300F, CB300F Flex-Fuel, CB300R, H'ness CB350, CB350, CB350RS, NX500, Transalp, Goldwing, CBR650R, और CB650R है।

कितना मिल रहा डिस्काउंट?

होंडा अपनी प्रीमियम मोटरसाइकिल पर बंपर डिस्काउंट दे रही है। इस डिस्काउंट ऑफर में 2024 में बनी मोटरसाइकिल के कुछ चुनिंदा मॉडल को शामिल किया गया है। इन मॉडलों पर 10,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है। इसके साथ ही 5,000 रुपये तक का कॉर्पोरेट डिस्काउंट भी मिल सकता है।

इनको मिला हाल में अपडेट्स

2025 CB350: हाल ही में होंडा ने 2025 CB350 रेंज को अपडेट किया है। इसमें OBD2B कंप्लायंट फीचर को शामिल किया गया है और नए कलर ऑप्शन भी दिए गए हैं। इसके H'ness CB350 को चार नए कलर ऑप्शन के साथ आती है, जो Athletic Blue Metallic, Pearl Deep Ground Grey, Pearl Igneous Black, और Rebel Red Metallic है। इसी तरह ही CB350RS और CB350 को भी नए कलर और ग्राफिक दिए गए हैं।

2025 Hornet 2.0: इसे भी हाल ही में अपडेट किया गया है। इसे नए फीचर्स, नए कलर और OBD2B कंप्लायंटनेस के साथ लेकर आया गया है। इसके नए अपडेट मॉडल की एक्स-शोरूम कीमत 1,56,953 रुपये है, जो पहले से 13,502 रुपये ज्यादा महंगी है।

NX200: होंडा ने हाल ही में NX200 को भी लॉन्च किया है, जिसकी एक्स-शोरूम कीमत 1,68,499 रुपये है। यह दोनों RedWing और BigWing डीलरशिप में मिलेगी।

लॉन्च से पहले नजर आई फॉक्सवगन गोल्फ GTI, कितना दमदार होगा इंजन और कैसे होंगे फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

जर्मनी की वाहन निर्माता Volkswagen की ओर से जल्द ही भारतीय बाजार में नई गाड़ी को लॉन्च किया जाएगा। लॉन्च से पहले Golf GTI को टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक गाड़ी की क्या जानकारी सामने आई है। इसे कब तक भारत में लॉन्च किया जा सकता है। कितना दमदार इंजन और फीचर्स इसमें दिए जाएंगे। आइए जानते हैं।

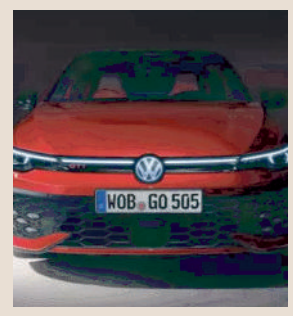

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में फॉक्सवैगन की ओर से जल्द ही नई कारों को लॉन्च किया जाएगा। इसमें से प्रीमियम हैचबैक कार के तौर पर Volkswagen Golf GTI को भी लाने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल में ही इस गाड़ी को भारतीय सड़कों पर देखा गया है। इस गाड़ी की क्या जानकारी सामने आई है। कब तक इसे लॉन्च (Volkswagen Golf GTI India) किया जा सकता है। कितना दमदार इंजन इसमें मिल सकता है। किस तरह के फीचर्स दिए जा सकते हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

भारत आएगी Volkswagen Golf GTI

फॉक्सवैगन की ओर से भारतीय बाजार में जल्द ही नई गाड़ी के तौर पर Golf GTI को लॉन्च किया जाएगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लॉन्च से पहले इस गाड़ी को भारतीय सड़कों पर देखा गया है। इस दौरान गाड़ी के एक्सटीरियर के कुछ फीचर्स की जानकारी सामने आई है।

क्या मिली जानकारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक इस प्रीमियम स्पोर्टी हैचबैक कार में चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, 5स्पोक अलॉय व्हील्स, रेड ब्रेक कैलिपर्स, एलईडी टेल लाइट्स, जीटीआई की बैजिंग के साथ आएगी। इसके अलावा इस गाड़ी को सामान्य गोल्फ के मुकाबले कम ग्राउंड क्लियरेंस के साथ लाया जाएगा।

कैसे होंगे फीचर्स

कंपनी की ओर से इस गाड़ी में एलईडी मैट्रिक्स हेडलाइट्स, कनेक्टिड एलईडी डीआरएल, हनीकॉम्ब मैश पैटर्न फ्रंट बंपर ग्रिल, ड्यूल एग्जॉस्ट को दिया जाएगा। इंटीरियर में इस कार में ब्लैक के साथ रेड थीम को दिया जा सकता है। इसके अलावा इसमें एल्यूमिनियम पैडल, 12.9 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, ऑटो एसी, वायरलेस फोन चार्जर, एंबिएंट लाइट्स, छह एयरबैग, ईएससी, ADAS जैसे कई फीचर्स को दिया जाएगा।

कितना दमदार इंजन

Volkswagen Golf GTI में कंपनी की ओर से दो लीटर की क्षमता का टर्बो पेट्रोल इंजन दिया जाएगा। इस इंजन से कार को 265 पीएस की पावर और 370 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसके साथ 7स्पीड डीसीटी ट्रांसमिशन को दिया जाएगा। यह कार इतनी तेज होगी कि इसे 0 से 100 किलोमीटर की स्पीड पकड़ने में सिर्फ 5.9 सेकेंड का समय लगेगा।

कब तक होगी लॉन्च

कंपनी की ओर से इसके लॉन्च की तारीख को लेकर अभी तक आधिकारिक जानकारी नहीं है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इस गाड़ी को अगले दो से तीन महीनों के दौरान लॉन्च किया जा सकता है। इसे सीबीयू के तौर पर लाया जाएगा, जिस कारण इसकी सीमित यूनिट्स की ही बिक्री भारतीय बाजार में की जाएगी।

टेस्ला कर सकती है किन दो कारों के साथ भारत में एंट्री, जानें कैसे होंगे फीचर्स और कितनी होगी रेंज

अमेरिका की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता Tesla की ओर से भारतीय बाजार में जल्द ही अपनी कारों की बिक्री को शुरू किया जा सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से सबसे पहले दो कारों को भारत में लाया जा सकता है। यह कौन सी कारें हो सकती हैं और इनमें किस तरह के फीचर्स और रेंज को दिया जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। अमेरिका की प्रमुख इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता Tesla जल्द ही भारत में एंट्री कर सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से किन कारों को भारतीय बाजार में सबसे पहले लाया जा सकता है। इनमें किस तरह के फीचर्स को दिया जाएगा। कितनी दमदार बैटरी और रेंज के साथ इन कारों को ऑफर किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

भारत में एंट्री की तैयारी में Tesla

अमेरिकी वाहन निर्माता Tesla जल्द ही भारत में एंट्री करने की तैयारी कर रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी अपना पहला शोरूम भी मुंबई के BKC में खोल सकती है।

किन कारों को करेगी ऑफर

रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से सबसे पहले दो कारों को भारतीय बाजार में ऑफर किया जाएगा। जिसके कुछ समय बाद पोर्टफोलियो की अन्य कारों को भी लाया जा सकता है। जानकारी के मुताबिक जिन कारों को सबसे पहले लाया जा सकता है उनमें Model 3 और Model Y शामिल हैं।

Model 3 में कैसे हैं फीचर्स

टेस्ला की ओर से एंट्री लेवल कार के तौर पर Model 3 को ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी में तीन वेरिएंट का विकल्प दिया जाता है, जिसमें लॉन्ग रेंज रियर व्हील ड्राइव, लॉन्ग रेंज ऑल व्हील ड्राइव और परफॉर्मेंस शामिल हैं। इस गाड़ी में 15.4 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, आठ इंच टचस्क्रीन को रियर में दिया गया है। सिंगल चार्ज में इसे 557 से 584 किलोमीटर तक की रेंज मिलती है। 0-100 किलोमीटर की स्पीड हासिल करने में इसे 2.9 सेकेंड से लेकर 4.9 सेकेंड तक का समय लगता है। इसमें लगी मोटर से 504 बीएचपी की पावर मिलती है।

कैसी है Model Y

Tesla की Model Y में रियर व्हील ड्राइव और लॉन्ग रेंज ऑल व्हील ड्राइव के विकल्प मिलते हैं। गाड़ी को सिंगल चार्ज में 719 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। गाड़ी में लगी मोटर से इसे 0-100 किलोमीटर की स्पीड

हासिल करने में 5.9 सेकेंड लगते हैं। लेकिन इसके ऑल व्हील ड्राइव वेरिएंट को 4.3 सेकेंड में ही 0-100 किलोमीटर की स्पीड से चलाया जा सकता है। फीचर्स के तौर पर इसमें एलईडी हेडलाइट्स, एलईडी टेल लाइट्स, 15.4 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, रियर पैसेंजर्स के लिए आठ इंच स्क्रीन जैसे फीचर्स को दिया जाता है।

किनसे होगा मुकाबला

भारतीय बाजार में टेस्ला की कारों को Mahindra, Tata, MG, Kia, Hyundai जैसी कंपनियों के साथ ही Vinfast से भी कड़ी चुनौती मिलेगी।

विज्ञान कथा सीखने के लिए बच्चों के मन को प्रेरित करने के लिए

विजय गर्ग

नैतिक मूल्यों के संचार में भूमिका भी बच्चों के मन को प्रेरित करने के लिए विज्ञान कथा सीखने के लिए बच्चों के मन को प्रेरित करने के लिए इन कहानियों को जानने के लिए अक्सर पात्रों जो प्राकृतिक दुनिया की रक्षा के लिए अनुसंधान शुरू सुविधा, जीवित प्राणियों के लिए करुणा को बढ़ावा देने और ग्रहों की जिंमेदारी की भावना ।

बच्चे हमारा भविष्य हैं और उनके दिमाग के विकास के लिए कहानियां बहुत महत्वपूर्ण हैं। कहानियां उनकी कल्पना को उत्तेजित करती हैं, मूल्यों की भावना पैदा करती हैं। इस तरह, वे बच्चों को एक खुशहाल और सम्मानजनक दुनिया बनाने में मार्गदर्शन करते हैं। विज्ञान कथा और पर्यावरण की कहानियां इस दृष्टि को प्राप्त करने में बच्चों के लिए एक प्रमुख भूमिका निभाती हैं। कहानियों की यह शैली न केवल बच्चों को अद्भुत दुनिया के बारे में सूचित करती है, बल्कि उन्हें विज्ञान से परिचित कराती है, प्रौद्योगिकी में मूल्यवान अंतर्दृष्टि और पर्यावरण-मानसिक संरक्षण के महत्व को प्रदान करती है। नैतिक मूल्यों के संचार में भूमिका भी बच्चों के मन को प्रेरित करने के लिए विज्ञान कथा सीखने के लिए बच्चों के मन को प्रेरित करने के लिए इन कहानियों को जानने के लिए अक्सर पात्रों जो प्राकृतिक दुनिया की रक्षा के लिए अनुसंधान शुरू सुविधा, जीवित प्राणियों के लिए करुणा को बढ़ावा देने और ग्रहों की जिंमेदारी की भावना । बचपन में पर्यावरण के बारे में पर्याप्त ज्ञान प्रदान करके, बच्चे पर्यावरण के प्रति जागरूक लोगों के रूप में विकसित हो सकते हैं संभावना बढ़ जाती है। ऐसे व्यक्ति प्राकृतिक सह-अस्तित्व और जैव विविधता के संरक्षण की आवश्यकता को बहुत गंभीरता से समझते हैं और पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में लाभकारी भूमिका निभाने के लिए हमेशा उत्सुक रहते हैं। विज्ञान की कहानियां और पर्यावरण कहानियां न केवल बच्चों में मानसिक विकास और पर्यावरण जागरूकता पैदा करती हैं बल्कि उन्हें नैतिक मूल्य प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इनमें से कई आख्यान न्याय, सामाजिक समानता और प्रौद्योगिकी के नैतिक उपयोग के विषयों का पता लगाते हैं। काल्पनिक पात्रों के अनुभवों के माध्यम से, बच्चों को नैतिक दुविधाओं, नैतिक निर्णयों और उनके कार्यों के परिणामों द्वारा निर्देशित किया जा सकता है। रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करता है विज्ञान कथा और पर्यावरणीय कहानियां हमारे ग्रह के सामने आने वाली पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में बच्चों के मानसिक विकास, नैतिक जागरूकता और जागरूकता को बढ़ावा देती हैं। विज्ञान कथा एक बच्चे की कल्पना को विकसित करने और नई चीजें सीखने की उसकी इच्छा को तेज करने में एक विशेष भूमिका निभाती है। उन्नत प्रौद्योगिकी और ब्रह्मांडीय अंतरिक्ष की भविष्य की दुनिया में साहसी लोगों की कथा के माध्यम से। बच्चों को वैज्ञानिक अवधारणाओं से बहुत दिलचस्प तरीके से परिचित कराया जाता है। विज्ञान लेखक अंतरिक्ष अन्वेषण, समय यात्रा और उन्नत सभ्यताओं के बारे में कहानियां बनाते हैं। इन कहानियों के माध्यम से, वह बाल पाठकों का मनोरंजन करता है और बच्चों को बुनियादी वैज्ञानिक सिद्धांतों से परिचित कराता है। इसके अलावा, विज्ञान कथा में अक्सर समस्या को सुलझाने के दृश्य शामिल होते हैं। बच्चों को गंभीर और रचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है। ये कहानियां उन पात्रों को पेश करके बचकानी हैं जो वैज्ञानिक तर्क का उपयोग करने की चुनौती देते हैं, मन को जिज्ञासु, प्रयोग और सीखने के लिए प्रेरित करते हैं।

परिणाम बच्चे का मानसिक विकास है, जो

विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित जैसे क्षेत्रों में सफलता के लिए आवश्यक है। नई चीजों को सीखने की इच्छा में वृद्धि मानसिक विकास के अलावा, पर्यावरण के प्रति जागरूक-नेस और नैतिक समझ-बच्चों में, विज्ञान कथा और पर्यावरणीय कहानियां भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में कार्य करती हैं। इन आख्यानों में प्रस्तुत काल्पनिक दुनिया और भविष्य की प्रौद्योगिकियां बच्चों के दिमाग में नई चीजें सीखने की इच्छा को प्रोत्साहित करती हैं। बढ़ती है उन्हें एक ऐसी दुनिया की कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित करती है जहां वैज्ञानिक प्रगति समाज और पर्यावरण की बेहतरी में योगदान देती है। विज्ञान पर काबू पाने के चमत्कार और पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में बच्चों को पढ़ाने से, ये कहानियां समस्या को सुलझाने वाले विचारकों की एक नई पीढ़ी को जन्म देती हैं। इस तरह के विचारक उद्देश्य की भावना और बेहतर भविष्य बनाने की प्रतिबद्धता से प्रेरित होते हैं। मन के उचित विकास के लिए अमूल्य उपकरण निष्कर्ष में, विज्ञान कथा और पर्यावरण कहानियां बच्चों के मन के उचित विकास के लिए अमूल्य उपकरण हैं।

परिणाम बच्चे का मानसिक विकास है, जो विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित जैसे क्षेत्रों में सफलता के लिए आवश्यक है। नई चीजों को सीखने की इच्छा में वृद्धि मानसिक विकास के अलावा, पर्यावरण के प्रति जागरूक-नेस और नैतिक समझ-बच्चों में, विज्ञान कथा और पर्यावरणीय कहानियां भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में कार्य करती हैं। इन आख्यानों में प्रस्तुत काल्पनिक दुनिया और भविष्य की प्रौद्योगिकियां बच्चों के दिमाग में नई चीजें सीखने की इच्छा को प्रोत्साहित करती हैं। बढ़ती है उन्हें एक ऐसी दुनिया की कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित करती है जहां वैज्ञानिक प्रगति समाज और पर्यावरण की बेहतरी में योगदान देती है। विज्ञान पर काबू पाने के चमत्कार और पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में बच्चों को पढ़ाने से, ये कहानियां समस्या को सुलझाने वाले विचारकों की एक नई पीढ़ी को जन्म देती हैं। इस तरह के विचारक उद्देश्य की भावना और बेहतर भविष्य बनाने की प्रतिबद्धता से प्रेरित होते हैं।

मन के उचित विकास के लिए अमूल्य उपकरण निष्कर्ष में, विज्ञान कथा और पर्यावरण कहानियां बच्चों के मन के उचित विकास के लिए अमूल्य उपकरण हैं।

यह कहानियां न केवल मानसिक विकास, पर्यावरण जागरूकता और नैतिक समझ को बढ़ावा देती हैं बल्कि बाल पाठकों को एक उज्जवल और खुशहाल भविष्य के निर्माता बनने के लिए प्रेरित करती हैं। बच्चों को ऐसी कहानियाँ प्रदान करके जो कल्पना और शिक्षा को जोड़ती हैं, हम उन्हें अच्छे खोजकर्ता, सहानुभूतिपूर्ण और प्रकृति और ग्रह की जिम्मेदारी समझने और लेने के लिए सशक्त बनाते हैं। इस तरह, हम एक ऐसी दुनिया के लिए आधार बनाते हैं जहां नई खोजों, उपलब्धियों और पर्यावरण संरक्षण कदम से कदम काम करते हैं। वे एक साथ चल सकते हैं। पर्यावरण की भावना- मानसिक जिम्मेदारी पर्यावरणीय संकट में निरंतर वृद्धि का सामना कर रही दुनिया में बच्चों में पर्यावरणीय जिम्मेदारी को विकसित करना महत्वपूर्ण है। पर्यावरण की कहानियां संरक्षण के महत्व के बारे में बच्चों में जागरूकता पैदा करने में सक्षम हैं। प्राकृतिक संसाधनों के लिए, उनके दीर्घकालिक अस्तित्व और उन पर मानव निर्भरता को बनाए रखने के लिए आवश्यक कार्य। बच्चे उन आख्यानों के माध्यम से प्रदूषण, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन के बारे में पढ़ते हैं जो परिणामों को समझ सकते हैं के पर्यावरण पर मानव गतिविधियों के प्रभाव को प्रकट करते हैं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

प्रदूषण का पोषण

विजय गर्ग

यह खबर शर्मनाक है कि दुनिया के सबसे प्रदूषित बीस शहरों में तेरह शहर भारत के हैं। ऐसी खबरों से दुनिया में कैसी छवि बनेगी, कहने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन ऐसी खबरें विदेशी निवेश व विदेशी पर्यटकों की सोच को जरूर नकारात्मक बना सकती हैं। उल्लेखनीय है कि स्विस वायु गुणवत्ता प्रौद्योगिकी कंपनी आई.क्यू. एअर द्वारा जारी वायु गुणवत्ता रिपोर्ट 2024 बताती है कि दिल्ली वैश्विक स्तर पर सबसे ज्यादा प्रदूषित राजधानी बनी हुई है। गंभीर चिंता इस बात की है कि भारत दुनिया का पांचवां सबसे ज्यादा प्रदूषित देश बना है। उल्लेखनीय बात यह है कि वर्ष 2023 में भारत तीसरे स्थान पर था। लेकिन इस रिपोर्ट में सबसे चौंकाने वाला तथ्य यह है कि देश का सबसे ज्यादा प्रदूषित शहर दिल्ली नहीं बल्कि मेघालय का बर्नीहाट लिस्ट में टॉप पर है। हालांकि, कहना मुश्किल है कि बर्नीहाट की यह स्थिति किसी परिस्थिति के कारण कुछ समय के लिये थी या स्थायी रूप से बनी हुई है। निश्चय ही हमारी राजधानी का दुनिया में सबसे ज्यादा प्रदूषित होना और देश के तेरह शहरों का शीर्ष बीस प्रदूषित में शुमार होना परेशान करने वाला है। जब किसी शहर के उच्च प्रदूषित होने की बात करते तो यह नीति-नियंताओं की नाकामी और जनमानस की लापरवाही व उदासीनता को ही दर्शाता है। आई.क्यू. एअर द्वारा जारी वायु गुणवत्ता रिपोर्ट 2024 में भारत में पीएम 2.5 सांद्रता में सात फीसदी की गिरावट देखी। जो वर्ष 2023 में 54.5 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर थी और फिलहाल 50.6 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर है। बहरहाल, वायु प्रदूषण की ये स्थितियां स्वास्थ्य के लिये गंभीर जोखिम की वजह बनी हुई हैं। एक अनुमान के अनुसार वायु प्रदूषण से औसतन व्यक्ति का जीवन 5.2 साल कम हो रहा है, जो स्थिति की गंभीरता का ही परिचायक है। उल्लेखनीय है कि गत वर्ष प्रकाशित लैंसेट प्लैनेटरी हेल्थ अध्ययन के अनुसार प्रदूषण की वजह से वर्ष 2009 से 2019 के बीच हर साल पंद्रह लाख मौतें हुई हैं।

देशव्यापी प्रदूषण में पीएम 2.5 की घातकता को लेकर कई अध्ययन सामने आए हैं। दरअसल, 2.5 माइक्रोन से छोटे वायु प्रदूषण कण हमारे फेफड़ों और रक्तप्रवाह में सेंध लगाते हैं, जिससे श्वसन तंत्र को नुकसान पहुंचता है, जिसके चलते सांस लेने में दिक्कत होती है। साथ ही हृदय रोग और कैंसर का खतरा भी बढ़ सकता है। इन प्रदूषण कारक कणों के फैलने के कई कारण हमारी जीवनशैली में बदलाव से भी जुड़े हैं। मजबूत सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था का न होना भी एक कारण है। वहीं वाहनों के धुएं, औद्योगिक एमिशन का निस्तारण न होने, जीवश्म ईंधन के अधिक प्रयोग, फसल के अवशेष व लकड़ी जलाने से भी इसमें वृद्धि होती है। देश की राजधानी दिल्ली में तो गाहे-बगाहे स्थिति बेहद चिंताजनक होती है। यहां तक कि प्रदूषण का हाई लेवल यानी पीएम 2.5 का सालाना औसत 91.6 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर रहा है। इसके अलावा विश्व स्वास्थ्य संगठन के तमाम मानक ऐसे हैं जिनकी कसौटी पर हम खरे नहीं उतरते। हालांकि, प्रदूषण फैलाने में कई प्राकृतिक कारण भी हैं, जिसमें धुंध और अलनीनो प्रभाव भी शामिल हैं। लेकिन यह हमारी चिंता का विषय होना चाहिए कि देश के कई शहरों में पीएम 2.5 कणों का स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन के निर्धारित मानकों से दस गुना ज्यादा है। जो सीधे-सीधे आम आदमी के स्वास्थ्य के लिये खतरे की घंटी हैं। लेकिन इतनी गंभीर स्थिति के बावजूद हमारे शासक-प्रशासकों और जनता में इस गंभीर संकट के प्रति कोई गंभीर चिंता नजर नहीं आती। हर चुनाव में तमाम लोकलुभावन मुद्दे तो हवा में तैरते रहते हैं लेकिन मुफ्त की रेवाड़ियों की आस लगाने वाले लोग अपनी जिंदगी के लिये स्वच्छ हवा की मांग कभी नहीं करते। एक दृष्टि से देखा जाए तो प्रदूषण का यह गंभीर स्तर हमारे तंत्र की नाकामी ही दर्शाता है। यदि देश में मजबूत सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था होती तो शायद सड़कों पर कारों का सैलाब न होता। कोरोना संकट ने हमें सबक दिया था कि हमारी गतिशीलता कितना प्रदूषण फैलाती है।

कहानी : हरी सब्जी

विजय गर्ग

'न्नर्मदा ... आओ बैठो... यहां पर धूप है... थोड़ा आराम मिलेगा, आजकल इस दिसंबर की ठंड में धूप भी भगवान

की नेमत है वरना इंसान कांप-कांप कर ही मर जाए। और हम जैसों के लिए तो यह और मुसीबत करती है।' पैंसठ वर्षीय शीला अपनी हम उम्र पड़ोसन नर्मदा से बोली ।

शीला ने कुर्सी खींचकर नर्मदा को बैठने के लिए दिया। नर्मदा शीला की पड़ोसन थी। दोनों बहू-बेटों वाली थी। इसीलिए घर की ज्यादा जिम्मेदारियां नहीं थी। खाली होने पर एक-दूसरे से अपने दुख सुख बतियाया करती थी । या समय गुजारने के लिए भी एक दूसरे से बात कर लिया करती थी।

आज भी खाली देखा तो नर्मदा को कुछ देर अपने पास बात करने के लिए बुला लिया और नर्मदा भी चली आई।

नर्मदा का मिजाज थोड़ा-थोड़ा खिंचा हुआ देखकर शीला ने पूछा, 'क्या हुआ है कोई बात है ? क्यों आज तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है वरना रोज तो बहुत मुस्कुराती रहती हो।

'अरे कुछ नहीं शीला दीदी आज रोहित की बहू जाने उसके मन में क्या था थोड़ी सी दो बातें क्या कह दी पलट कर उल्टा जवाब देने लगी ।'

'अरे नर्मदा आजकल जमाना ही ऐसा है बहू को कितना भी करो और अपने सारे जीवन की कमाई दे दो .. लेकिन बहू तो बहू होती है शर्म, लिहाज, त्याग की उनसे अपेक्षा करना ही बेकार है। इसीलिए तुम अपना मन दुखी मत करो दूसरे की जायी से क्या ज्यादा उम्मीद करना' । शीला सांत्वना देते हुए बोली।

अंदर से दोनों के लिए चाय लेकर आती हुई शीला की बहू पूजा ने ये बातें सुनी तो उसे बहुत ही दुख हुआ। आज इतने वर्षों से सास और ससुर की सेवा कर रही हूं। उसके बावजूद इनकी सोच में जरा भी बदलाव नहीं हुआ।

उसने सोच लिया कि इस बात का इन्हें अहसास करा कर रहूंगी कि बहू कितना त्याग करती है। घर में सब्जी लाने के लिए शीला के पति रतन जी ही जाते थे। रात में सब्जी बनाने के लिए वही सब्जी लेकर आए थे। आज सब्जी में फूल गोभी और मटर लेकर आए थे। शीला और रतन जी को पूजा के हाथ की बनी हुई गोभी, मटर, टमाटर की सब्जी बहुत पसंद आती थी।

पूजा ने बहुत ही जतन से आलू, फूलगोभी, मटर की मसाले डालकर सब्जी बनाई। पूरा घर खुशबू से महक रहा थ। उसने सास और ससुर दोनों के लिए एक साथ ही भोजन निकाला और ले जाकर उनके आगे परोस दिया।

शीला और रतन जी दोनों हाथ धोकर खाने के लिए भोजन पर बैठे। पूजा ने खाने में सब्जी, रोटी और सलाद परोसा था। सब्जी की कटोरी देखते ही शीला चौंक पड़ी। आज खाना परोसते समय पूजा ने सिर्फ हरी सब्जियां छांट कर परोसने के बजाय कटोरी में आलू

भी परोसा था। आज से पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। हमेशा बनी तरकारी से छांट कर हरी सब्जियां ही परोसती थी। उसे पता था कि दोनों मधुमेह के मरीज हैं सो आलू नुकसान देह है। उस समय शीला ने कुछ नहीं कहा। आलू किनारे खाना खा लिया। रतन जी ने भी आलू करके किनारे खाना खा लिया।

खाना खाने के बाद शीला सीधे पूजा के पास पहुंची और बोली, 'पूजा यह आज तुमने कैसी सब्जी निकाली थी। तुम्हें पता है कि हम दोनों लोगों को मधुमेह है और हम लोग सब्जी में कभी भी आलू नहीं खाते हैं। डाक्टर ने हम दोनों को ही आलू खाने से मना किया है। इसके बावजूद आज तुमने सब्जी में हमें आलू भी दे दिया था' ।

'मम्मी जी, मुझे पता है कि आप और पापा जी मधुमेह के मरीज हैं। लेकिन शायद आप लोगों को नहीं पता है कि मैं ऐसी किसी भी बीमारी की मरीज नहीं हूं जिसमें मुझे सिर्फ आलू की सब्जी खाने के लिए कहा जाए। तकरीबन दस साल हुए, जब से बहू बनकर इस घर में आई हूं तब से घर में जब भी सब्जी बनती है तो उसमें से हरी सब्जी आप दोनो को निकाल कर देने के बाद पतिदेव और बच्चों को खाना देने के बाद, मेरे हिस्से में ज्यादातर आलू ही आता है। मुझे आलू खाना पड़ता है। आज से मैं यह त्याग करना छोड़ रही हूं। और मैं तो बहू हूं। बहू भला कहां त्याग करती है। आप भी तो इस बात को मानती हैं।'

शीला पूजा की बातें सुनकर बेहद शर्मिंदा हो गई। उसने शांत मन से विचार किया तो उसे अंदर से बेहद शर्मिंदगी हो रही थी। दस साल से बहू हम दोनों के लिए इतना त्याग कर रही है। मैं उसकी इस अच्छाई और त्याग की कदर भी न कर सकी। मां बनना तो दूर मैं तो उसकी एक अच्छी सास भी न बन सकी। अगर मैं औरत बन कर भी इस बारे में सोची होती तो मुझे अपनी बहू की तकलीफ जरूर दिखाई दे जाती । इतना करने के बाद भी मैं सुबह नर्मदा से उसकी बुराई ही कर रही थी ।

वह शर्मिंदगी के साथ बोली, 'बहू मुझे माफ कर दे। बड़ी होकर भी मेरे अंदर बड़प्पन नहीं था और तू मुझसे बहुत छोटी होकर भी एक बेटी से भी ज्यादा हम लोगों के बारे में सोची' ।

'अरे मां जी आप मुझसे माफी मत मांगिए मैं तो बस आपको यह अहसास दिलाना चाहती थी कि बहू भी त्याग करती है। अनेक तरीकों से करती है। बस उसके उन कामों के लिए दो शब्द अच्छे मिल जाएं तो वह उसे पुरस्कार के जैसे लगते हैं। वहीं पर यदि ताने मिलें तो उसे उन कामों को करने में अरुचि हो जाती है। हर बच्चे को मां-बाप से शाबाशी और पुरस्कार की आशा रहती है कुछ करने के बदले। बहू हुई तो क्या हुआ मेरा भी इतना तो हक है।' कहकर शीला के गले लग गई।

'तुम्हारा हक इससे ज्यादा है और सुनो कल से तुम्हें सिर्फ आलू खाने की जरूरत नहीं है। कल से तुम्हारे पापा जी से कहकर हरी सब्जियां ज्यादा मंगवाया करूंगी ताकि सभी स्वस्थ रहें ।'

सेवानिवृत्तप्रिंसिपल मलोट पंजाब

कहानी: फटी ओढ़नी

विजय गर्ग

कालेज में नई आई मेघा के साथ वैलेंटाइन डे के दिन ऐसा क्या हो गया कि उसे अपने साथ पढ़ने वाले विनोद से नफरत हो गई...

एक बार फिर गांव की ओढ़नी ने शहर में परचम लहराने की ठान ली. गांव के स्कूल में 12वीं तक पढ़ी मेघा का जब इंजीनियरिंग में चयन हुआ तो घर भर में खुशी की लहर दौड़ गई थी. देश के प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान में ऐडमिशन मिलना कोई कम बड़ी बात है क्या?

"लेकिन यह ओढ़नी शहर के आकाश में लहराना नहीं जानती, कहीं झाड़कांटों में उलझ कर फट गई तो?"

"हवाओं को तय करने दो. इस के बंधन खोल कर इसे आजाद कर दो, देखें अटती है या फटती है "

"लेकिन एक बार फटने के बाद क्या? फिर से सिलना आसान है क्या? और अगर सिल भी गई तो रहीमजी वाले प्रेम के धागे की तरह क्या जोड़ दिखेगा नहीं? जबजब दिखेगा तबतब क्या सालेगा नहीं?"

"तो क्या किया जाए? कटने से बचाने के लिए क्या पतंग को उड़ाना छोड़ दें?"

न जाने कितनी ही चर्चाएं थीं जो इन दिनों गांव की चौपाल पर चलती थी.

सब के अपनेअपने मत थे. कोई मेघा के पक्ष में तो कोई उस के खिलाफ. हरकोई चाहता तो था कि मेघा को उड़ने के लिए आकाश मिले लेकिन यह भी कि उस आकाश में बाज न उड़ रहे हों. अब भला यह कैसे संभव है कि रसगुल्ला तो खाएं लेकिन चाशनी में हाथ न डूबें.

"संभव तो यह भी है कि रसगुल्ले को कांटे से उठा कर खाया जाए."

कोई मेघा की नकल कर हंसता. मेघा भी इसी तरह अटपटे सवालों के चटपटे जवाब देने वाली लड़की है. हर मुश्किल का हल बिना घबराए या हड़बड़ाए निकालने वाली. कभी ओढ़नी फट भी गई ना, तो इतनी सफाई से रफू करेगी कि किसी को आभास तक नहीं होगा. मेघा के बारे में सब का यही खयाल था.

लेकिन न जाने क्यों, खुद मेघा को अपने ऊपर भरोसा नहीं हो पा रहा था पर आसमान नापने के लिए पर तो खोलने ही पड़ते हैं ना मेघा भी अब उड़ान के लिए तैयार हो चुकी थी.

मेघा कालेज के कैंपस में चाचा के साथ घुसी तो लाज के मारे जमीन में गड़ गई. चाचाभतीजी दोनों एकदूसरे से निगाहें चुराते आगे बढ़ रहे थे. मेघा को लगा मानों कई जोड़ी आंखें उस के दुपट्टे पर टंक गई है. उस ने अपने कुरते के ढलते कंधे को दुरुस्त किया और सहमी सी चाचा के पीछे हो ली.

इस बीच मेघा ने जरा सा निगाह ऊपर उठा कर इधरउधर देखने की कोशिश की लेकिन आंखें कई टखनों से होती हुईं खुली जांघ तक का सफर तय कर के वापस उस तक लौट आईं.

उस ने अपने स्मार्टफोन की तरफ देखा जो खुद उस की तरह ही किसी भी कोण से स्मार्ट नहीं लग रहा था. हर तीसरे हाथ में पकड़ा हुआ कटे सेब के निशान वाला फोन उसे अपने डब्बे को पर्स में छिपाने की सलाह दे रहा था जिसे उस ने बिना किसी प्रतिरोध के स्वीकार कर लिया था.

कालेज की औपचारिकताएं पूरी करने और होस्टल में कमरा अलौट होने की तसल्ली करने के बाद चाचा उसे भविष्य के लिए शुभकामनाएं दे कर वापस लौट गए. अब मेघा को अपना भविष्य खुद ही बनाना था। गंवई पसीने की खुशबू को शहर के परफ्यूम में घोलने का सपना उसे अपने दम पर ही पूरा करना था.

कालेज का पहला दिन. मेघा बड़े मन से तैयार हुई. लेकिन कहां जानती थी कि जिस ड्रैस को उस के कस्बे में नए जमाने की मौडर्न ड्रैस कह कर उसे आधुनिका का तमगा दिया जाता था वही कुरता और प्लाजो यहां उसे बहनजी का उपनाम दिला देंगे. मेघा आंसू पी कर रह गई. लेकिन सिलसिला यहीं नहीं थमा था.

उस के बालों में लगे नारियल तेल की महक, हर कुरते के साथ दुपट्टा रखने की आदत, पांवों में पहनी हुई चप्पलें आदि उसे भीड़ से अलग करते थे. और तो और खाने की टेबल पर भी सब उसे चम्मच की बजाय हाथ से चावल खाते हुए कनखियों से देख कर हंसा करते थे.

"आदिमानव " किसी ने जब पीछे से विशेषण उछाला तो मेघा को समझते देर नहीं लगी कि यह उसी के लिए है.

"यह सब बाहरी दिखावा है मेघा। तुम्हें इस में नहीं उलझना है," स्टेशन पर ट्रेन में बैठाते समय पिता ने यही तो सीख की पोटली बांध कर उस के कंधे पर धरी थी.

'पोटली तो भारी नहीं थी, फिर कंधे क्यों दुखने लगे?' मेघा सोचने लगी.

हर छात्र की तरह मेघा का सामना भी सीनियर छात्रों द्वारा ली जाने वाली रैगिंग से हुआ. होस्टल के एक कमरे में जब नई आई लड़कियों को रेवड़ की तरह भरा जा रहा था तब मेघा का गला सूखने लगा.

"तो क्या किया जाए इस नई मुरगी के साथ?" छात्राओं से घिरी मेघा ने सुना तो कई बार देखी गई फिल्म '**थ्री इडियट**' से कौपी आईडिया और डायलौग न जाने तालू के कौन से कोने में हिस्से में चिपक गए.

"भई, दुपट्टे बड़े प्यारे होते हैं इस के. चलो रानी, दुपट्टे से जुड़े कुछ गीतों पर नाच के दिखा दो. और हां, डांस प्योर देसी हो समझी?" गैंग की लीडर ने कहा तो मेघा जड़ सी हो गई.

एक सीनियर ने बांह पकड़ कर उसे बीच में धकेल दिया. मेघा के पांव फिर भी नहीं चले.

"देखो रानी, जब तक नाचोगी नहीं, जाओगी नहीं. खड़ी रहो रात भर," धमकी सुन कर मेघा ने निगाहें ऊपर उठाईं.

"ओह, कहां फंसा दिया," मेघा की आंखों में बेबसी ठहर गई.

'अब घूमर के अलावा कोई बचाव नहीं,' सोच कर मेघा ने अपने चिंदीचिंदी आत्मविश्वास को समेटा और अपने दुपट्टे को गले से उतार कर कमर पर बांध लिया.

'हवा में उड़ता जाए, मेरा लाल दुपट्टा मलमल का ', 'इन्हीं लोगों ने ले लीन्हा दुपट्टा मेरा ', 'लाल दुपट्टा उड़ गया रे बैरी हवा के झौंके से ' जैसे कई फिल्मी गीतों पर मेघा ने घूमर नाच किया तो सब के मुंह उस के मिक्स ऐंड मैच को देख कर खुले के खुले रह गए. फिरकी की तरह घूमती उस की देह खुद चकरी हो गई थी.

लड़कियां उत्तेजित हो कर सीटियां बजाने लगीं. उस के बाद वह 'घूमर वाली लड़की' के नाम से जानी जाने लगी.

मेघा किसी तरह नई मिट्टी में जड़ें जमाने की कोशिश कर रही थी लेकिन जब भी वह होस्टल में लड़कियों को गहरे गले और बिना बांहों वाली छोटी सी बनियाननुमा ड्रैस पहने बेफिक्री से घूमते देखती तो उसे अपना पूरी आस्तीन का कुरता रजाई सा लपेटा हुआ लगता.

मेघा की हालत त्रिशंकु सी हो गई. न तो उस से अपने संस्कार छोड़ते बनता और ना ही नए तौरतरीके अपनाते बन रहा था. फिर उस ने खुद को बदलने का निश्चय किया.

अब सवाल यह है वह अपनेआप को माहौल के अनुसार बदल भी ले लेकिन कोई उस की मदद करे तो सही, यहां तो कोई उसे दोस्त बनाने के लिए राजी ही नहीं था.

सब से आखिरी बेंच पर बैठने वाली मेघा ने अपनी तरफ से लाख कोशिश कर देखी लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे जमीन पौधे को स्वीकार ही नहीं कर रही, पौधा था कि पनप ही नहीं रहा था.

इसी तरह पहले सेमेस्टर के टर्म पेपर आ गए. मेघा ने अपनी जान झौंक दी. नतीजा आया तो पहले नंबर पर मेघा का नाम देख कर सब की निगाहें क्लास में पीछे बैठी आदिमानव सी लड़की की तरफ उठ गई. प्रोफैसर ने उस का नाम ले कर पुकारा तो संकोच से भरी मेघा के कदम जमीन में धंस से गए.

मेघा को लगा जैसेकि अब उस के दिन बदल जाएंगे और हुआ भी यही. प्रोफैसर उसे नाम से जानने लगे. बहुत से लड़केलड़कियों ने उस से मोबाइल नंबर ऐक्सचैंज किए. कुछ से बातचीत भी होने लगी लेकिन इतना सब होने के बाद भी मेघा अकेली की अकेली ही रही.

लाइम लाइट में आने के बाद भी उस का आत्मविश्वास नहीं लौटा. उसे सब का व्यवहार चीनी चढ़ी कुनैन सा लगता. एकदम बनावटी क्योंकि अब भी लोग उसे शाम को होने वाली चाय पार्टी का हिस्सा नहीं बनाते थे. हां, अपनी रूममैट विधि से अवश्य उस की पटने लगी थी.

विधि ने उस के बाहरी पहनावे को थोड़ा सा बदल दिया. उस की लंबी चोटी अब स्टैप्स में कट गई थी. बालों के तेल की जगह जैल ने ले ली. सलवारकमीज की जगह अलमारी में जींसकुरती आ गई लेकिन हां, अब भी वह बनियान पहन कर होस्टल में नहीं घूम पाती थी. उसे नंगानंगा सा लगता था.

सब कुछ पटरी पर आ ही रहा था कि उस की जिंदगी को और अधिक आसान बनाने आ गया था विनोद. जितनी आधुनिक मेघा, उतना ही विनोद. फर्क बस इतना ही था कि मेघा राजस्थान के गांव से थी तो विनोद बिहार के गांव से. दोनों ही सकुचेसहमे और दिल्ली की तेज रोशनी से चुंधियाए हुए. मेघा को विनोद के साथ बहुत सहज लगता था. उस के साथ खाया लिट्टीचोखा उसे दालबाटी सा आनंद देता था. कभीकभी जब वह लंबा आलाप ले कर देसी तान छेड़ता तो मेघा का मन घूमर डालने को मचलने लगता.

परदेस में कोई अपनी सी फितरत का मिल जाए तो अपना सा ही लगने लगता है. मेघा को भी विनोद अपना ही अक्स लगने लगा. क्लास से ले कर कनाट प्लेस तक दोनों साथसाथ देखे जाने लगे. यह अलग बात है कि कनाट प्लेस जाने का मकसद दोनों का एक ही होता था. नए फैशन को आंखें फाड़फाड़ कर देखना और फिर उसे जीभर कोसना. दोनों को ही इस में आत्मिक तृप्ति सी मिलती थी गोया अपने स्टाइल को बेहतर साबित करने का यह भी एक तरीका हो.

घूमतेफिरते दिल्ली के ट्रैफिक से घबराए दोनों एकदूसरे का हाथ थाम कर सड़क क्रौस किया करते थे. हालांकि विनोद ने कभी इकरार तो नहीं किया लेकिन प्यार से हाथ पकड़ने को मेघा प्यार ही समझ बैठी.

'मेरी ही तरह छोटी जगह से है ना बड़ी बातें नहीं बना पाता होगा', मेघा उस के हाथ में अपना हाथ देख कर सपने बुनने लगती.

इधर पिछले कुछ दिनों से मेघा को विनोद पर भी नए रंग का असर दिखाई दे रहा था.

उस दिन बारिश के बाद जब दोनों कैंपस के बाहर लगे ठेले पर मक्के का भुट्टा खा रहे थे तो अचानक मेघा को विनोद के मुंह से अप्रिय सी गंध आई.

"विनोद, पी है क्या?" मेघा ने अपने वहम को यकीन में बदलने के खयाल से पूछा.

"ना, चखी है," कहने के साथ ही उस के अंदाज की बेशर्मी मेघा को खल गई. उस ने आधा खाया भुट्टा डस्टबिन में फेंका और मुड़ गई. विनोद उसे जाते हुए देखता रहा लेकिन रोकने की कोशिश नहीं की. कौन जाने, हिम्मत ही ना हुई हो.

धीरेधीरे विनोद शहर के रंगों में डूबने लगा. इतना कि खुद अपना असली रंग खो दिया. रंगीनियत तो मेघा पर भी तारी थी लेकिन अभी तक उस की अपनी देसी रंगत बरकरार थी. शायद ये देसीपना संस्कार बन कर उस के भीतर जड़ें जमा चुका था. विनोद में ये जड़ें जरा कमजोर रह गई होंगी.

विनोद को यों पटरी से उतरते देख कर मेघा का दिल बहुत उदास हो जाता लेकिन वह कुछ कर नहीं पा रही थी. हालांकि उनका मिलनाजुलना अब भी जारी था लेकिन अब उस में पहले वाली गुनगुनाहट नहीं बची थी फिर भी मेघा को कभीकभी लगता था जैसेकि दोस्तों को यदि दोस्त ही गड्ढे में गिराते हैं तो उन्हें गिरने से बचाने की जिम्मेदारी भी दोस्तों की ही होती है. फिर वह तो प्यार करने लगी थी उस से. कौन जाने यह रिश्ता रिश्तेदारी में ही बदल जाए. इस नाते तो उस की जिम्मेदारी दोहरी हो जाती है.

"तुम्हें भी शहर की हवा लग गई लगती है," एक रोज मेघा ने सिगरेट के छल्ले उड़ाते विनोद से पूछा.

"जैसा देस, वैसा भेष," विनोद ने एक हिंदी फिल्म का नाम लिया और हंस दिया.

"बिना भेष बदले क्या उस देस में रहने नहीं दिया जाता?" मेघा ने फिर पूछा जिस का जवाब विनोद को नहीं सूझा. वह चुपचाप नाक से धुआं खींचता मुंह से निकालता रहा.

मेघा चाह तो रही थी कि उस के हाथ से सिगरेट खींच ले लेकिन किस अधिकार से? बेशक विनोद के प्रति उस की कोमल भावनाएं हैं लेकिन इकतरफा भावनाओं की क्या अहमियत. मेघा पराजित सी खड़ी थी.

कुछ खास मौके ऐसे होते हैं जो महानगरों में बड़े शोरशराबे के साथ मनाए जाते हैं, वही छोटे शहर के लोग इन्हें हसरत के साथ ताका करते हैं. वैलेंटाइन डे भी ऐसा ही खास दिन है जिस का युवा दिलों को सालभर से इंतजार रहता है. मेघा भी बहुत उत्साहित थी कि उसे भी यह सुनहरा मौका मिला है जब वह प्रत्यक्ष रूप से इस अवसर की साक्षी बनने वाली है. अन्य लड़कियों की तरह वह गुलाब इकट्ठे करने वाली भीड़ का हिस्सा तो नहीं बन रही थी लेकिन एक गुलाब की प्रतीक्षा तो उसे भी थी ही.

प्रेम दिवस पर पूरे कालेज में गहमागहमी थी. लड़कियां बड़े मनोयोग से सजीसंवरी थी तो लड़के भी कुछ कम नहीं थे. किसी के हाथ में गुलाब तो किसी के पास चौकलेट, कोई टैडीबीयर हाथ में थामे था तो कोई मंदमंद मुसकान के साथ कार्ड में लिखे जज्बात पढ़ रहा था.

कोई जोड़ा कहीं किसी कैंटीन में सटा बैठा था तो कोई किसी कार की पिछली सीट पर प्रेमालाप में मगन था. कुछ जोड़े मोटरसाइकिल पर ऐसे चिपक कर घूम रहे थे कि मेघा को झुरझुरी सी हो आई. मेघा की आंखें ये नजारे देखदेख कर चकाचौंध हुई जा रही थी.

सुबह से दोपहर होने को आई लेकिन विनोद का कहीं अतापता नहीं था.

'मेरे लिए गुलाब या गिफ्ट लेने गया होगा,' से ले कर 'पता नहीं कहां चला गया' तक के भाव आ कर चले गए. लेकिन नहीं आया तो केवल विनोद.

'क्यों न चल कर मैं ही मिल लूं," सोचते हुए मेघा ने कालेज के बाहर अस्थाई रूप से लगी फूलों की दुकान से पीला गुलाब खरीदा और विनोद की तलाश में डिपार्टमैंट की तरफ चल दी.

"अभीअभी विनय के साथ निकला है," किसी ने बताया.

विनय उन दोनों का कौमन फ्रैंड है. असाइनमैंट बनाने के चक्कर में तीनों कई बार विनय के कमरे पर मिल चुके हैं. मेघा सोच में पड़ गई.

'क्या किया जाए, इंतजार या फिर विनय के कमरे पर धावा ' आखिर मेघा ने विनोद को सरप्राइज देना तय किया और विनय के रूम पर जाने के लिए औटो में बैठ गई.

दिल उछल कर बाहर आने की कोशिश में था. औटो की खड़खड़ भी धड़कनों के शोर को दबा नहीं पा रही थी. पीला गुलाब उस ने बहुत सावधानी के साथ पकड़ा हुआ था. कहीं हवा के झोंके से पंखुड़ियां क्षतिग्रस्त न हो जाएं. आज वह जो करने जा रही है वह उस ने कभी सोचा तक नहीं था.

'पता नहीं मुझे यह करना चाहिए या नहीं. कहीं विनोद इसे गलत न समझ ले. मेरा यह अतिआधुनिक रूप कहीं विनोद को ना भाया तो?' ऐसे कितने ही प्रश्न थे जो मेघा को 2 कदम आगे और 4 कदम पीछे धकेल रहे थे.

ऊहापोह में घिरी मेघा के हाथ कमरे के बाहर लगी घंटी के बटन की तरफ बढ़ गए. तभी अचानक भीतर से आ रही आवाजों ने उसे ठिठकने को मजबूर कर दिया.

"अरे यार, आज तूने किसी को कोई लाल गुलाब नहीं दिया," विनय के प्रश्न का जवाब सुनने के लिए मेघा अधीर हुई जा रही थी. अपने नाम का जिक्र सुनने की प्रतीक्षा उस की आंखों में लाली सी उतर आई. उस ने कान दरवाजे से सटा दिए.

"कोई जमी ही नहीं. सानिया पर दिल आया था लेकिन उसे तो कोई और ले उड़ा," विनोद का जवाब सुन कर मेघा को यकीन नहीं हुआ.

"सानिया? वह तो तेरेमेरे जैसों को घास भी ना डाले," विनोद ने ठहाका लगाया.

"मैं तो मेघा के बारे में बात कर रहा था. तुम दोनों की तो खूब घुटती थी ना, इसीलिए मैंने अंदाजा लगाया," विनय ने आगे कहा.

उस के मुंह से अपना जिक्र सुन कर मेघा फिर से उत्सुक हुई.

"कौन? वह गांवड़ी? अरे नहीं यार, यहां आ कर भी अपने लिए कोई गांवड़ी ही ढूंढ़ी तो फिर क्या खाक तीर मारा," विनोद ने लापरवाही से कहा तो मेघा के कान सुन्न से हो गए. उसे यकीन नहीं हो रहा था कि जो उस ने सुना वह सच है.

उस ने एक निगाह अपने हाथ में सहेजे पीले गुलाब पर डाली. फूल भी उसे अपने किरदार सा बेरौनक लगा. मेघा वापस मुड़ गई.

'दिल टूटा क्या?' कोई भीतर से कुनमुनाया.

'ना रे, बिलकुल भी नहीं. मेरा दिल इतना कमजोर थोड़ी है. वैसे भी मैं यहां दिल तोड़ने या जोड़ने नहीं आई हूं,' अपने भीतर को जवाब दे कर वह जोर से खिलखिलाई और फिर अपना दुपट्टा हवा में लहरा दिया.

मेघा हंसतेहंसते बुदबुदा रही थी, 'गांवड़ी।'

औटो में बैठी मेघा ने 1-2 बार पीले गुलाब को खुद ही सूंघा और फिर उसे औटो में ही छोड़ कर नीचे उतर गई.

फटी ओढ़नी बहुत नफासत के साथ रफू हो गई थी।

एसेट अलोकेशन फंड अब चर्चा में क्यों हैं? क्या यह निवेश का बेहतर विकल्प है?

परिवहन विशेष न्यूज

एसेट एलोकेशन' रणनीति जो एक समय शैडो में चली गई थी क्योंकि बाजार ऊंचाई पर था और करेक्शन कहीं नजर नहीं आ रहा था अब फिर से चर्चा में है। बाजार में गिरावट टैरिफ वॉर के कारण मंदी की आशंका कॉर्पोरेट मुनाफे में कमी और GDP ग्रोथ में गिरावट ने निवेशकों को दोबारा एसेट एलोकेशन की अहमियत समझा दी है।

एसेट एलोकेशन' रणनीति, जो एक समय शैडो में चली गई थी क्योंकि बाजार ऊंचाई पर था और करेक्शन कहीं नजर नहीं आ रहा था, अब फिर से चर्चा में है। बाजार में गिरावट, टैरिफ वॉर के कारण मंदी की आशंका, कॉर्पोरेट मुनाफे में कमी और GDP ग्रोथ में गिरावट ने निवेशकों को दोबारा एसेट एलोकेशन की अहमियत समझा दी है।

हाल ही में कई निवेशक अल्पकालिक आकर्षक रिटर्न के लालच में सिर्फ इक्विटी पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे, जिससे वे अन्य एसेट क्लास को भूल गए थे। लेकिन जैसे-जैसे शेयर की कीमतों में गिरावट आई और प्रमुख इक्विटी इंडेक्स सितंबर 2024 में अपने शिखर से 14% नीचे गिर गए, निवेशकों को भारी नुकसान झेलना पड़ा।

खासतौर पर मिडकैप और स्मॉल-कैप शेयरों पर असर अधिक हुआ, जिनमें से कुछ में हाल के उच्चतम स्तर से 50% तक की गिरावट दर्ज की गई। नतीजा यह हुआ कि पोर्टफोलियो रिटर्न मुनाफे से घाटे की ओर चला गया और मार्केट वैल्यू में $1 ट्रिलियन से अधिक की गिरावट आ गई।

इस स्थिति ने निवेशकों को एसेट एलोकेशन की असली अहमियत समझा दी। यह रणनीति साबित करती है कि लॉन्ग-टर्म रिटर्न के लिए अलग-अलग एसेट क्लास में डाइवर्सिफिकेशन बेहद जरूरी है। शोध से यह भी पता चलता है कि 90% से अधिक लॉन्ग-टर्म पोर्टफोलियो रिटर्न एसेट एलोकेशन से आता है, जबकि सिक्योरिटी सेलेक्शन का योगदान 3% से भी कम होता है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि हर ऐसेट क्लास अलग-अलग मर्केट साइकिल के दौरान अपने तरीके से व्यवहार करता है, और एक साइकिल के विजेता हमेशा अगले साइकिल के विजेता नहीं होते हैं।। इसीलिए, इक्विटी, बॉन्ड और गोल्ड जैसे एसेट क्लास का संतुलित मिश्रण लंबी अवधि में स्थिर रिटर्न दे सकता है और अस्थिरता के प्रभाव को कम कर सकता है, खासकर इक्विटी में।

उन निवेशकों के लिए जो अपने पोर्टफोलियो को कई एसेट क्लास में सही तरीके से एलोकेट करने की जटिलता से बचना चाहते हैं, एसेट एलोकेशन फंड एक बेहतरीन विकल्प साबित हो सकते हैं। ये फंड आकर्षक होते हैं क्योंकि ये मार्केट टाइमिंग के जोखिम को खत्म कर देते हैं। एक्टिव एलोकेशन स्ट्रैटिजी के जरिए निवेशक SIP या एकमुश्त किसी भी माध्यम से निवेश कर सकते हैं।

ऐसा ही एक फंड है ICICI Prudential Asset Allocator Fund (FOF)। यह फंड मुख्य रूप से इनहाउस वैल्यूएशन मॉडल के आधार पर इक्विटी, डेट और गोल्ड म्यूचुअल फंड स्कीम/ETF के बीच आवंटन करता है। 28 फरवरी, 2025 तक, फंड ने एक साल का रिटर्न 6.85% दिया है, जिसमें तीन साल में 11.80% और पांच साल में 13.69% का प्रभावशाली CAGR रिटर्न है।

इमरजेंसी में कैसे निकाले एनपीएस से पैसे, देखें स्टेप बाय स्टेप प्रोसेस

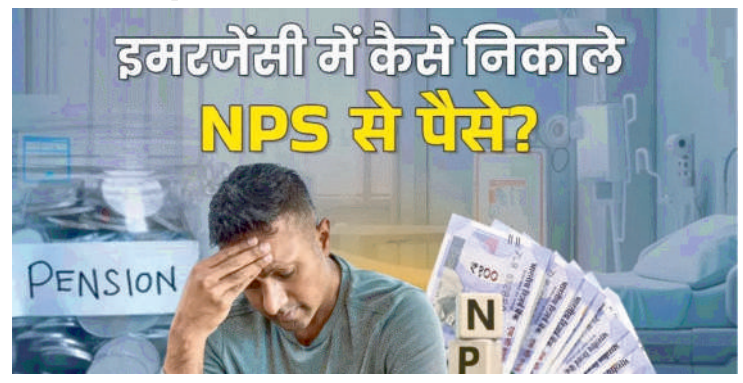

परिवहन विशेष न्यूज

नेशनल पेंशन सिस्टम यानी एनपीएस एक रिटायरमेंट पेंशन स्कीम है। इस स्कीम में 18 से 60 साल की आयु का कोई भी व्यक्ति जुड़ सकता है। इस स्कीम के तहत जमा पैसे आपको रिटायरमेंट के बाद पेंशन के रूप में मिलते हैं। लेकिन इमरजेंसी पड़ने पर भी इन पैसों को निकाला जा सकता है।

नई दिल्ली। एनपीएस को नेशनल पेंशन सिस्टम भी कहा जाता है। इस स्कीम के जरिए आप रिटायरमेंट में निश्चित इनकम का लाभ उठा सकते हैं। ये स्कीम के अंतर्गत जमा पैसे आपको रिटायरमेंट पर ही दिए जाते हैं। एनपीएस को न्यूनतम महज 1000 रुपये की राशि के साथ शुरू किया जा सकता है।

एनपीएस के अंतर्गत दो अकाउंट आते हैं, जिनमें टियर 1 और टियर 2 शामिल हैं। टियर 1 अकाउंट के तहत जमा पैसे को आप रिटायरमेंट से पहले नहीं निकाल सकते। हालांकि टियर 2 अकाउंट में जमा पैसों को विड्रॉल किया जा सकता है।

हालांकि लोगों के बीच ये धारणा रहती है कि एनपीएस से केवल 60 साल के बाद ही पैसे निकाले जा सकते हैं।

इमरजेंसी में एनपीएस से कैसे निकाले पैसे?

स्टेप 1- सबसे पहले एनएसडीएल की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाएं।

स्टेप 2- जिसके बाद आपको PRAN नंबर और जन्मतिथि दर्ज कर लॉग-इन करें।

स्टेप 3- इसके बाद पैसे निकालने के लिए अनुरोध कर सकते हैं।

स्टेप 4- फिर निकासी फॉर्म और अन्य जरूरी केवाईसी दस्तावेज जमा करें।

स्टेप 5- वेरीफाई होने के बाद, पैसा निकल जाएगा।

पैसे निकालने के लिए महत्वपूर्ण नियम

अगर आपके खाते में 5 लाख रुपये से कम है, तो पूरे पैसे निकाले जा सकते हैं।

व्यक्ति कम से कम 3 साल तक एनपीएस से जुड़ा रहना चाहिए।

वहीं स्कीम के पूर्ण अवधि के दौरान पैसे सिर्फ 3 बार तक निकाले जा सकते हैं।

इसके साथ ही रिटायरमेंट से पहले आप कुछ स्थिति में ही पैसे निकालने का अनुरोध कर सकते हैं।

जिनमे बच्चों की उच्च शिक्षा, शादी करना, घर खरीदना, गंभीर बीमारी इत्यादि।

कब बंद करा सकते हैं NPS का खाता?

इसके साथ ही आप कुछ स्थितिओं में अपना एनपीएस का खाता बंद भी करा सकते हैं। खाता बंद कराने को लेकर सरकार की तरफ से कुछ शर्तें रखी गई है। इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक एनपीएस का लॉन्ग इन पीरियड (lock-In-Period) 5 साल से 10 साल तक रखा गया है। जिसका मतलब है कि आप इस पीरियड में खाता बंद नहीं करा सकते।

हालांकि जैसे ही योजना का लॉन्ग इन पीरियड खत्म हो जाएगा, आप चाहे तो इस स्कीम को बंद कर सकते हैं। हालांकि अगर आप एक नौकरीपेशा व्यक्ति है, तो एनपीएस के तहत 10 साल बाद ही पैसा निकाला जा सकता है। जिसका मतलब है कि आपको 10 साल तक एनपीएस खाते में पैसे जमा करने होंगे।

आयुष्मान कार्ड खोने के बाद भी मिलेगा मुफ्त इलाज, बस अपनाएं ये आसान ट्रिक्स

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार आए दिन जनता के हित के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं लागू करती है। इन कल्याणकारी योजनाओं में से ही आयुष्मान योजना भी एक है। आयुष्मान कार्ड के तहत 5 लाख रुपये का मुफ्त इलाज किया जा सकता है। ये कार्ड खास तौर पर जरूरतमंद लोगों के लिए डिजाइन किए गए हैं। चलिए आज जानते हैं कि आयुष्मान कार्ड खोने के बाद भी आप कैसे मुफ्त इलाज करवा सकते हैं।

नई दिल्ली। भारत सरकार ने साल 2018 में प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत योजना की शुरुआत की थी। इस योजना का उद्देश्य ऐसे लोगों को मुफ्त में इलाज प्रदान करना है, जो आर्थिक रूप से कमजोर हो। क्योंकि हर व्यक्ति मेडिकल खर्चे से बचने के लिए इंश्योरेंस नहीं करा सकता है।

अगर कभी किसी व्यक्ति के साथ दुर्घटना होती है, तो उसकी सारी सेविंग मेडिकल खर्चे में ही निकल जाती है। इन खर्चों को बोझ कम करने के लिए सरकार ने आयुष्मान योजना की शुरुआत की थी।

आयुष्मान कार्ड खोने पर कैसे करवाएं मुफ्त इलाज

वैसे तो आयुष्मान कार्ड दिखाने के बाद ही लाभार्थी मुफ्त इलाज करवा सकता है। आयुष्मान कार्ड के जरिए चुनिंदा अस्पतालों में ही इलाज करवाया जा सकता है। कार्ड के जरिए आप 5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज लाभ उठा सकते हैं।

लेकिन अगर आपका आयुष्मान कार्ड खो जाए या टूट जाए, तो भी मुफ्त इलाज करा सकते हैं।

इसके लिए आपको अस्पताल के आयुष्मान मित्र हेल्प डेस्क में जाना होगा। जिसके बाद उन्हें कार्ड खोने या टूटने के बारे में जानकारी दें। मौजूदा ऑपरेटर को अपना रिजर्स्ड मोबाइल नंबर बताना होगा।

रिजर्स्ड यानी वो मोबाइल नंबर, जो आपके आयुष्मान कार्ड से लिंक हो। इस

मोबाइल नंबर के जरिए ऑपरेटर आपकी पहचान करेगा। जिसके बाद आप बिना कार्ड के फ्री में ही इलाज करा पाएंगे।

अगर ऑपरेटर आपकी मदद नहीं करता है, तो आप आयुष्मान योजना की हेल्पलाइन नंबर 14555 पर शिकायत भी दर्ज कर सकते हैं।

कैसे बनाएं आयुष्मान कार्ड?

अगर आपने अभी तक आयुष्मान कार्ड के लिए अप्लाई नहीं किया है, तो नीचे बताए गए स्टेप्स को ध्यानपूर्वक फॉलो करें।

स्टेप 1- सबसे पहले आपको किसी नजदीकी सीएससी सेंटर पर जाना होगा।

स्टेप 2- यहां आपको मौजूदा डेस्क ऑपरेटर से मिलकर अपनी पात्रता चेक करानी होगी।

स्टेप 3- पात्रता चेक होने के बाद दस्तावेज वेरिफाई किए जाएंगे।

स्टेप 4- आवेदन सबमिट होने के बाद, आप कुछ समय बाद कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं।

कौन नहीं बना सकता है आयुष्मान कार्ड?

आयुष्मान कार्ड खास तौर गरीब लोगों के लिए डिजाइन किया गया है। इसलिए वे लोग जो संगठित क्षेत्र में काम करते हैं या जो लोग समय पर अपना टैक्स भरते हैं, वे इस कार्ड का फायदा नहीं ले पाएंगे।

इसके साथ ही अगर आप ईएसआईसी (ESIS) का लाभ लेते हैं या आपकी सैलरी से पीएफ कटता है, तो भी आप योजना का लाभ नहीं उठा पाएंगे।

इसके साथ ही अगर आपकी सरकारी नौकरी है या आर्थिक रूप से सक्षम है, तो भी आप इस योजना के लिए पात्र नहीं हैं।

केंद्रीय कर्मचारियों के भत्तों में बदलाव की संभावना, डीए पर क्या होगा असर?

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्र सरकार जल्द ही सरकारी कर्मचारियों के लिए 8 वें वेतन आयोग द्वारा होने वाले सिफारिशों को पेश करने वाली है। 8 वें वेतन आयोग के जरिए केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों की सैलरी को लेकर कई बड़े फैसले कर सकती है। अप्रैल 2025 से 8 वें वेतन आयोग को लेकर सदस्यों का गठन किया जाएगा। चलिए इसके बारे में विस्तार से बात करते हैं।

नई दिल्ली। केंद्रीय कर्मचारियों के लिए जल्द ही 8 वें वेतन आयोग के सदस्यों का गठन किया जाएगा। इस नए वेतन आयोग के लिए सदस्यों का गठन अप्रैल 2025 को होगा। ये आयोग केंद्रीय कर्मचारियों की सैलरी में मिलने वाले भत्तों को लेकर फैसले ले सकता है।

मीडिया रिपोर्ट की माने तो ये नया वेतन आयोग महंगाई भत्ता को जीरो कर सकता है। हालांकि अभी इस बात की पुष्टि नहीं की गई है। मौजूदा समय में, केंद्रीय कर्मचारियों को बेसिक सैलरी का 53 फीसदी डीए के रूप में मिलता है।

भत्तों को लेकर होंगे ये बदलाव

इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक 8 वें वेतन आयोग में महंगाई भत्ता (Dearness Allowance) को लेकर बड़ा फैसला हो सकता है। ऐसा कहा जा रहा है कि महंगाई भत्ता जीरो होने वाला है। मौजूदा समय में सरकार एक साल में दो बार महंगाई भत्ता बढ़ाती है। ये महंगाई भत्ता लगभग 3 से 4 फीसदी तक बढ़ाया जाता है।

8 वें वेतन आयोग की सिफारिश कब लागू होगी

इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक 8 वें वेतन आयोग द्वारा लिए गए सिफारिशें जनवरी 2026 तक लागू हो सकती है। इन सिफारिशों के तहत डीए शून्य किया जा सकता है। इसके अलावा केंद्रीय कर्मचारियों की सैलरी में मिलने वाले कई भत्तों को लेकर बदलाव किया जा सकता है।

What is DA: क्या होता है महंगाई भत्ता?

केंद्रीय कर्मचारियों को अभी बेसिक सैलरी का 53 फीसदी महंगाई भत्ता के रूप में मिलता है। सरल शब्दों में कहा जाए तो डीए कर्मचारियों को बेसिक सैलरी के साथ मिलने वाली अतिरिक्त राशि है। इसकी कैलकुलेशन अभी बेसिक सैलरी पर होती है।

केंद्रीय कर्मचारियों को ये भत्ता बढ़ती महंगाई के कारण दिया जाता है, ताकि उन पर महंगाई का कम असर पड़े।

एक ऐसा समय जब नहीं मिला कोई महंगाई भत्ता

इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक कोविड-19 के समय केंद्रीय सरकार ने सभी कर्मचारियों का महंगाई भत्ता रोक दिया था। सरकार ने जनवरी 2020 से जून 2021 तक 18 महीनों तक केंद्रीय कर्मचारियों को कोई भी महंगाई भत्ता नहीं दिया था।

तभी से ही कर्मचारी इस पीरियड के एरियर की मांग कर रहे हैं। सरकार हर साल में दो बार महंगाई भत्ता में बढ़ोतरी करती है. ये बढ़ोतरी एक बार जनवरी से जून के लिए और दूसरी बार जुलाई से दिसंबर के लिए की जाती है।

इसके अलावा ये भी देखा गया है कि जनवरी से जून में आने वाले महंगाई भत्ते की घोषणा मार्च में की जाती है। वहीं जुलाई से दिसंबर के महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी की घोषणा, जुलाई से दिसंबर में होती है।

केंद्रीय कर्मचारियों को ये भत्ता बढ़ती महंगाई के कारण दिया जाता है, ताकि उन पर महंगाई का कम असर पड़े।

इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने से क्या-क्या मिलते हैं फायदे, यहां देखें इससे जुड़ी सभी जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

मौजूदा वित्त वर्ष 2024-25 का इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने में बस कुछ महीनों का वक्त रह गया है। अगर आपने इनकम टैक्स रिटर्न फाइल नहीं की है तो भी आपके पास समय बचा है। भले ही आप इनकम टैक्स की सीमा में ना आते हो लेकिन इस फाइल करने से कई फायदे मिलते हैं। चलिए इसके बारे में डिटेल में जानते हैं।

नई दिल्ली। इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने में बस कुछ ही महीनों का वक्त रह गया है। टैक्सपेयर्स 31 जुलाई 2025 तक इनकम टैक्स रिटर्न फाइल कर सकते हैं। आप चाहे इनकम टैक्स की सीमा में ना आते हो, लेकिन इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने से आपको कई लाभ मिलते हैं।

इनकम टैक्स रिटर्न फाइल बस एक टैक्स भरने का जरिया नहीं है, बल्कि ये एक महत्वपूर्ण फाइनेंशियल डॉक्यूमेंट है। इस डॉक्यूमेंट को आप लोन, निवेश या वीजा जैसे कामों में इस्तेमाल कर सकते हैं।

कई लोग इनकम टैक्स रिटर्न फाइल नहीं करते, क्योंकि उनकी मौजूदा सैलरी इनकम टैक्स की सीमा में नहीं आती। लेकिन इसे ना भर के गलती कर रहे हैं। कोई भी टैक्सपेयर्स जो इनकम टैक्स के दायरे में नहीं आता, वो भी आईटीआर फाइल कर सकता है। इससे उसे कई फायदे मिलते हैं।

इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने के फायदे

TDS का पैसा मिलता है वापस

कई लोगों की इनकम से टीडीएस (टैक्स डिडक्टेड एट सोर्स) काटा जाता है। इस टीडीएस को आप आईटीआर फाइल करके अपना पैसा वापस ले सकते हैं। टीडीएस आमतौर पर ब्याज, कमीशन, सैलरी या फीस पर काटा जाता है।

अगर आप इनकम टैक्स रिटर्न फाइल नहीं करते, तो आपके टीडीएस में जमा पैसा सरकार के पास ही फंस जाता है। इसलिए आईटीआर फाइल करना काफी जरूरी है।

नुकसान को करता है कम

इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने से आपका

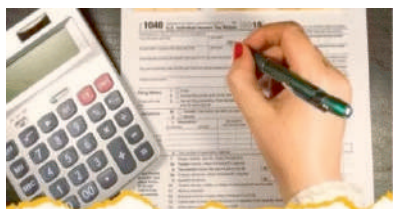

फाइनेंशियल नुकसान कम हो जाता है। व्यक्ति को कई तरह से फाइनेंशियल नुकसान हो सकते हैं, जैसे शेयर बाजार में पैसा डूबना, बिजनेस या प्रॉपर्टी में नुकसान हो जाना इत्यादि। लेकिन इस नुकसान को आईटीआर फाइल कर कम किया जा सकता है।

आप इस साल के नुकसान को दिखाकर आईटीआर फाइल कर सकते हैं। इसे अगले साल के मुनाफे के साथ एडजस्ट कर दिया जाएगा। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि आप इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करें।

क्योंकि अगर नुकसान वाले साल में आईटीआर फाइल नहीं करते, तो इसे अगले साल के मुनाफे में एडजस्ट नहीं कर पाएंगे। अगर आपको प्रॉपर्टी और कैपिटल एसेट्स में कोई नुकसान हुआ है, तो आईटीआर जरूर फाइल करें।

विदेशी यात्रा में आसानी

अगर आप भविष्य में कोई विदेशी यात्रा की प्लानिंग कर रहे हैं, तो आईटीआर जरूर फाइल करें। क्योंकि कई देश वीजा देने के लिए आपसे इनकम प्रूफ मांग सकती है। इन देशों में अमेरिका, यूरोप, कनाडा या ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं। इन देशों का वीजा प्राप्त करने के लिए आपको इनकम प्रूफ देना पड़ सकता है।

आसानी से मिल जाता है लोन

बैंक या फाइनेंशियल संगठन से लोन के लिए कई बार हमें इनकम प्रूफ देने की जरूरत पड़ती है। आप आईटीआर फाइल को इनकम प्रूफ के रूप में दिखा सकते हैं। क्योंकि बिना इनकम प्रूफ देकर आप लोन के लिए आवेदन नहीं कर पाएंगे।

इनकम प्रूफ देने से बैंक की उधारकर्ता पर विश्वास बढ़ता है। इसके साथ ही बैंक इनकम प्रूफ के जरिए आवेदनकर्ता की लोन देने की क्षमता चेक करता है।

अमेजन में फिर होगी छंटनी, 14000 कर्मचारियों की जाएगी नौकरी; क्या है वजह?

परिवहन विशेष न्यूज

ई-कॉमर्स कंपनी Amazon ने अपने हजारों कर्मचारियों को बड़ा झटका दिया है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार कंपनी ने कम से कम 14 हजार कर्मचारियों की छंटनी करने वाली है। ऐसा करने से कंपनी 2.1 अरब डॉलर से 3.6 अरब डॉलर के बीच सालाना सेविंग करने का प्लान बना रही है। इस छंटनी से कंपनी के ग्लोबल मैनेजमेंट में 13 फीसदी की कमी आ सकती है।

ई-कॉमर्स कंपनी अमेजन ने अपने हजारों कर्मचारियों को बड़ा झटका दिया है। मीडिया रिपोर्ट की माने तो कंपनी ने कम से कम 14 हजार कर्मचारियों की छंटनी करने वाली है। अगर ये छंटनी होती है, तो कंपनी 2.1 अरब डॉलर से 3.6 अरब डॉलर के बीच सालाना सेविंग कर लेगी। इसके साथ ही छंटनी होने से कंपनी के ग्लोबल मैनेजमेंट में 13 फीसदी की कमी आ सकती है।

ई-कॉमर्स कंपनी Amazon ने इससे पहले भी इसी समय कम्युनिकेशन एंड सस्टेनेबिलिटी डिवीजन में अपने कई कर्मचारियों की छंटनी की थी। ऐसा माना जा रहा है कि कंपनी ये छंटनी कर करोड़ों रुपये की सेविंग का प्लान बना रही है। इसके साथ ही कंपनी फिर से व्यवस्थित तरीके से अपने कर्मचारियों को तैयार करने की कोशिश कर रही है।

कंपनी ने क्यों की हजारों कर्मचारियों की छंटनी?

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार ई-कॉमर्स कंपनी अमेजन अपनी कंपनी के मैनेजमेंट को फिर से सही तरीके से व्यवस्थित करना चाहती है। इस छंटनी से कंपनी के मैनेजर्स की हजारों में संख्या घट सकती है। इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक कंपनी के मैनेजर्स की संख्या 105,770 से घटकर 91,936 हो जाएगी।

इसके साथ ही कंपनी के ग्लोबल

मैनेजमेंट वर्कफोर्स में 13 फीसदी की कमी देखने को मिल सकती है।

ये भी कहा जा रहा है कि ये छंटनी सीईओ एंडी जेसी द्वारा लिए कॉर्पोरेट निर्णय का ही एक हिस्सा है। कंपनी ऐसा कर अपने मैनेजमेंट प्रक्रिया को आसान बनाना चाहती है। इसके साथ ही कंपनी ने पहले तिमाही में मैनेजर्स की तुलना में इंडिविजुअल कंट्रीब्यूटर की संख्या में 15 फीसदी का इजाफा किया है।

इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक छंटनी के अलावा अमेजन ने कॉस्ट कटिंग पॉलिसी भी शुरू कर दी है।

Complete Circle के सीईओ ने जताई नाराजगी

ई-कॉमर्स कंपनी ने जैसे ही छंटनी का ऐलान किया, उसके बाद complete circle के सीईओ गुरमीत चड्ढा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अमेजन की आलोचना कर नाराजगी जताई है।

उन्होंने अपने पोस्ट पर लिखा कि अमेजन ने इससे पहले भी नवंबर 2024 में 18 हजार कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया था। अब तकरीबन 10 हजार लोगों को निकाल रहे हैं। वहीं दूसरी ओर कंपनी अपने कर्मचारियों को people experience head और chief people officer जैसे नाम देती है। कहती है कर्मचारी उनका परिवार है. यह सब नाटक है।

उन्होंने आगे लिखा कि अमेजन जैसी कंपनी इन छंटनी को कॉर्पोरेट जार्गन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नाम पर सही ठहराती है।

धरती पर लौटीं सुनीता विलियम्स: एक ऐतिहासिक वापसी

(सुनीता विलियम्स की उपलब्धियाँ न केवल भारतीय वैज्ञानिकों बल्कि देश के युवाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत हैं।)

सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर की धरती पर सुरक्षित वापसी एक बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धि मानी जा रही है। वे जून 2024 में बोइंग के स्टारलाइनर मिशन के तहत अंतरिक्ष गए थे, लेकिन तकनीकी खामियों के चलते उनकी वापसी में नौ महीने की देरी हुई। इस कारण वे अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर लंबे समय तक रुके रहे। यह मिशन न केवल तकनीकी दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण था, बल्कि अंतरिक्ष में लंबे समय तक रहने के प्रभावों को समझने में भी सहायक होगा। उनकी सुरक्षित वापसी से भविष्य में अंतरिक्ष अभियानों के लिए नई संभावनाएँ खुलेंगी। इससे नासा और बोइंग को स्टारलाइनर की खामियों को सुधारने का मौका मिलेगा। उनके अनुभव और उपलब्धियाँ न केवल अंतरिक्ष क्षेत्र बल्कि विज्ञान और तकनीक में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक प्रेरणा हैं। उनकी कहानी यह संदेश देती है कि सीमाएँ केवल मानसिकता में होती हैं और यदि कोई लक्ष्य निर्धारित किया जाए, तो उसे प्राप्त किया जा सकता है।

डॉ सत्यवान सौरभ

नासा की अनुभवी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और उनके साथी बुच विल्मोर, जो पिछले नौ महीने से अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर थे, आज सफलतापूर्वक धरती पर लौट आए हैं। स्पेसएक्स के ड्रैगन कैप्सूल की मदद से उन्होंने मेक्सिको की खाड़ी में सुरक्षित लैंडिंग की। सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर जून 2024 में बोइंग के स्टारलाइनर के साथ परीक्षण उड़ान के लिए अंतरिक्ष में गए थे। हालांकि, स्टारलाइनर में तकनीकी खामी के कारण उनकी वापसी में देरी हुई, जिससे वे नौ महीने तक ISS पर रहे। उनकी वापसी के लिए स्पेसएक्स का क्रू-10 मिशन लॉन्च किया गया था, जिसने सफलतापूर्वक उन्हें धरती पर वापस लाया। वापसी के बाद, दोनों अंतरिक्ष यात्रियों को स्ट्रेचर पर ले जाया गया, जो लंबे समय तक भारहीनता में रहने के बाद सामान्य प्रक्रिया है। यह मिशन न केवल तकनीकी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा, बल्कि इससे वैज्ञानिकों को अंतरिक्ष में लंबे समय तक रहने के प्रभावों को समझने में भी मदद मिलेगी। इससे नासा और अन्य अंतरिक्ष एजेंसियों को भविष्य के गहरे अंतरिक्ष अभियानों, जैसे कि मंगल पर मानव मिशन की योजना बनाने में सहायता मिलेगी। सुनीता विलियम्स की यह वापसी अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह मिशन भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए मूल्यवान डेटा प्रदान करेगा और अंतरिक्ष यान तकनीक के सुधार में सहायक सिद्ध होगा।

सुनीता विलियम्स और उनके जैसे अनुभवी अंतरिक्ष यात्री भविष्य के चंद्र और मंगल अभियानों में अहम भूमिका निभा सकते हैं। नासा और अन्य स्पेसएजेंसियाँ अब दीर्घकालिक अंतरिक्षमिशनों की तैयारी कर रही हैं, जिनमें अंतरिक्ष में रहने के नए तरीके, कृत्रिम गुरुत्वाकर्षण की संभावनाएँ और अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने की रणनीतियाँ शामिल हैं। इसके अलावा, स्टारलाइनर जैसी तकनीकों में सुधार कर, अंतरिक्ष अन्वेषण को अधिक सुरक्षित और कुशल बनाया जाएगा। अंतरिक्ष में मानव उपस्थिति को और विस्तारित करने के लिए वैज्ञानिक शोध जारी रहेंगे, जिससे भविष्य में मंगल और उससे आगे की यात्राएँ संभव हो सकेंगी। सुनीता विलियम्स भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री हैं, जिनका भारत से गहरा जुड़ाव रहा है। उनके पिता भारतीय मूल के हैं और उन्होंने कई बार भारत के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया है। भारत में अंतरिक्ष विज्ञान और अनुसंधान की बढ़ती उपलब्धियों के बीच, सुनीता विलियम्स एक प्रेरणास्रोत बनी हुई हैं। इसरो (ISRO) भी अब मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम, गगनयान, की दिशा

में तेजी से बढ़ रहा है। इसरो ने हाल ही में गगनयान के लिए प्रमुख परीक्षण पूरे किए हैं और आने वाले वर्षों में भारत के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन को लॉन्च करने की योजना बना रहा है।

सुनीता विलियम्स की उपलब्धियाँ न केवल भारतीय वैज्ञानिकों बल्कि देश के युवाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत हैं। उनकी सफलता यह दिखाती है कि भारतीय मूल के लोग वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। भविष्य में, इसरो और नासा के बीच सहयोग बढ़ सकता है, जिससे भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को और मजबूती मिलेगी। सुनीता विलियम्स न केवल एक उत्कृष्ट अंतरिक्ष यात्री हैं, बल्कि एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व भी हैं। उनका सफ़र यह दर्शाता है कि कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और विज्ञान के प्रति जुनून कैसे किसी को नई ऊंचाइयों तक पहुँचा सकता है। उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं और युवा वैज्ञानिकों को प्रेरित किया है कि वे अंतरिक्ष अनुसंधान और विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ें। उन्होंने कई मौकों पर भारतीय छात्रों और युवाओं से संवाद किया है और उन्हें वैज्ञानिक क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। उनके अनुभव और उपलब्धियाँ न केवल अंतरिक्ष क्षेत्र बल्कि विज्ञान और तकनीक में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक प्रेरणा हैं। उनकी कहानी यह संदेश देती है कि सीमाएँ केवल मानसिकता में होती हैं और यदि कोई लक्ष्य निर्धारित किया जाए, तो उसे प्राप्त किया जा सकता है।

सुनीता विलियम्स और उनके जैसे अनुभवी अंतरिक्ष यात्री भविष्य के चंद्र और मंगल अभियानों में अहम भूमिका निभा सकते हैं। नासा और अन्य स्पेसएजेंसियाँ अब दीर्घकालिक अंतरिक्षमिशनों की तैयारी कर रही हैं, जिनमें अंतरिक्ष में रहने के नए तरीके, कृत्रिम गुरुत्वाकर्षण की संभावनाएँ और अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने की रणनीतियाँ शामिल हैं। इसके अलावा, स्टारलाइनर जैसी तकनीकों में सुधार कर, अंतरिक्ष अन्वेषण को अधिक सुरक्षित और कुशल बनाया जाएगा। अंतरिक्ष में मानव उपस्थिति को और विस्तारित करने के लिए वैज्ञानिक शोध जारी रहेंगे, जिससे भविष्य में मंगल और उससे आगे की यात्राएँ संभव हो सकेंगी। सुनीता विलियम्स की यह वापसी अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह मिशन भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए मूल्यवान डेटा प्रदान करेगा और अंतरिक्ष यान तकनीक के सुधार में सहायक सिद्ध होगा। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुनीता विलियम्स की सफल वापसी पर बधाई दी और उनके साहस तथा समर्पण की सराहना की। उन्होंने कहा कि सुनीता विलियम्स न केवल भारतीय मूल के लोगों के लिए गर्व का विषय हैं, बल्कि पूरे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी कहा कि उनका यह मिशन भारत के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों और युवाओं के लिए एक प्रेरणा है, जो अंतरिक्ष में नई ऊंचाइयों को छूने का सपना देखते हैं।

विधानसभा सत्र शुरू होने के कारण श्री जगन्नाथ अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, सार्ब जनिक सुनबाई स्थगित

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

पुरी/भूबनेश्वर : पुरी में श्री जगन्नाथ अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए आवश्यक निजी भूमि के अधिग्रहण के लिए सिप्सरुबली और बेलपुर मौजा क्षेत्रों के निवासियों की आपत्तियों, शिकायतों आदि को सुनने के लिए प्रशासन द्वारा निर्धारित सार्वजनिक सुनवाई अवधि अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी गई है। इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी गई है।अधिसूचना में कहा गया है कि बड़े पैमाने पर सभा का आयोजन नहीं किया जा सकता है क्योंकि 17वीं विधानसभा का तीसरा सत्र अगले महीने की 5 तारीख तक जारी रहेगा। बताया गया है कि भविष्य में जब सुनबाई के लिए समय निर्धारित किया जाएगा तो लोगों को सूचित कर दिया जाएगा।

जानकारी के लिए बता दें कि सुपासरूबली मौजा में अगले महीने की 21 तारीख को तथा बेलपुर में अगले महीने की 26 तारीख को सुनबाई निर्धारित किया गया था। यह अधिसूचना इस महीने की 6 तारीख को प्रकाशित की गई। इस परियोजना के लिए पहले चरण में शिप्सरुबली और बेलपुर मौजा से 221.891 एकड़ निजी भूमि अधिग्रहित करने की योजना है। हवाई अड्डा परियोजना के लिए लगभग 1164.754 एकड़ भूमि की आवश्यकता है, इसमें से 221.891 एकड़ निजी भूमि उपलब्ध है। सरकारी रिपोर्ट से पता चलता है कि शेष 942,863 एकड़ सरकारी भूमि उपलब्ध है। यह जनगणना परियोजना की धारा 16 के अनुसार पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन के उद्देश्य से तथा इस परियोजना के लिए प्रस्तावित प्रावधानों के अनुसार भूमि अधिग्रहण के उद्देश्य से की जाएगी। इडको ने पीपीपी मोड के तहत पुरी में श्री जगन्नाथ हवाई अड्डे के निर्माण के लिए अंतर्राष्ट्रीय निविदाएं आमंत्रित की हैं। यह हवाई अड्डा समुद्र तट के पास स्थित है। पहले चरण में लगभग 2,203 करोड़ रुपये के निवेश से प्रतिवर्ष 4.6 मिलियन यात्रियों को संभालने की क्षमता वाला हवाई अड्डा बनाया जाएगा। लगभग 5,631 करोड़ रुपये की लागत से तीन चरणों में हवाई अड्डे के विकास की योजना है। आशा है कि इससे पर्यटन और स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। हवाई अड्डों के लिए पर्यावरणीय परमिट सबसे बड़ा मुद्दा है। सभी लोग केंद्रीय प्रतिनिधिमंडल के दौरे का इंतजार कर रहे हैं। डीएफओ विवेक कुमार ने कहा, यह टीम कब पहुंचेगी यह स्पष्ट नहीं है। इसलिए इसके जल्द ही आने की संभावना है।

आई ए एस विनय चौवे व गजेन्द्र पर मुकदमा चलाने हेतु एससीबी मांगी अनुमति

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। गत वर्षों छत्तीसगढ़ के मधनिषेद घोटाले के साथ उस राज्य के अधिकारियों के साथ झारखंड का तार जुड़े होने, अवगारी नीति बदल कर राजस्व को क्षति पहुंचाने मे झारखंड के आई ए एस विनय चौवे एवं उत्पाद अधिकारी गजेन्द्र सिंह के खिलाफ मुकदमा चलाने की अनुमति छत्तीसगढ़ एसीबी ने मांगी है ।.मामले में छत्तीसगढ़ एसीबी ने झारखंड सरकार से मुकदमा चलाने की अनुमति मांगने पर पुन शराव निषेध विभाग की शान्त माहौल में हलचल आरंभ हो गयी है , यद्यपि मामले में छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने नवंबर 2024 में पीड़क कार्रवाई पर रोक लगा रखा है.झारखंड के विनय चौबे अभी पंचायती राज के सचिव हैं.

उल्लेखनीय है कि रायपुर के आर्थिक अपराध शाखा ने शराब घोटाले को लेकर मामला दर्ज किया था. इस मामले में छत्तीसगढ़ के अधिकारियों के अलावा झारखंड के आइएएस और तत्कालीन उत्पाद सचिव विनय चौबे को भी आरोपी बनाया गया था. जानकारी के मुताबिक, ईओडब्लू रायपुर के इंस्पेक्टर ने अफसरों के खिलाफ जो प्राथमिकी दर्ज की थी, उसकी शिकायत रांची के अरगोड़ा थाना क्षेत्र के रहने वाले विकास सिंह ने की थी. शिकायत की जांच के बाद प्राथमिकी दर्ज की गई थी.

विकास सिंह ने छत्तीसगढ़ के अधिकारी अनिल टुटेजा, अनवर ढेबर, अरुणपति त्रिपाठी और उनके सिंडिकेट पर आरोप लगाया था कि शराब घोटाला करके छत्तीसगढ़ सरकार को अरबों रुपये के राजस्व का नुकसान पहुंचाया गया.आ

आरोपों में यह भी कहा गया था कि इसी सिंडिकेट ने झारखंड के अधिकारियों के साथ मिलकर झारखंड की आबकारी नीति को बदलवाया और सरकार के राजस्व को क्षति पहुंचायी.

आरोपों में यह भी कहा गया था कि दोनों राज्यों के अधिकारियों ने मिलकर मैन पावर सप्लाई में भी घोटाला किया. आरोपों के मुताबिक, दोनों राज्यों के अधिकारियों के बीच वर्ष 2021 के दिसंबर से लेकर जनवरी 2022 कई बैठकें हुई थीं.

सुनीता विलियम्स,एक अद्वितीय उपलब्धि,और धैर्य का नाम है

सुनीता विलियम्स, एक भारतीय-अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री, ने हाल ही में पृथ्वी पर वापस लौटकर एक नए रिकॉर्ड की स्थापना की। उन्होंने अंतरिक्ष में सबसे लंबे समय तक रहने का रिकॉर्ड बनाया, जो एक अद्वितीय उपलब्धि है।

सुनीता विलियम्स की यह उपलब्धि उनके व्यक्तिगत विकास को भी दर्शाती है। उन्होंने अपने मिशन के दौरान कई चुनौतियों का सामना किया और उन्हें पार किया।

सुनीता विलियम्स की उपलब्धि को समझने के लिए, हमें उनके पृष्ठभूमि को समझना होगा। वह एक भारतीय-अमेरिकी परिवार में पैदा हुईं और उन्होंने अपनी शिक्षा अमेरिका में प्राप्त की। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत एक नौसेना अधिकारी के रूप में की और बाद में उन्होंने अंतरिक्ष यात्री बनने के लिए आवेदन किया।

सुनीता विलियम्स की उपलब्धि को उनके धैर्य, संयम, और टीम कार्यकुशलता के कारण माना जा सकता है। उन्होंने अपने मिशन के दौरान कई चुनौतियों का सामना किया और उन्हें पार किया। उन्होंने अपनी टीम के साथ मिलकर काम किया और उनकी टीम के साथ कार्यकुशलता का परिचय दिया।

यह एक अद्वितीय उपलब्धि है जो अंतरिक्ष यात्रा के क्षेत्र में एक नए मानक की स्थापना करती है।

यह उपलब्धि महिलाओं के लिए एक प्रेरणा है जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहती हैं।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
सहज हरदा मध्य प्रदेश

गौरेया चिड़िया बहुत ही सामाजिक होती है

गौरेया चिड़िया हमारे आसपास की एक आम चिड़िया है, लेकिन इसकी सुंदरता और महत्व को अक्सर हम नजरअंदाज कर देते हैं। यह चिड़िया न केवल हमारे आंगन की शोभा बढ़ाती है, बल्कि यह हमारे पर्यावरण के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है।

गौरेया चिड़िया की कई विशेषताएं हैं जो इसे अन्य चिड़ियों से अलग बनाती हैं।

गौरेया चिड़िया का रंग और डिज़ाइन बहुत ही सुंदर होता है। इसके पंखों पर सफेद और भूरे रंग के निशान होते हैं।

गौरेया चिड़िया का गायन बहुत ही मधुर होता है। यह अपने गीतों से हमें आनंदित करती है।

गौरेया चिड़िया बहुत ही सामाजिक होती है। यह अक्सर अपने समूह में रहती है और एक दूसरे के साथ खेलती है।

गौरेया चिड़िया का हमारे पर्यावरण के लिए बहुत महत्व है।

गौरेया चिड़िया कीटों को नियंत्रित करने में मदद करती है। यह कीटों को खाकर उन्हें नियंत्रित करती है।गौरेया चिड़िया बीजों को प्रसारित करने में मदद करती है। यह बीजों को अपने मल में छोड़कर उन्हें नए स्थानों पर प्रसारित करती है।गौरेया चिड़िया पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। यह अपने गायन और गतिविधियों से पर्यावरण को संतुलित बनाए रखने में मदद करती है।

गर्मी के मौसम में गौरेया चिड़िया का ध्यान रखना बहुत महत्वपूर्ण है:

गर्मी में गौरेया चिड़िया को पानी की आवश्यकता होती है। हमें उनके लिए पानी की व्यवस्था करनी चाहिए।

गर्मी में गौरेया चिड़िया को छाया की आवश्यकता होती है। हमें उनके लिए छाया की व्यवस्था करनी चाहिए।गर्मी में गौरेया चिड़िया को भोजन की आवश्यकता होती है। हमें उनके लिए भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए।

डॉ. मुश्ताक अहमद
शाह सहज़, हरदा मध्य प्रदेश

धनबाद में 500 टन अवैध कोयला जप्त

के के परिच्छा, झारखंड

रांची। कोयलांचल धनबाद में पुलिस, सीआईएसएफ और बीसीसीएल की संयुक्त कार्रवाई में अवैध कोयला खनन पर बड़ी कार्रवाई की गई. यहां छापेमारी के दौरान 400 से 500 टन कोयला बरामद किया गया, जिससे कोयला माफियाओं में हड़कंप मच गया. कार्रवाई के दौरान मुख्य आरोपी फरार हो गए, लेकिन प्रशासन अब अवैध कारोबारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की तैयारी में है।

यही सफ़ाई की अष्टसिद्धियों के प्रयासरत इन्दौर है

होली के पांचवें दिन रंगपंचमी की धूम से मध्यप्रदेश में धूम रहती है पूरे दिन भर शहर के मुख्य मार्गों से हृदय स्थल राजबाड़ा पर गेर व फाग यात्रा रंगपंचमी पर निकलीं जाती है। वह वैभव अभी भी कायम है रंगों के उत्सव का वहीं इन्दौर साफ सफाई से कभी भी नजरें नहीं चुराता है । रंग गुलाल पानी व अन्य कचरा व कीचड़ को कुछ देर बाद स्वछता की टीम उस अष्टसिद्धियों के लिए प्रयासरत इन्दौर फिर अपनी साफ सफाई में जुट जाया करता है। जहां सफ़ाई दीदी व सफ़ाई मित्रों के साथ बड़े बड़े अधिकारीयों की टीम और आधुनिक मशीनों के साथ रग गुलाल पानी व जमा कीचड़ को चंद घंटों में अपने शहर वासियों को लिए आनंद उत्साह के लिए शहर को चकाचक कर देते हैं। यह पूरे देश के लिए प्रेरणास्रोत हैं। किस तरह मध्यप्रदेश का एक शहर इन्दौर सात बार सबसे स्वच्छ शहर का पुरस्कार जीत चुका है। और आठवीं बार फिर नम्बर वन के लिए आगे बढ़ रहा है। एक शहर एक मिशन जिसे जीवन की रोजमर्रा की चर्या का हिस्सा बना लिया है। यह सही बात है यह जिंदा दिल शहर इन्दौर है। इसका उदाहरण है इस रंगपंचमी के जुलूस गेर फाग यात्रा के बाद की चंद घंटों की साफ सफाई जिससे फिर सुंदर साफ़ हो गया हमारा शहर इन्दौर। हर साल की तरह गेर के बाद अनोखी सफाई भी इस की पहचान बन गई है।

हरिहर सिंह चौहान
जबरी बाग़ नसिया इन्दौर मध्यप्रदेश

अहसान ज़िंदगी तेरा मुझ पर, कैसे उतारा जाए।

जाने कहां खो गया वो मेरे दिल में बसेरा करके।
दिल मानता नहीं कहता है उसको बुलाया जाए।
हंसी पल वो बचपन लोट करके कहां आता है।
अहसान ज़िंदगी तेरा मुझ पर, कैसे उतारा जाए।
हक़ीक़त में तो तुम सरकार नहीं अब आने वाले।
सोचता हूं ख़्वाबों में ही अब तुमको बुलाया जाए।
चहरा मेरा ये कभी पढ़ना ही नहीं आया उसको।
लगता है,दिल चीर कर ही अपना दिखाया जाए।
हसीनों की फ़ितरत से नहीं थे वाक़िफ़ मुश्ताक़।
बेहतर है, सबक़ ये अब दुनिया को पढ़ाया जाए।

डॉ. मुश्ताक अहमद
शाह सहज हरदा मध्य प्रदेश

गंभीर बिमारी ईलाज सह चिकित्सा प्रतिपूर्ति हेतु श्रम विभाग का बैठक संपन्न

के के परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला। झारखंड सरकार के श्रम नियोजन ,प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग के सौजन्य चल रही योजना को राज्य के सर्वाधिक उद्योग बहुल जिला सरायकेला खरसावां में अमली जामा पहनाया गया ।सरायकेला खरसावां के युवा व कर्मठ श्रम नियोजन पदाधिकारी अविनाश ठाकुर ने बुधवार को

चिकित्सा प्रतिपूर्ति योजना अन्तर्गत गंभीर बिमारी इलाज हेतु उसकी चिकित्सा सहायतार्थ सरायकेला खरसावां के असैनिक शल्य चिकित्साधिकारी एवं चिकित्सकों के साथ उनके सभाकक्ष में महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की ।

इस बैठक में जिला श्रम अधिकारी ने जानकारी देते हुए बताया कि गंभीर बीमारी यथा कैंसर , हृदय रोग उसकी शल्यक्रिया , गुर्दा रोग ,असाध्य मानसिक रोग , ऐड्स, टोटल हिप रिप्लेसमेंट, स्पाइनल सर्जरी, मेजर वेस्कुलर , डीजिज, वोन मैरो ट्रांसप्लांट, लिवर टसप्लांट,हेपाटोमा आदि अनेक रोगों के इलाज सहायता हेतु जिलास्तरीय समिति के अनुशंसा पर इलाज किया किये जाने संबंधी जानकारी दी गयी ।

चिकित्सा सहायता योजना पांच या उससे अधिक कार्य कार्यदिवस पर अस्पताल में भर्ती रहने पर अकुशल श्रेणी के सैनिकोंके लिए न्यूनतम मजदूरी का भूगतान विहित दर पर किया जायेगा ।जो 40 कार्यदिवस के समतुल्य देय होगा ।

सरायकेला खरसावां श्रम विभाग द्वारा मंत्री संजय प्रसाद यादव के निर्देशन में विभाग ने इस दिशा में सफल बैठक का आयोजन किया है ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023